23131

Accession No. 3939
Catalogue No.......
Date 20-11-32
Price 18-2-6

UNMARKED

BIRLA COLLEGE LIBRARY
PILANI

~~410.16~~ 860.2/10

भागवत - दशम स्कंध भाषा

Bhagwat Dasham Skandh
Bhasha

पृष्ठ ३०२. क्री. १६५॥

091.954
R142 BB

23131
9/66

C/81

986

॥श्रीगणेशायनमः॥अथ दशमस्कंध भागवत री
कथा भाषा में लिख्यते॥ अध्याय ९० छै तिका मों
श्री कृष्ण जी रा चरित्र प्रवाड़ा जनम हुता ले अर
बैकुंठ पंधारीया तद सुधा किया छै सु लिखिय
छै॥प्रथम अध्याय मे आ कथा छै जु पृथ्वी
भाराक्रान्त हुई ताहरां गऊ रो रूप हुय ब्रह्माजी कै
पुकारु आई॥कही जू महाराज मैं न तैं भार सय
जावैं नहीं मे ऊपर पशू छै वनसपती छै तलाव
कुवा बावड़ी छै तिकां रो मने भार कोई नही अरु
जि के पापी दुराचारी अधर्मी लोक छै॥मूंडें पडें चा-
ले छै तिकांरो मने भार छै राज म्हारो भार उतारो॥
ताहरो ब्रमाजी दीठो हुयै रो भार मेंहू उतरे नही
श्र परमेश्वर जीउ तारसी ताहरो ब्रमाजी पृथ्वी नै
साथ ले साराई देवतांने साथ ले अर खीर सा
गर गया जाय अर श्री परमेसर जी री अस्तुती
करी जु महाराज पृथ्वी भाराक्रांत हुई पुकारे छै
सु राज भार उतारो इसे भांति सूं ब्रमाजी घणी
अस्तुति करी॥ ताहरां आकाशबाणी हुई॥ कयो ब्रम्हा
मे आगे जाणी थी अर हमें तो थे आया हमें हु भार
उतारसां॥ पछै साराई देवतांने आज्ञा दीवी जावो थे
गोकुल मथुरा विषे साराही अवतार लेवो॥ हूं पण

सूरसेन जादू रे पुत्र वसुदेव छै तेरे अवतार लेईस
देवकी रे पुत्र हुईश ।। मने सारोही काम करणो छै
इतरी आज्ञा ले अर देवतां अवतार लीया ।। ब्रह्मा
जी देवता पृथ्वी आयर ठिकाणे गया ठाकुर जी
कयो जु महाराज दोय अवतार अवतारीस १ बलभजी
२ कृष्णजी ।। इतिश्री भागवते महापुराणे दशस्कंधे
प्रथमोध्याय: ।।१।। बीजै अध्यायमें आ कथा छै ।।
वसुदेवजीनें कंस आपरी बहन देवकीजी परनाई
सू दायजो दीनो हाथी घोड़ा रथ दासी गहणा
दे देवकीजीरो हलोणो कीयो ।। वसुदेव देवकी
रथ बैठा कंस सारथी हुवो रथ चलायो ।। जा
वतो हुतो जितरै आकाशबाणी हुई ।। कंस ने
कयो रे अग्यानी तूं खुस्याल थको रथ चलावै
छै पण देवकी रो आठवो गर्भ थारो मारण
हार हुसी ।। आ बात कंस सुणी ।। ताहरो रथ
सूं नीचो उतर देवकीरी चोटी पकड़ खड़ग

काढ़ अर मारण लागो॥ ताहरां वसुदेवजी-
-बोलीया हाय हाय जी मारो मतां थांहरै बहन
छै॥ जो अर पे जाणो छो तो मांने बंदीसाला
विषै राखो॥ जिको पुत्र हुसी सु थांने आंण-
देसां॥ सु इये भांत सूं वसुदेवजी कइत बेनती
कीवी॥ ताहरां वसुदेव देवकीजीनें बांदीसाला
विषै राखीया॥ पछै पुत्र १ जायो ताहरां वसुदे
वजी खोल में लेर कंसनें आण दीयो ताहरां
कंस भलो मानीयो और कयो जु देखो आपरो
पुत्र बहुत प्यारो हुवे छै॥ पण वसुदेव तो आं
ण दीनो मारणनुं हुव कहीर पाछो दीनो खुसी
हुवो अै पुत्र पे लेजावो॥ मने तो आठवें पुत्र रो
ड़र छै ओ पुत्र पे लेजावो॥ ताहरां वसुदेवजी
पुत्र ले आया मनमें ड़रण लागा इयै पापी रो
वैसास कोई नहीं कदास मारतो हुवै॥ आ जाण
घरमें तो आया इतरै नारदजी कंस कने आय

कहण लागा राजा तूं मूंड़ो कांम करे छै कदाच
ओहीज पुत्र आठवों हुवो तो तनै मारसी छेहड़ले
पुत्र हुता जिणत्रे तो ओहीज आठवों हुवै पे राखो
मतां मारो॥ अे जादव कितराएक छै सु देवतरां
अवतार छै अर पे दैतांरा अवतार छै॥ सु औ
थांहरा दुसमण छै थांहरा विस वैरी छै तूं कालनें
मरे अवतार छै इतरी बात कहि नारदजी तिको
ण गया पछै कंस आपरा प्रधान तेड़ मसलत -
कीवी जु वसुदेव देवकी रै हाथे पगे सांकलां ज-
ड़ीयां॥ अर कैण लागा जिकी ठौड़ में विसन रो -
वासो छै जिके वसतां दूर करो ताहरो कयो॥
बामण गाय जग्य होम जप तप इतरा दूर करो इ
तरां मांहे परमेसर रो वासो छै बीजी पण वस-
तां मांहे जिकी ठौड़ परमेसर रो अंस थांन दीठो
जिकी ठौड़ दूर कीवी और वसुदेव रा पुत्र हुवै
तिकै मारो ताहरा उवेहीज भांति पुत्र हुवा

तिकै मारीया॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशस्कंधे द्वितियोध्याय:॥ तीजै अध्याय विषै आ कथा छै श्री भगवान पाताल विषे पधारो जसोदा रे पेट अवतार लेवो अर देवकी रो सातवों ७ मास छै सु सेष रो अवतार बलभद्र जी छै सु ते संकरस णजी करि अर रोहणी रे गर्भ मैं आणो अर हूं प ण वसुदेव देवकी रे अवतार लेईस॥ अर म्हारे कांम करणो छै सु थां बिना हुवे नहीं तिके वास्ते थे आगे पधारो इतरी कही ताहरां जोगमा- या जसोदा रै पेट अवतरीया देवकी रे गर्भ में हुतां बलभदर जी सु त कांने संकर्षण कर रो- हणी रै गर्भ विषै आणीया ताहरां कंस ने खब र हुई सु सातवों गर्भ देवकी रो गयो खबर नहीं कंस चिंता करण लागो॥ पछै श्री कृष्णजी देव- की रै गर्भ विषै आया सु देवकीजी रो और ही रंग दीसण लागो मंदर मांही जोत्त और हीज भां ति दीसण लागी कोट एक सूरज री जोती दीसण

लागी-चौकीदार लोग ऊपर वैसता तिकां कंस ने-

आय कयो जु इयां दिनां मांहे वसदेव देवकीरी कां

त और सी दीसे छै ताहरां कंस देखणनें आयो।

देखै तो लोकां कयो तिसोही विरतांत छै बेहन री

चेष्टा और ही ज दीसण लागी जाणीयो भगवांन ग

र्भ में आया सु क्युं न दीसौ॥ कंस देख चिंतातुर-

हुवो जु इयै रै गर्भ मांहे कोई म्हारो मारण वालो

छै इये भांति सु चिंता करे छै इतरै मे महादेव

जी ब्रम्हाजी सारां देवतां साहित देवकीजी रो-

कीया हुता ति के मांहे आया श्री कृष्णजी गर्भ

मांहे छै तिकांरी अस्तुती घणी भांतीसूं कीवी

जु धन्य ताहरां भाग जिकां रे श्री परमेस्वरजी

अवतार लीयो छै धन्य थे इये भांति सु घणी

अस्तुती कीवी॥ पछै ब्रम्हाजी आपरै ठिकांणै

पधारीया पछै भा दवा वद ८ रोहणी नक्षत्र मां

है प्रगट हुवा आधी रात्र विषै जन्म हुवो च्यार

भुजा कौस्तुभ मणी माथे मुकट मकराकृत कुंडल
कोटेक सूरजरी जोति इये मोति प्रगट हुवा पछे-
वसदेवजी छर्कीता हुवा अस्तुति घणी भांति-
कीवी पछै वसदेवजी दस हजार गऊ ब्रामणांने
संकलप कीवी पछै वसदेवजी भगवांन सुं कही
महाराज औ रूप छिपाईजै कंस पापी छै ताहरां
ठाकुरजी आग्या कीवी मनै गोकुल पोंचावो इ-
तरो कही आपरो रूप छिपायो च्यार भुजा हुती
तिको दोय भुजा कीवी पछै दरवाजा खुलगया
चोकीदारां नें नींद आय गई॥ वसुदेव देवकीरा
हाथां पगां री साकलां छूटगई ताहरां श्री कृष्णजी
नें खोले में ले वसुदेवजी गोकलजी नूं चालीया।
ऊपर सूं मेह नानी नानी बूंदा। बरसे छै श्री कृष्ण
जी भींज न लागा ताहरां शेषजी ऊपर छत्र कीयो।
छांट लागण पावै नही इये भांति जमनाजी तां
ईं गया आगे जमनाजी पूर वहै छै पार हुवण देवे
नहीं ताहरां वसुदेवजी डरणलागा श्री परमेसर
जी ने याद कीया। महाराज सहाय करो इतरे

जमनाजी पार मारग दीयो ताहरो वसुदेवजी गोक

लगया आगे देखे तो सर्व लोक सूता छै जसोदा-

जी कन्या जाई छै सु जोगमायारो अवतार लि-

का पड़ी छै अर जसोदाजी नींद मांहे सूता छै

ताहरां श्री कृष्णजी नें कन्यारी जयगा राखीया

अर कन्या वसुदेवजी उठायर आपरे घरे ले आया

बंदीसाला बिषै आया हाथे पगे गले साकलां फेर

पहरीयां कन्यां देवकीजी कने सुवाणी ॥ इति श्री

भागवते महा पुराणे दशमस्कंधे तृतीयोध्याय: ॥

अब आगे चोथे अध्याय मे आ कथा हुसी ॥ व

सुदेवजीरै कन्या जाई सु कंस ने खबर हुई सु

कंस कन्यारा पग पकड़र शिला ऊपर पछाड़ी

सु कन्या तो जोगमायारो अवतार थी पछाड़-

तां आकाश चढ़ती अष्ट भुजी देवी रो रूप धर

कंसने दी गालीयो अर कंसने कयो तें मने मा

री पण थारो कारज कोई सुधरीयो नहीं थारो

मारनहारो सो हुवो छै इत्तरो कहैर जोगमाया

अंतरध्यान हुय गई पछै कंस डरीयो वसुदेव देवकी कने आयो वार वार बेनती करणलागो मैं थांसौं बोहत बुरा कीयो थाहरा बालक मारीया थांने दुख दीनो मन थे माफ करो बार बार घणी बेनत्ती करी॥ पछै वसुदेव देवकीजी कयो होणहार टलै नहीं थे चिंता मत करो इतरी बात वसुदेव देवकी कही ताहरां वसुदेव देवकी रै हाथां पगां री सांकलां दूर कीवी पछै नमस्कार कर कंस आपरै घरै आयो पछै आपरा परधांन एक ठाकर अर मस लत करी कांसूं कीयो चाहीजै॥ आकाश चढ़ती कन्या आकही जु थारो मारणहारो तो हुवो छै– ताहरां केशी आदी ले साहरांही परधानां विचा रीजु जनम परपंत ले अर दश बरस रो बालक हुवै तिकै साराही मारो इतरी ठोडौ मे विसन रो वासो छै॥ जायां मैं ब्रामणां मे वेद पुराणां मे धर्म मे होम जग्य मे औरही जिकी भली ठौड़ छै जिकां मे विस्न छै जिकी ठौड़ दूर करो ताहरां सारा लोकां

नें आज्ञा दीनी सारा बिदा हुवा औ काम क
रवा लागा और घणो विस्तार छै। इति श्री
भागवते महापुराणे दशमस्कंधे चतुर्थोध्या
य:॥ अठा आगे पाचमें अध्याय में आ कथा
हुसी नंद जसोदा जाणीयो मांहरै पुत्र जायो
दश हजार गांयां ब्राम्हणां ने दीयां बधाई
बांटी जाती करम कीया पछे नंदजी आ
पदे सारा ही नंद गोप सगला ही एकठा हुय
मथराजी कंसनें देवणा ने गया सारा ही दे
ज रावलो दीयो जमनाजी ऊपर डेरा कि
यो॥ उठे वसदेवजी नंदजी सुं मिलणा नें आया
मिलियाने आंसु प्रवाह चालीया ने मित्र मि
ले जिकी भांत मिलिया कुशल प्रसन्न कीयो
वसुदेव कयो बालक भला छै म्हारा बालक
थाहरे छै सु कुशल छै रोहणीरो पुत्र कुश
ल छै और पण घणी बातां कीवी पछे व
सुदेवजी कही थे गोकल बेगा जावो उठे ऊ
पद्रव छै कंस आपरे दैत्यां नें आज्ञा दीनी

छै जन्म परियंतलो अर दश बरस रो बाल
कलिकां सारां ने मारा छोड़ो मतां इये मांतरो
उपद्रव छै ये वेगदेजावो और पण विस्तार
घणो छै॥ इति श्री भागवत्ते महापुराणे दश
मस्कंधे पंचमोध्याय:॥ आगले छठे अध्याय
में आख्या छै जु कंस री बहन पूतना सुंदर
स्त्रीरो वेस कर नंदजी रे घरे आई सू इये-
मांतरी माया कीनी सू कही घरमें पैसलीने
पाली नहीं॥ श्री कृष्णजी पोढीया हुता पूतना
स्तनां रै विष लगायो अर श्री कृष्णजीनें स्तन
पान कराया ताहेरे श्री कृष्णजी स्तन पांन क
रतां पूतना रे पेट मांहलो बाधर आतरां अस्त
नां रे पेड़े काढ नाखीया ताहरां पूतनां मूई
कोसां द मांहे विस्तार हुय पड़ी सारां गोपां दी
ठी कयो जु बड़ो उपद्रव टलीयो पछे साराही
गोप एकठा हुय अर कुहाड़ां सुं काट अर नाखी
आ खबर कंस ने हुई इये मांत पूतना मारी

पछे पूतना मोक्ष गई॥ इतिश्री भागवत महा
पुराणे दशमस्कंधे षष्ठोध्यायः॥ आगले सा
तमे अध्याय में आ कथा है स्त्री श्री कृष्णजी
गाड़े नीचे पोढ़ीया हुता सु गाड़ो घ्रत दूध
दही रे घड़ां सूं भरीयो हुतो सु गाड़े रे कागव
ऊपर कागासुर दैत्य श्री कृष्णजी रे मारण रै
वासते आय बैठो ताहरां श्री कृष्णजी जाणीयो
ओ मने मारण रे वास्ते आयो छै ताहरां श्री कृ
ष्णजी पगसूं गाड़ो उठाय नांखीयो कागासुर
ने दाबीयो सु दब मुवो सारो गोपां दोठो बड़ो
उपद्रव टलीयो छै॥ छोकरां देखता था तिका
कयो श्री कृष्णजी लातसूं गाड़ो भांगीयो इये
भांत कागासुर मारीयो पछै त्रणावर्त दैत्य बा
गुलै रे रूप आयो श्री कृष्णजी जसोदाजी रे गो
डे ऊपर पोढ़ीया हुता सु ताहरां श्री कृष्णजी च
वदे लोकरो भार गोडे ऊपर दीनो ताहरां श्री
कृष्णजी नें गोडे ऊपर सूं उतार धरती पोढाया.

इतरै वातुलो आयो सु श्री कृष्णजी ने ले उडीयो
पांचसो प्रस ऊंचो लेगयो ताहरां श्री कृष्णजी
तृणावर्त रो गलो दाब मारीयो तृणावर्त नन्दजी
री चोकी ऊपर पड़ीयो श्री कृष्णजी तृणावर्त
री छाती ऊपर खेलण लागा जसोदाजी श्री
कृष्णजी नें ढूंढण लागी सु लाभै नहीं ताहरां
रोवण लागी जितरै ही लोकां कयो बाहरी-
चौकी ऊपर दैत्य मुवो पड़ीयो छै अर श्री
कृष्णजी ऊपर खेलै छै॥ ताहरां जसोदाजी
उठाय ले आई बधाई बांटी औरा ओर ही
उपद्रव टलिया पछै एक दिन श्री कृष्णजी
उबासी खावतां जसोदाजी नें चवदह लोक
मुख मे दिखालिया सु विस्तार घणो छै॥
इतिश्री महाभागवते महापुराणे दशमस्कंधे
सप्तमोध्याय:॥ अठा सूं आगे आठवें अध्याय
में आ कथा इसीजगर्गाचार्य ऋषीस्वर वसुदेव
जी नें मिलिया ताहरां वसुदेवजी कयो

महाराज ये गोकलजी जोवो नंदजी रे बालक
दोय उपना छै तिकांरा ग्रह जोवो नांव काढो
किसड़ा छै ताहरां गर्गजी गोकुल आया नंदजी
नें खबर हुई नंदजी सामां आया चरण पुछा
लण किया ऊंचा बैसाणीया कयो महाराज-
भोजन री आज्ञा करो ताहरां भोजन तयार
करायो भोजन कियां पछै नंदजी कयो महा
राज औ बालक छै तिकांरा ग्रह जोवो नांव
काढ़ो ताहरां गर्गजी बोलीया॥ म्हारे आश्रम
हुतो सु मने आज्ञा हुई तूं गोकलजा आकाश
बाणी हुई थी देवकी रो आठवो गर्भ कंस ने
मारसी सु लोक कहेछे देवकी रे कन्या जाई-
सु आकाशबाणी तो झूठ न छै लोक झूठा छै
ताहरां हुं औ खबर करणनें आयो पछे गर्गजी
पाटो मांडीयो ग्रह जोया नंद जसोदानें कया औ
पुत्र वसदेव रा छै देवकी रे गर्भ रा छै संकर्ष
ण कर रोहणी रे गर्भ में आणीयो छै॥

इयै रो नांम बलभद्र बीजो नांव रामजी तीजो
नांव संकर्षण ज्योतिष इव कहे छै इयै रे नावां
री गिणती केने आवे औ परमेस्वरजी छै इयै नै
पुत्र कर मत जाणो इतरी कहे र गर्गजी बोहड़ी
या पछे इतरा कांम श्री कृष्णजी किया गोड़ा लियां
हालीया पछे पगे हालीया॥ पछे बाछड़ां री पूंछ
पकड़ दोड़ीया पछे गोपांगना सगल्यां रो मही
मावण खाधो दधि रा वासण भागा गोपांगना
जसोदाजी कने पुकारू आई पछे श्री कृष्णजी
माटी खाधी माताने मुख मांहे १४ लोक फेर
दिखालीया माता डरी ताहरां समेटीया पछे
परीक्षतजी सुकदेवजी सूं पूछीयो नंद जसोदा
कूंण पुन्य कीयो जिकां रे श्री परमेस्वरजी पुत्र
हुवा पछे सुकदेवजी उत्तर दीयो जसोदा प्रथ्वी
रो अवतार छै अर नन्दजी वसुरो अवतार छै
इयां ब्रम्हाजी कने तपस्या पुत्र निमित्त कीवी थी
ताहरां इयांने ब्रम्हाजी वर दीयो थो थांहरे श्री भ
भगवान पुत्र हुसी तिके वास्ते श्री परमेस्वरजी

ओतार लीयो बीजो विस्तार घणो छै॥ इतिश्री
भागवते महापुराणे दशमस्कंधे अष्टमोध्याय:॥
अथ आगे नवमे अध्याय मे आकथा हुसी॥
जसोदाजी विलोवणा विलोवता था ताहरां
श्री कृष्णजी गोद में हुता अर दूध उफणीयो
ताहरां श्रीकृष्णजी नें नीचा मेल अर दूध स
माहण ने उठीया पछे श्री कृष्णजी दध रो —
माटो फोड़ीयो माखणरो माटो फोड़ीयो जसो
दाजी दीठो श्री कृष्णजी नाठा जसोदाजीला
ठी लीयां छै दोड़ीया सु पकड़ावे नही॥ पछे ज
सोदाजी थाका हुवा ताहरां आप बंधाया पछे
पकड़ घरमे आणीया ऊखलसु बांधणलागा
सु दामणी सु बंधे नही आंगल दोय छोटी
रहे गांठ आवे नही घणोही खसीया पछे-
ठाकुरा दीठो मन जमलार्जुन रूंख भांजणा छै
अर माता पर दु:ख पावे छे ताहरे बंधाया —
रूंख नंदरे बारस्से ऊगा छै सु कुबेर रा पुत्र

छै सरोवर मांहे क्रीड़ा करतां हुतां मदिरा पान
कियो हुतो खेलतां हुतां तै बीच नारदजी आय
नीसरीया नारदजी नें नमस्कार न कीयो ताहरां
नारदजी सराप दीयो जावो थे जमालर्जुन हुवो
नंदजी रे बारणे आगे श्री कृष्णावतार हुसी ताहरां
थांने भांजसी ताहरां थांहरो छुटैपे हुसी सु ऊवां
रूंखां भांजण रै वास्तै ठाकुर बंधाया छै॥ इतिश्री
भागवते महापुराणे दशमास्कंधे नवमोध्याय:॥
दशमे अध्याय में आ कथा हुसी राजा परीक्षित
शुकदेवजी नें प्रसन किया जु महाराज औ वृक्ष
किस भांत सूं हुवा नारदजी क्यूं सराप दीयो
विस्तार घणो छै सु फेर सुणावो॥ ताहरां फेर
सुकदेवजी कयो ऊवै दोऊ कुबेर रा पुत्र हैं नल कूब
र नांव छै सरोवर विषै क्रीड़ा करता हुता ताहरां ना
रदजी आय नीसरीया सु नारदजी दीठा ताहरां नारद
जी नें नमस्कार कीया नहीं मदांध थका ताहरां नारद
जी सराप दीयो जावो थे रूंख हुवो ताहरां इयां-
वेनती कीवी॥ महाराज म्हांने चूक पड़ी राज म्हारो

उधार करो नारदजी बोलीया श्री कुबेर रा पुत्र श्री
परमेसरजी रा परम सेवग कुबेर तिके रा पुत्रां नैं
थांने बिगड़ता दीठा ताहरो थांने सराप दीनो इतरे
बीजो घणो ज्ञानोपदेस कीयो पछै कयो थे नंद जी
परे बारणे जमलार्जुन वृक्ष हुवो श्री कृष्णावतार हुसी
ताहरां थांने भांजसी तां हरां थांरो उधार हुसी
श्री कृष्णजी रो थांने दरसण हुसी इतरो कहे र नार
दजी और ठिकाणे गया ताहरां नल कूबर दोनें
नंदजी रे बारणे जमालर्जुन वृक्ष हुवा तिकां
वृक्षां रे कृतार्थ करण रे वास्ते श्री कृष्णजी उखल
सूं बांधाथका होले होले घसीटता घसीटता
माला सूं ड़रता वृक्षां कने आया उखल रो
एक पासो एक वृक्ष दीसी लागो एक पासो बीजो
वृक्ष दीसी लागो बिचै श्री कृष्णजी तो सरीया
जोर कियो वृक्ष भागा तिकां मां दोने नल कूबर
उठ भागा रहा ।। श्री परमेसरजी नें नमस्कार
कियो घणी आस्तुती कीवी महाराज म्हाने

नारदजी सराप मलो नै दीयो थो म्हाने राजरो
दरसण हुवो ॥ श्री कृष्ण उवाच: ॥ साबास नारद
नैं थांनै चूको नैं पेडै घातीया नारद नें आहीज
चाहीजे म्हारी आज्ञा छै जिको म्हारो सेवक चूके
तिकेनें मारग बतावे थे म्हारा परम सेवग छो
कुबेर रा पुत्र थो पछै नल कूबर श्री कृष्णजी नें
डंडोत कर परकमा दे आपरै ठिकाणे गया ॥
इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे दशमोध्याय: ॥
आगलै अध्यायमें [illegible]

श्री कृष्ण वृक्ष भागा तिकां मांहे नल कूबर दोनै
कुबेर रा पुत्र प्रगट हुवा तिके श्री कृष्णजी नै
नमस्कार कर आपरे ठिकांणे गया सू बीजां
टाबरां दीठा सु आपरा माइतां आगे कयो
औ रूप श्री कृष्णजी भागा म्हा दीठा इतरी बात
कही पण लोकां मांनी नहीं कही बापड़ा कूड़ बोलै
छे लोक सर्व एकठा हुवा जसोदाजी नै कूदियो

साबास जसोदा जी थांने थे इसड़ो बालक नैं –
ऊखल सूं बांधो कदास एक वृक्ष बालक ऊपर
पड़ीया हुंतां तौ इतरो कयो पछे श्री कृष्णाजी नैं
ऊखल सूं छुड़ाया पछे श्री कृष्णाजी खेलण
लागा खेलतां ने माता जसोदाजी पकड़ले आया
भोजन करायो पछे साले नंद एकठा हुवा नंदजी
कनैं आया उपनंदो कहीजु गोकुल में उपद्रव छै
आयो आ जायगा छोड़सां ताहरां नंदजी कही
थांहरैं दाय आवै सो म्हांरैं प्रमाण छै ठौड़ आट
कलौ जठै जावां ताहरां वृंदावनजी री ठौड़ आट
कली पांणी घास घणा आप रो गोधन सो रो
हुसी ताहरां सगलां गोपां मांहे खबर दीनी
सर्व गाड़ा जोत चालीया बूढ़ा अर बालक –
गाडे बैठ मोहीया र पाला चलीया अस्त्री
सर्व गाड़े बैठी गावती चाली श्री कृष्णाजी रा प्रवाड़ा
गावती चालती जमलार्जुन भंजन पूतना मारण
त्रिणावर्त मारण कागासुर मारण जिके प्रवाड़ा –
कीया तिके ठाकुरां रा सर्व गावती चाली॥

देवतां पुहुप बर्षा कीवी हूये मोत सूं वृंदावन जी जाय उतरीया उठै ठाकुरां पांच बर्ष में हुवा पछै बछड़ा चारण जावता सु नंदजी पालीया अलगा मतां जावो उपद्रव छै।। पछै एक दिन गावतां बजावतां बछड़ा चारण नूं गया उठै वत्सासुर दैत्य आयो बाछड़ काले रो रूप कर्यो ताहरां श्री कृष्ण जी बलभद्र जी नैं कयो ओ वत्सासुर दैत्य छै पछै श्री कृष्ण जी पाछला पग अर पूंछ पकड़ फिर यर पर कीयो प्राण छूट्या कठो डौरे रूंख ऊपर पछाड़ीयो बज्र पात हुवो गुवाल सर्व डरीया उपद्रै हुवो पछै श्री कृष्ण जी आय मिलिया पछै बकासुर दैत्य आयो ताहरां बकासुर रै ठाकुर निगिल गया बकासुर चूंच मारी श्री कृष्ण जी नैं निगल गयो ताहरां सर्व गोपां हाहाकार कियो जैसा जीव बिना मांणस हुवै तैसा हुवा खिण १ हुई अर बकासुर रै तालवै मांहै लागतो लागो पछै उगलीयो सु बाहर नीसर पड़ीया फेर चूंच चलाई ताहरां श्री कृष्ण जी चूंचां दोनू पकड़ चीर नाखी

ताहरां पोहुंपां री बरखा हुई सर्व खुशी हुवा
कहोड घरे हालो आज प्रभात पछै उपद्रव छे
सर्व घरे आया आयर आप आपरे माईतां-
कन सगलां कयो आज इसो उपद्रव हुवो सर्व
गोप चिंता करण लागा कहण लागा ओ बाल
कछे सु पे जाणा गर्गजी इयेरी बातां कही
हुती सु सत्य छै॥ इति श्री भागवत महापुराणे
दसम स्कंधे एकादशोध्याय:॥ अथ आगे-
द्वादशमे अध्याय मे आ कथा हुसी कंस अ
घासुर नें आज्ञा दीनीज थारी बहन पूतना
मारी बकासुर मारीयो हमे तू कही भांत
किसन नें मार ताहरां अघासुर त्यार हुवो
तांहरां श्री किसनजी नूं खबर हुई सु अघा
सुर आसी ताहरां प्रभात हूं उठ र बंसी
बजाई संगीयां नें बोल अर कयो सह
कोई आप आपरो भोजन लेर बंसी बट
वेगा आवो ताहरां सगलां गुवालां आपरा
भोजन बंसी बट बछा ले ले आया श्री किस

नजीनें आए। नमस्कार कियो सब एकठा हुय-
बछा लै गावता बजावता बछा चरावता बन
मे गया उठै आप आपरा भोजन काढ़ीया पात
लां बणायी जीमीया कईरो भोजन सरायो कई
रो भोजन बिगाड़ीयो यो सहीया भोजन कीया
पछे फूलांरी मालावां बणाई पै हरीयां प छै
हंसगति चोर गती छगगती वाऊगति
झालीया खेलतां रमतां दोय पहर हुवा घरां
नें पाछा फिरीया॥ ताहरां अघासुर मुख प
सार मारग मे बैठो एक होठ धरती नें लगायो
बीजो होठ आकाश नें लागो कोस ४ में वि
स्तार करे छै बड़ै परबत री गुफा हुवे तिस
डो मुख अर परबत रा शृंग सिरीखा दांत
हुवै भोत बालका दीठो ताहरां बालक डरीया
ताहरां श्री किसनजीनें मारग रोकीयो ताहरां
श्री किसनजी कयो डरो मत अघासुर दैत्य छै।

ये मांही पैसा चिंता मत करो तोहरां बालक
सर्व एकठा व्हसा सर्व पैठा अघासुर रै पेट में
गया अघासुर जाणी किसन पैसे तो मुख मूंदू
पछै श्री किसनजी पैठा गलै तांई आया देह
बधारी अघासुर रो माथो फोड़ नीसरीया—
पछै सर्व बछा गुवाल नीसरीया अघासुर
मोक्ष गयो पछै बालकां आपरां माईतां नै ब
रस १ पछै कयो आज तमासो हुवो अघासुर
मारीयो॥ ताहरां परीक्षितजी कयो महाराज
ओ तो बड़ो अद्भुत ख्याल कयो सो विस्तार—
सूं कहो बरस १ पछै बालकां बात कही सु
कासूं मत आज अन पाणी लियां नै दिन ८
हुवा छै कदाच जाणसो विकल हुसी सू हूं सा
त्यात छूं ताहरां श्री शुकदेवजी कही राजा थां
नै आहीज चाहीजै जे थां पूछी जो चित्त दे सुणो
॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे द्वाद
शोध्यायः॥ आठा सूं आगे तेरमे अध्यायमें

आवया इसतरै अघासुर मार श्री किसनजी गुवाल
बछां समेत जमनाजी आया सनान कीयो आप
आपरो भोजन काढीयो जमनाजी रै बेलडां मैं
बैठाया पातलां बणाई भोजन जीमण बैठा तित
रै बछा दूर गया ताहरां बालक बोलीया श्री
किसनजीरी वारी छै बछा घेरण हालीया ताहरां
श्री किसनजी बंसरी कमर में राखी बेतसी जडी डावी
बगलमें राखी अर बछड़ां बांसै दौडीया आगै
गया तो बछड़ा सर्व इतासू ब्रम्हाजी लेगया
ताहरां जितरा बछा हुता तितरा बीजा बणाया
आपरी मायारा इसड़ाहीज बणाया लेआया
आगै देखै तो बालक हुता सु सर्व ब्रम्हाजी ले
गया ताहरां उतराहीज बालक ले घर आया
सु आपरी माया क्यु बालकां ऊपर बिवणो हेत
किया अर बछड़ो ऊपर गायां दूणो हेत कीयो सा
मां आय आयर चूंघाया सर्व गुवाल बछांरा रूप
श्री किसनजी सु हुवा ताहरां इतरो हेत हुवो

इये भांत बरस रया पछै दिन२ बरस में चाट-
चासु ठाकरां जाणीया आज ब्रह्माजी आसी ति
वासतै बलभद्रजी नें साथ लेगया गोवर्धन
परबत ऊपर बछा चरावण लागा गायां दौड़
आयां गोप घणाही रोक रया पण रहै नहीं जो-
रावरी बछा ने चुंघाया बड़ हेत सुं बलभद्रजी
हैरान हुवा ओ किसो बिरतांत छै बड़ा गोप
साथे हुता जिकांनें पूछीया आगे ही कदे इसड़ो
हेत करता गोप कहे आगे कोई करता नहीं आज
हीज छै ताहरां श्री किसनजी बलभद्रजी नें कयो-
ओ हमारी माया छै वांसूं कसु ब्रह्माजी लेगया तारां
में बीजा किया ताहरां बलभद्रजी श्री किसनजी रे
पगे लागा ताहरां ठाकुरां कयो थे म्हारा बड़ा भाई
छो पगे मत लागो ताहरां बलभद्रजी कयो राव
ली मायारे पगे लागु छूं पछै ब्रह्माजी खबर करण
आया देखे तो बछा सर्व छै ताहरां फेर खबर
करण गया ओ बछा ऊठे हीज छै।। ओ वै कछु
हीज छै आगे पण ऊसड़ हीज दीसे छै ताहरां

ब्रम्हाजीनें देखने इचरज हुवो फेर ब्रम्हा देखे
तो कासूं जितरा बालक हुता तितरा सर्व चतुर्भुज
दीसण लागा सगलांरे गले वैजयंती माला मकराकृ
त कुंडल माथे मुकट सर्व कृष्णजीरा रूप दीठा
फेर आड़ी माया आयगई ब्रम्हाजी दुःख पावण
लागा ॥ दीसे क्यूं नहीं तारा फेर उघाड़ाहीज
दीठा ब्रम्हा चत हुय रयो ओ श्री परमेस्वरजी पूरण
ब्रम्ह छै ब्रम्हा डरीयो हाथजोड़ डंडवत कीनी।
महाराज हूं अग्यानी मते जाणीयो रावली माया नें
मोहीत कीयो मैं में चूक पड़ी इतरी कही ॥ इति
श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे त्रयोदशोध्याय:॥
अठा आगे चवदमें अध्यायमें आ कथा हुसी
ब्रम्हाजी अस्तुती कीवी महाराज हूं बड़ो अग्यानी
छूं पण रावलो पुत्र छूं मैं में चूक पड़ी सो चूक
माफ कीजो महाराज रावली माया अपर बल सूं
मने भुलायो पण हूं तो रावलो पुत्र छूं अर श्री
परमेस्वरजीरे नांव में हूं उपनो छूं थारा छूं मैं

माहे चूक पड़ी सु राज मने माफ कीजै। इये भांत ब्रह्माजी अस्तुती बड़े विस्तार सूं कीवी जिदीन ब्रह्माजी पगां मांही माथो दियो ताहरां श्री किसनजी उठाय अर ऊंचो लियो कयो ब्रह्मा तूं म्हारो छै आपरो चूक तिके न पड़े मैं थातीजै तूं म्हारी माया सूं भूलो थो सु थारो अज्ञान दूर कियो चिंता मतां करे तू म्हारो शरीर छै इतरी कही ताहरां बछा बालक ब्रह्माजी छिपाया सु सागी आण हाजर किया ब्रह्माजी दंडौत कर तिठां गया पछै ठाकुरां आपरी मायारा बालक बछा किया हुता तिके आप मांहे लीन किया अर सागी बालक हुता तिकांनै कयो हूं बछड़ा ले आयो हूं हमें आपां थाली भोजन करां ताहरां भोजन करण लागा सु बालकां जांणीयो म्हैं बीच हुता खिण एक नींद आई थी इव जाणीयो बरस एक गुदरीयो तैरी खबर ही पड़ी नहीं पछै-

इये भांत बरस बीत्या पछैं दिन २ बरस में घटे-
घासु ठाकुरां जाणीयो आज ब्रम्हाजी आसी ति
वासतें बलभद्रजी नें साथ लेगया गोवर्धन
परबत ऊपर बछा चरावण लागा गायां दौड
आयां गोप घणाही रोकरया पण रहै नहीं जो-
रावरी बछा ने चुंघाया बड़े हेत सुं बलभद्रजी
हैरान हुवा।। ओ किसो बिरतांत छै बड़ा गोप
साथे हुता तिकां नें पूछीयो आगे ही कदे इसड़ो
हेत करता गोप कहे आगे कोई करता नहीं आज
हीज छै ताहरां श्री किसनजी बलभद्रजी ने कयो-
ओ हमारी माया छै कांसूं कहूं ब्रम्हाजी लेगया ताहरां
में बीजा किया ताहरां बलभद्रजी श्री किसनजी रे
पगे लागा ताहरां ठाकुरां कयो थे म्हारा बड़ा भाई
छो पगे मत लागो ताहरां बलभद्रजी कयो राव
ली मायारे पगे लागु छूं पछै ब्रह्माजी खबर करण
आया देखे तो बछा सर्व छै ताहरां फेर खबर
करण गया ओ बछा डेरा हीज छै।। ओ वे कछु
हीज छै आगे पण उसड़ हीज दीसे छै ताहरां

मोहे चूक पड़ी सू राज मने माफ कीजै । इये मांत
ब्रह्माजी अस्तुती बड़े विस्तार सूं कीवी निदान
ब्रह्मजी पगां मांहि माथो दियो ताहरां श्री क्रिस
नजी उठाय अर ऊंचो लियो कयो ब्रह्मा तूं
म्हारो छै आपरो चूक तिके नें पेड़ मैं घातजे
तूं म्हारी माया सूं भूलो थो सू थारो अज्ञान दूर
कियो चिंता मतां करे तू म्हारो शरीर छै इतरी
कही ताहरां बछा बालक ब्रह्माजी छिपाया सू
सागी आण हाजर किया ब्रह्माजी दंडौत कर
ब्रह्मलोक गया पछै श्रीकृष्ण आपरी मायारा बा
लक बछा किया हुता तिके आप मांहे लीन किया
अर सागी बालक हुता तिकांनै कयो हूं बछड़ा
ले आयो हूं हमें आपां याला भोजन करांतासां
भोजन करण लागा सू बालकां जाणीयो म्हैं
माहीज हुता खिण एक नींद आई थी इवजाणीयो
बरस रो गुदरीयो तैरी खबर ही पड़ी नहीं पछै—

भोजन कर बछा साथीले हंसता खेलता बृंदा
बन आया माईतांने कयो आज म्हे इसडो तमासो
दीठो इयेभांत अघासुर मारीयो सु शुकदेवजी
कहे छै राजापुं कहतो हुतो सु बरस दिन पछे बा
लकांवातां कीया सु तने कथा कही सु इयेभांत
कही॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे चतु
र्दशोध्याय॥ आगासु आगे पनरवे अध्याय मे आ
कथा हुसी श्री कृष्णजी बछा चरावता सु नंद जी अर
माता जसोदाजी कयो हमे गायां चारो सु बलभद्र जी
ने साथे लेअर गायां चारण पधारीया सु सर्व गुवाल
साथे ले बन में गया उठै फूल फल खाधा वणां
सगलां वजाई मृग और ही बन रा जनावर सर्व
मोहित किया सर्व जनावर वश्य हुवा छै बल
भद्र जी पोढ़ीया छै श्री कृष्णजी पांव पलो
टीया छै पछै श्री कृष्ण जी पण पोढ़ीया
पछै धेनुक दैत्य प्रगट हुवो ताड़ वृक्ष रे मां
हीं प्रगट हुवो तेरी चोटी जाय आकाश

नें लागी पग जमीरया पछे श्री किसनजी-
दीठो जद घोड़ा कै ताहरां पछाड़ मार मार ना-
खीयो मारीयो पछै वृक्षरा फल ऊंचा हुता
सु किसनजी आप देखे तो नीचा लुल आया
फल सगलांही खाधा पछे सर्व हंसता रम
ता गावता बजावता वृज मे आया सगलां
री मायां हेत कियो पछे रात गुदरी प्रभात
हुवो ॥ फेर गायां ले बन मे आया काली
नागरो दोह हुतो ते चढ़े आयां सारां ही
गायां गुवालां गायां नें पांणी पायो सु-
पाणी मांहे विष हुतो सु सर्व अमृत हुवो
श्री कृष्णजी सगलां नें दीठा सु मुवा था ति
कां सगलां ने जीवाड़ सर्व सरजीवत किया
ताहरां आप आपमें देखवा लगा सु आ
प समेज आपां सर्व मुवा हुता पर श्री कृष्ण
जीवाडिया सर्व कांम ओ करे छै इतरो कांम
कर हंसता रमता वृज मे आया इतरी कथा

पनरवें अध्याय में दर्‍शो॥ इतिश्री भागवते महा
पुराणे दशमस्कंधे पंचदशोध्याय:॥ अठा सूं
आगे सोलवें अध्याय में आ कथा दुरसी श्री
कृष्णजी जाणीयो ओ काली नाग रूपे काली
देहमें रयो भलो नहीं इण नें दूर करणो ता॥
हरांसर्व गुवाल गायां ले काले दीरे द ह -
गया उठ जाय दड़ी रमीया श्री किसनजी

दड़ा न दाटो दीनो कालदा र दह मे पड़ी
श्री किसनजी कयो दड़ी ले आवूं छूं ताहरां
बीजा साथीयां कयो महाराज दड़ी औार
करां मांथे मत्तो जावो ताहरां श्री किसनजी
कयो आपणो खेल गारी दड़ी छोड़ां न ही ॥
पछे श्री किसनजी कदंब रे रूख ऊपर कमर
बांध चढ़ीया कालंदी रे ह्रद मांहे कूद प
ड़ीया ह्रदरो पाणी फाटो च्यारसो धनुष पांणी
चवणो बढ़ीयो सूं मांही काली नाग रो मोहल
दीसण लागो सो नाग सूतो हुतो सू क्रोध कर

डसीयो सु कहे जु इसड़ो कुण छै जु म्हारी होड़-
आवै छै जैरे पण एकसो इकोत्तर जीभ दोयसो
दोयपरो धरणहार सेस नागरो छोटो भाई-
क्रोध कर श्री किसनजी रे चकां वाही प छे
सर्व सरीर छोलो लपटीयो ॥ गुवाल सारा
देखवाली त्राही करणा लागा हाय हाय रे
किसनजी मारीजै रे सब गुवाल प्राणां बिना
हुवा अचेतन हुवा पड़ीया अर श्री किसनजी-

इयहिजे माते जमा छे इतरे ब्रज मे मुड़ो –
सोरा होवण लागा सगला गोप कहण ला
गा कोई उपद्रव छे आज बलभद्रजी साथे न
गया किसनजी रे ऊ बुरो काम कियो पछे
सर्व गोप गोपांगना जसोदा रोहणी नंदजी
सात नंद बीजा सर्व एकठा हुयर बनमें हालीया
पाणी आगे हुवो अर सर्व कालंदी रे तिर दे
गया देखे तो श्री किसनजी सर्प सुं बली
रिया द्रह मांहे ऊभा छे सर्व नागनीवाली

करणा लागा सर्व कमर बांध बांध कालंदी मां
हीं पड़न लागा ताहरां बलग दूजी पालीया
मता ऊरो ईयनें ऊर कोई नांही दहमें पड़न
दीया नहीं पण सर्व अचेत हुवां पड़ीया जसो
दासोहिणी अचेत हुय पड़ी छै श्री किसनजी
दीठो म्हारा माईत दुःख पावे छै ताहरां डील
वधारीयो सु नाग रो बल हरीयो बंध खोला
पड़ीया सर्प छोड अलगो ऊभो रयो सर्व देखे
तो श्री परमेस्वर रो रूप दीसे छै पीतांबर धा
मकराकृत कुंडल मणी देख अलगो ऊभो रयो
श्री कृष्णजी कूद फण ऊपर चढ़ीया फण ऊपर
चढ़ण लागा गोप सर्व देख खुस्याल हुवा देव
ता सर्व दुःख पावता हुता सु खुसी हुवा सर्व
देखे तो श्री परमेस्वर रो रूप दीसे छै पीतां
बर धारा मकराकृत कुंडल मणी देख अलगो
ऊभो रयो श्री कृष्णजी फण ऊपर नाचे छै देव
ता खुसी हुवा पोहपां री बरषा हुई पछै नाग

दुःख पावण लागो मुख मांहिलोहीरी धारा चली

पण श्री कृष्णजी निरतभेद सर्व नाचणलागा —

नाग नीचो पड़ीयो मरण लागो ताहरां नाग

पतनी उठ दौड़ी आई त्राही त्राही करण लागी

महाराज मांहरो भरतार ऊबरै। नाग पतन्यां

आपरा बालक ले सु आण श्री कृष्णजीरा पगां

नीचै नाखीया रोवण लागी पछै नाग पतनी

अस्तुती करण लागी ओ महा अज्ञानी तामसी

जात इये रावलो भेद जाणीयो नहीं पण इये

ही तपस्या कांई आछी कीवीथी सु इये रे

माथे ऊपर रावला चरण हुवा तिके ब्रम्हा

दिकां ने दुर्लभ छै पण हमे ओ मरै छै इण

भांत अनेक अनेक अस्तुती कीवी बिस्तार —

घणो छै नाग पतनी आजीज हुई ताहरां

छोड़ीयो आप उतर पासे ऊभा रया सरप

अलगो ऊभो देखण लागो महाराज हूं अ

ज्ञानी भख मने रज तामसी कियो म्हारा —

जात तामसी तो मने किसो दोस इपे भांत-
नाग बहुत बीनती कीवी ताहरां श्री किसनजी
कयो तूं अठे मत रहे ताहरां नाग कयो हूं कठे
जाऊं इतरो म्हारो कुटंब छै ताहरां श्री कृष्णजी
कयो तूं समुद्र में जा ताहरां नाग अर नाग-
पतनी श्री कृष्णजी ने दंडोत नमस्कार कर समुद्र
गया इतरी कथा सोलमें अध्याय में छै॥ इति
श्रीभागवते महापुराणे दशमस्कंधे षोड़शो-
ध्याय:॥ अठ आगे सतरवें अध्यायमें आ कथा
छ्सी राजा परीक्षतजी श्री शुकदेवजी सूं प्रसन्न कि
योजे महाराज ओ नाग इसड़ो इतो अर इतरा
बरस हुवा अठे रहतां सु किसी भांत अठे आयो
विचार कहो ताहरां शुकदेवजी कहे छै राजा चित्त
दे श्रवण करो॥ एक समे नागां री माता अर गरुड
री माता सरोवर विषै स्नान करण ने गयाथा ति
तरै सूरज रो सपेत घोड़ो पाणी पीवण नें आयो
ताहरां गरुड़ री माता कयो ओ घोड़ो बहुत सपेत
छै ताहरां नागां री माता कयो इण घोड़े री पूंछ तो

स्याहपछै पछै इयां होड़ मारीज पूछ सपेत हुवे तो
गरुड़री माता आगे नागांरी माता दासी हुवे अर
पूछ स्याह हुवे तो नागांरी माता आगे गरुड़ री
माता दासी हुवे इये जिगत होड़ मारी पछै घरे
आई नागां पूछीयो माताने थे कांसू होड़ मारी
ताहरां नागांरी माता कयो मे इये भांतहोड़ मारी
छै नागां कयो बहोत बुरो कांम कियो घोड़े री
पूंछ सपेत छे नागे दीनी भूंडी हुई ताहरां घोड़े
री पूंछरा केस हुता तिका सवे केसां मांहे नाग
जाय पैठा प्रभात घोड़े फेर पाणी पीवण नूं आयो
ताहरां पूंछ काली दीसणलागी ताहरां गरुड़ री
माता नै धका दे घरेलेगया। दासी कीनी आ बात
गरुड़ सुणीज माता ने दासी कीवी हूं साराहीज
सापांनै मारीस ताहरां जितरा नाग हुता तितरां
सारांनै गरुड़ मारण लागो ताहरां सांराही नागां
आयपैनती कीवीजु नाग तो घणां घणाहीमारीया
हमे माफ करो आगांनूं है थांने बरसां बरसी
देज देसां। ताहरां कितरायक मारीया। अत

कितरां पकरै माथै देज ठहरायौ ताहरां छोडीया।
अर पूं बनाठौ सु पाताल गयौ सु उठै ही गरुड गयौ।
संम्हौ दीठौ छुट नही। ताहरां श्री परमेश्वरजीरै
वं लै जाय छिपायौ। ताहरां श्री परमेश्वरजी कहै
औ म्हारै शरणै आयौ हमै तूं छोड। गरुड
कहै छोडुं नही। म्हारौ दुसमण राखौ।
थे पण दैत्यौ सुं जुध करो छौ ताहरां मै अर
चढौ छौ ताहरां जीतौ छो। ताहरां ठाकरै
मायारा दैत्य उठाया। अर गरुड़नै कह्यौ ज
मनै चाढौ ताहरां गरुड़जी ठाकुरांनै च
ढाया सु ठाकुरां चवदै लोकरौ भार दीनौ।
सु गरुड मरण लागौ। ताहरां छोडीयौ
गरब दूर कीयौ। पछै फेर गरुड षबर
कराई। सेवकांनु कह्यौ। देज देतौ
कोई नाग उजर करै सु मनै कह्या।
ताहरां सेवगां कह्यो नांगै सर्व वस
हुवा। पणं एक काली नाग रमण के
दीप मै छै मानै नही छै। ताहरां गरुड

जी तियारी कीवी मारणा जाईस ताहरां का
लीनागनै खबर हुई गरुड़ आवै छै।
ताहरां नाग आपरौ कुंटुंबले कालिंद्री
मै आयर रह्यौ हुतौ सुराजा थां पूछी
थीजकिसी भांत काली अठै आयौ सुइवै
विधि आयौ। ताहरां राजा परीक्षित फेर
प्रसन कीयौ। गरुडतौ पाताल ताईजावै
तिकौ अठै आवै नही सुकिसुं कारण
छै ताहरां शुकदेवजी कहीज एकसमै
श्री भगवान गरुड अमृतरै वासतै मेल्ही
यौ हुंतौ ताहरां गरुडजी अमृत ली
यां आवता हुता। सु रख लागी ताहरै
अठै कलिंद्रीरै कदंब ऊपर अमृत
राख अर नीचौ उतरी यौ। अर
मछली खावण बैठौ अर कदंबरै नीचै
ऋषीश्वर तपस्या करै थौ। तिकै गरुडनै
कह्योज अ ठारी मछली मतां खाये। तुं
परमेश्वरजीरौ वाहण छै। अर थारो आहार

छै पण हुं बैठो छुं तिकै वासतै तुं टालो कर इतरो वरजीयौ पण गरुड रह्यो नही मछली षाधी ताहरां भ्र षीश्वरां कह्यो तुं म्हारै कह्यो रह्यौ नही। पण फेर तौ इयै ठौड आयौ तो मारीस। आ षबर काली नाग नै हुती जु उवै जागा गरुड आसी नही। ता हरां उठै आय रह्यौ हुं तौ इतरी कथा सत्रहै ध्याय मै छै॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे सप्तदशोध्याय: ।१७। अठासु आगै अठारवै अध्याय मै कथा हुसी। काली नाग तो समुद्र मै गयो अर अर श्री कृष्ण जी आया नंदजी सूं मिलीया गोप सर्व मिलीया। माता जसोदा रोहिणि मिली सर्व षुस्याल हुवा। रात पडी सर्व उठै हीज रह्या। कह्यौ परभाते घरे जासां सर्व सूता इतरै देषै तौ ज्यारां पासां मुंजरौवन छै तिकै नु च्यारां पासां दावनल अग्नि लागी छै। नीसर सकै कोई नही। गोप गोपांगनागायां

सर्व नाहि नाहि करणा लागा श्री किस
नजी नै कहण लागा महाराज बलां
छां ~~सब~~ राज रा षो। तहरां श्री कि
सनजी बोली या आंख्यां मीचै ताह
रां सारां ही आख्यां मीचीयां ताहरां
अगनि सर्व श्री किसनजी आचमन
कर गया पछै आंख्या सारां ही
खोलीयां देखै तो कुछ नही। पछै प्र
भात हुवौ सु सर्व गोप गोपांगना
जावता बजावता जीवता व्रज में आया।
पछै फेर सर्व गुवाला गायां नै ले ब
ल भद्रजी ने साथे बन मे गया। गा
वण लागा भांत भांतरा फल खावण
लागा फूलं सुं रमण लागा तिकांरौ
कितरीक विस्तार कहीजै। इयै भांत
खेलीयां पछै। एकै पासै किसनजी हुवा।
पर एकै पासै बलभद्र जी हूवा। आधा
आधा सखा बांट लीया खेलण लागा। श्री
किसनजी हारै ताहरां बलभद्रजीरा साथी
किसन जीरै साथीयांरै कांधै चढै।

ऊपर बलभद्रजी हारै ताहरै किसनजी रा साथी बलभद्रजी रै साथीयांरै कांधै चढै। इण भांत सुं खैलै। इतरै एक छोकरै रो रूप कर प्रलंबासुर दैत्य आयौ ताहरां श्री किसनजी बलभद्रजी दीठौ, सु श्री किसनजीरो भीर दैत्य हुवौ। पछै श्री किसनजी हारीया ताहरां एकैनै श्री किसनजी चढायौ अर बीजा बजे चढाया, अर प्रलासुर दैत उपर श्री बलभद्रजी चढीया। सु तीन लोकरो भार दीनौ ताहरां दैत मररण लागौ। पछै तीन मुकी दैत्य रै बलभद्रजी मारी ताहरौ दैत्यरो माथौ फाट गयौ। दैत्य रवै सु बालकौ दीठौ, सु छोकरा नाग ताहरां किसनजी बोलीया रै मतांडरो दैत्य आयौ हुतो सु मारीयौ छौ पछै सब गुवाल बुसी हुवा श्री बलभद्रजी री स्तुति करण लागा वडौ काम कीयौ फेर अस्तुति घणी कीवी॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे अष्टादशो ध्याय:। १८ ॥ आगे उगणीसवै अध्याय

मा है आ कथा हुसी। आगे तो प्रलंबदै-
त्य मारीयो उठे वार घणी लागी जित
रै गायां चरै थी सु दूर गई मूंजरै वन
मे गई। देखै तो च्यारां पांसां दावानल
अगिन लागी छै गोधन सब बलै नीस
रवा नै ठोड कई नही गुवाल सर्व किस
न जी नै कहण लागा महाराज गोधन
बलै छै अर आपांनै तो गोधन हीरो
हीज आसरो छै गोधन नै उबारीजे तो हरां

ताहरां सारांही अखां मीचीयौ फेर बोली
यां देखै तौ कुछ नही। सगला खुसी
हुवा जोचणां नै पांणी पाया गुवालां पां
णी पीया खुसाल हुवा घरे आया।
आप आपरां माईतां नै कह्यौ इसड़ौ
तमासौ दीठौ। बीजौ विस्तार घणौ छै पण
पूरौ सुणीयो नही ॥ इति श्री भागवते महा
पुराणे दशम स्कंधे उगणीसवोध्याय:॥१९।
अठा सुं आगै वीसवै अध्याय मै आ कथा
हुसी। ग्रीषम रुत गई अरु वरषा रुत आई।

सु भांत भांतरा मेघ वरसण लागा। प्रथमी बुस्याल हुई सु सिणगार भांत भांतरा हुकीया। ज्याय रै भरतार आयां स्त्री सिणगार करै तिका भांत सुं धरती सिणगार कीयौ। नवीनवी जड़ी बुंटी उगी सहज ही सु सिणगार हुवा। मंमोलीया दीसण लागा सु तिकहीज जाणौ विदली हुई। इयै तरै और भांत भांतरा सिणगार वर्णन कीया विस्तार घणो छै अनेक वरणन कीया छै। पछै वरषा रुत गई अर सरद रुत आई। आकासा विषै बादल स्याम हुता सु सपेत हुवा। ठौड ठौड पाणी गुडला हुता सु उजला हुवा उषदी सर्व पाकी फल सर्व पाका श्री किसन जी गुवाल सर्व साथे छै। एकै पासै गयां चरावै छै बीजै पासै सर्व गुवाल आपरा भोजन आणीया छै सु उजली सिला ऊपर जीमण बैठा जीमै छै। इयै भांत ठौड ठौडरै वर्णन घणौ विस्तार सुं कीयो छै। आ कथा बीसवै अध्याय मै छै॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे विंशतीमोध्याय:।२०। अठा सुं आगै इकवीसै अध्याय मै आ कथा हुस

वंसीरौ वर्णन करती। प्रभात हुवौ श्री कृष्णजी गुवाल्यां नै साथै वंसी वट जाय वंशी वजाई। व्रजरी गोपांगना हुती सु सर्व मोहित हुई। आप आपरी सखी सुं लाज बोलर कहणा लागी। इयै वंशी कुण पुराय कीयाज श्री कृष्णजीरां अधरां सुं लागी छै। इयै भांत वंशीरा घणौ प्रकास कर व खाण कीया छै। पछै मृग आपरी स्त्रियां सहित कांन दे सुणै छै। सु मोहित हुवा छै। सु उवांनै गोपांगना धन्य कहै छै। पछै देवता सर्व देवांगना सर्व पोहप वर्षा करै छै तिके धन्य। पछै पंखी सर्व सुणै छै ते धन्य। नदी वंसी सुणै छै ते धन्य। बीजाई तिके सुणै छै ते धन्य। इयै भांतरा वखाण सर्व गोपांगना करै छै। अर काई पांन व्रत करै छै। गवरी पूजन करै छै अर कहै छै म्हांनै किसनजी भरतार देवो। फिर कहै छै जिकी भूमि उपर श्री कृष्णजी चरण राखै छै जिका धूल ले अर छाति सुं

लगावो जिव हीयैरो ताप जावै। इयै
भांत सुं भांत भांतरा वर्णन करै छै।
इयै भांत सुं विस्तार घणो छै॥ इति
श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे
एक विंशतिमोध्याय:।२१। आगै बाई
सवे अध्याय मै आ कथा छै। गोकुल
माहे जिके गोप कन्या छै तिके सर्व का
त्यायनी व्रत करण लागी। गौरी पूजन
करै छै अर कहै छै। म्हांनै श्री किस
न जी भरतार देई। इयै भांत एक महीनै
लांई वरत कीया। मास १ पूरो हु
वो तांहरां एक समै सगली कन्या ए
कठी हुई। ब्राह्मणी नै साथे ले पूजा
री सामग्री थाल मै घालर सरोवर
विषै गौरी पूजण गई। गवरी पूज
अर कपडा उतार तलाव माहै सांपडण
नै पैठी सांपडी फेर जल क्रीडा करण
लागी। आप आप माहै पांणी सुं खेलन
लागी। इतरै मै श्री कृष्ण जी गोधन लीयां
गुवाल साथे लीयां सरोवर कांठै आया।

श्री कृष्णाजी विचारी इयौ कात्यायनी व्रत कीयौ सु म्हारै निमित्त कियो। हमैं इयांनै वर देणौ ताहरां गुवालसा थे हुता तिकांनै कह्यो। थे अठै ऊभा रहौ मनै एक काम करणो। ताहरां स गला ही सखा थानां हानै ऊभा रीकिया। अर आप सरोवर रै तीर आया। पछै कन्या थी तिकां सगल्यांए कपडा ले अर कदंब ऊपर चढीया ताहरां कन्या सर्व कूकण लागी। गुवाल साराही ताली दे हसण लागा। कन्या ऊभा डी हुई हसण लागी। पछै कन्या कहण लागी। महांराज महाराज वस्त्र देवौ। श्री किसन जी कहण लागा थे अठै आ य लेवौ। ताहरै कन्या कहण लागी। इ सडा अन्यावन करौ। म्हांरा वस्त्र देवौ नही तौ म्हांरा माईतां नै कीहसां माईत कंस कन्है पुकारसी। जु किसन जी इस डा कांम करै छै। म्हे थाहरी दासी छां थे म्हारा कपडा देवौ तो — पण

श्री कृष्णजी कहै जद थे आडै आय लेलै तौ कपडा देईस नहीतौ न देऊं ताहरां सर्व कड़ान्याए कठै हुय आवण लागी ताहरां श्री कृष्णजी कह्यौ । एक एक जणी आपरा लेलौ देईस आप हाथ ऊंचा कर आवौ । ताहरां सगल्यांही एकठी हुयर विचार कीयौ चालौ । ताहरां ऊंचा हाथ कर बाहर नीसरण लागी । पांणी नाभि सुं नीचौ ऊतरण लागौ ताहरां श्री किसन जी बोलीया । बस करौ म्हैं थांहरी परचौली यौ इतरो कीहर श्री किसनजी कदम सुं नीचा ऊतरीया सगलांईरा कपड़ा दीया क

श्री कृष्णाजी कहैजन थे म्हे आय लेलै
तो कपडा देईल नहीतौ न देऊं ताहरां स
र्वे कडान्याए कठी हुय आवण लागी
ताहरां श्री कृष्णाजी कह्यौ । एक एक जणी
ऊपर लेलो देईल ऊपर हाथ ऊंचा कर
आवो । ताहरां सगल्यां ही एकठी हुयर
विचार कीयौ चालौ । ताहरां ऊंचा हाथ
कर बाहर नीसरण लागी । पांणी नाभि सुं
नीचौ उतरण लागौ ताहरां श्री किसन जी
बोलीया । वास करो म्हे थांहरै परचौली
यौ इतरो कीहर श्री किसनजी कदम सुं
नीचा उतरीया सगलांहीरा कपडा दीया क

आपरै घरे आया। अर श्री किसनजी आपरा साथी गोधन सारो ही ले खेल ता रमता वृज मै आया॥ इति श्री भाग वते महापुराणे दशम स्कंधे द्वावि[illegible] विंश तमोध्याय:।२२॥ अठै आगै ते वीसवै अध्याय मै आ कथा छै। श्री किसनजी बलभद्रजी साराही सषा साथ ले गोधन चरावता चरावता दूर गया सारा क्षुधा तुर हुवा। आगलै गांव ब्राह्मण यज्ञ करता हुता। सु साथीयां नै कह्यौ के ब्राह्मणां कन्है जावौ राधौ अन्न मंगले आवौ जायर कह्यो श्री बलभद्रजी अर श्री कृष्णजी भूषा छां। अर थांहरै जज्ञ छै म्हांनै भोजन देवौ। श्री कृष्णजी बलभद्र जी मगायो छै। ताहरै सषा ब्राह्मणां कनै गया। जायर कह्यो श्री बलभद्रजी किसनजी भूषा छै सारा गुवाल भूषा छै म्हांनै भोजन

आपरै घरे आयां। अर श्री किसनजी
आपरा साथी गोधन सारो ही ले खेल
ता रमता वृज मै आया॥ इति श्री भाग
वते महापुराणे दशम स्कंधे द्वावि विंश
तमोध्याय:।२२॥ अबै आगै ते वीसवै
अध्याय मै आ कथा छै। श्री किसनजी
बलभद्रजी साराही सषा साथ ले गोधन
चरावता चरावता दूर गया सारा क्षुधा
तुर हुवा। आगलै गांव ब्राह्मण यज्ञ
करता हुता। सु साथीयां नै कह्यौ के
ब्राह्मणां कन्है जावौ रांधौ अन्न मंगले
आवौ जायर कह्यो श्री बलभद्रजी अर
श्री कृष्णजी भूषा छां। अर थांहरै जज्ञ छै
म्हांनै भोजन देवौ। श्री कृष्णजी बलभद्र
जी मगायो छै। ताहरै सषा ब्राह्मणां कनै
गया। जायर कह्यो श्री बलभद्रजी किसनजी
भूषा छै सारा गुवाल भूषा छै म्हांनै भोजन
देवौ। म्हांरी गायां चरती चरती दूर गई
म्हे पण पाछै चालीया आया सु क्षुधातुर हु
वा सु थां कनै रांधो अन्न मगायौ छै।

नारयर उवै हीज भांत सुं कह्यौ। ताहरां पण आगै जाणती थी जु धन्य गोपांगना जिकै श्री कृष्णजीरौ दर्शन नित्य करै छै। श्री परमेश्वर जी उवा घडी करती तिवै घडी मांहै। श्री कृष्णजी नै आख्यां देखां अर जितरै गुवालां आय अर वात कही। पछै जितरी स्त्री बैठी हुती तितरी सर्व उठी सुछ प्रकार रौ भोजन ले दोडी भरतारां नै भरतारां दीठी सु कह्यौ थे कठै जावौ छौ मतां जावौ सु जेठ भरतारां सारां घणी ही वरजी पिण रही नही। भोजनरी सामग्री सर्व ले अर श्री किसनजी कनै आई। श्री किसनजी दीठै अस्त्रीयां आई ताहरां साथीयां सुं कहण लागा। देखो जी इयांरो प्रेम। वखाण करण लागा। इतरै मै अस्त्रीयां सारी ही निजीक आई। श्री किसनजीनै दीठ हरषत हुई। नजर देख हरख अर आंख्या मूंद लीवी। श्री किसनजीरौ रूप देखर घट भीतर ध्यान कर राखी यौ। पछै श्री किसनजी कह्यौ थे आपरा

भर्त्तारां रै हुकम विना क्युं आई बुरां की
यौ। अै लक्षण पतिव्रता अस्त्रीयांरा नही।
इणी वात न कीजै हमै थे परी जावौ। इण
री वात श्री कृष्ण जी कही। ताहरा सग
ल्यां अस्त्रीयां रै नेत्रां सुं नीर वहण लागौ।
म्हाराज म्हे थांहरै दर्शन री प्यासी आयां
छां। आ वात म्हांनै मतां कह्यौ इतरी
वात कीहर सगली स्त्री डंडौत कीया।
पछै पगै पडी पछै श्री किसनजी कहण ला
गा। म्हारो अलगो थको ध्यान रा बैठिकै
सुं हुं घणौ खुसी छुं। अरनैडौ आय अंक
भरै सुं इलरो राजी नही। इतरौ कीह
पछौ साथीयांरी पातलां उत्तम वणयां
थ्यां तिके भोजन रै उवासनै मांडीयां। आ
परी बलभद्रजीरी पातलां मांडी भलीभांत
सुं भोजन जीमण जीमाया। ताहरां अस्त्रीयां
भोजन पुरी लीया। एक एक ग्रास अस्त्रीयां रै
हाथरौ लीयौ जिहांसी प्रीति अधिकी दीठी।
ताहरां सगल्यां स्त्रीयां आयां। अर एक
अस्त्री भर्त्तार आवण दीनी नही उरै मैं जडराखी

तिका अस्त्री सगल्यां हुता पहली मोक्ष
गई। श्री कृष्णजीनै आय मिली उवेरां
प्रेरां हुता अधिको पेम हुवो। पछै सर्व
अस्त्री मोक्ष गांमी हुई। पछै उवां अस्त्री
यांरा भरतार पछोतावण लागा। धन्य छै
वे अस्त्री जिकांरै हाथे श्री कृष्णजी
आरोगीया। आपांका दूं कीयौ जु श्री
किसनजी रामलीया सषा आया तिकां
नै पाछा मेल्हीया। धिकार छै अपणै
जनम नै धिकार छै आपणौ ब्राह्मण
पणौ नु जु औ काम कीयौ जग्य रै भोगरां
लेण हारो ही किसन। अर जग्य रो दा
ता ही औ। जग्यरो करण हारो ही औ।
तिकै सुँ आंपां अण कीवी। औ श्री पूर-
ण ब्रह्म छै। अर वसुदेव रो पुत्र छै। अर
नंदरो पुत्र कहावै छै। पण श्री परमेश्वर
छै तिकै सूंतो आपां अण कीवी। धिकार
छै आपणै कुलनै छै। धिकार आपणा जनोईनै।
जिको कुलरी जनोईरी वडाई कीवी। श्री
किसनजी नै वे मुष मेलीया। अकाई श्री

श्री परमेश्वर जीरी माया हुई। जु आपां आवात कीवी। इयै भांत ब्राह्मण पछता वण लागा। इतरी कथा तेवीसवै अध्याय मै छै॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे त्रयो विंशतिमोध्यायः॥२३॥
आगा सुं आ कथा चौवीसवै अध्याय मै हुती। नंदजी आदि देलगलांगो कुल वालीयां यै घर घर विषै पकवांन हुवण लागा। सगला कहै छै वैगा हुवौ रै भांत भांतरा पकवांन सांमगरी करौ। तारां श्री किसनजी देष अर नंदजी नै पूछीयो ज पिताजी हुं थांहरौ पुत्र छुं थे मेसुं कही भांत वातरी दुभांत मतां राषौ। कोई शत्रु हुवै कोई मित्र हुवै कोई दुस्वभाव हुवै तै सत्रु सुं छांनी वात राषीजै। अथवा दुस्वभाव हुवै तै सुं छांनी वात राषीजै पिण मित्र सुं तौ वात छांनी राषीजै नही। तौ हुं तौ थांहरौ पुत्र छुं। मै सुं छांनी वात क्युं राषौ।

इलरा पकवांन सगलां वृज वासी यांरै घरे हुवै छै सु कैरै वासतै हुवै छै। का तौ कही देवतारै निमित्त करो छो जु म्हानै कोई फलदेसी। कालो कारुढ करो छो। जु म्हांरै आगै हुवती आई छै तिकै वासतै करो छो। सु मनै पण विचारर कहो। ताहरां नंदजी कहै छै। बेटा आपं अहीर लोक छां। आपणो वित्त माल सर्ब गो धन छै का षेती छै सु घास पांणी धांन आपणै घणो हुवै तो आ पांवड मारगस हुवां सु इलरा घोकलो जे हुवै इंद्रजी क्रिया करै तो। मेघ छै सु इंद्रजीरै वस छै सु जो इंद्रजी क्रिया करै तो ज्यौं ज्यौं आपणो मेह चाहीजै त्युं सुं वरसै। अर इंद्रजी क्रिया न करै तो मेघ वरसै नही। सू आप तो इंद्रजी परमेश्वर छै। आपणो जीवणो छै सु इंद्रजी छै सू अै पकवांन इंद्रजीरै वासतै करां छां।

ग्रै इंद्र महोत्सव करसां। इतरी वात नंदजी कही। तारां श्री किसनजी पाछै जोय किरोध कर बोलीया नंदजी सुं कहण लागा जदेषो जी लोकां री ग्यान भूला ला फिरै छै। इंद्र कुण रंक जिको आपांनै जीवाडै जिकुं भाग्य मै छै सु पाई जासी सर्व ही मुदौ कर्म ऊपर छै जो कर्म मांहैन हुवै तो इंद्र जद्री कुण मजाल जो इंद्र देवै। थां तो महोछव कीयौ अर किथे कालर री धरती छै। [redacted] तठै आफै वरसै छै। तोउ थै कै महोतसव कीयौ छै। एकै षेत वरसै अर एकै षेत न वरसै। अर षेत वरसै तौ इंद्र सारै छै तो उ वां षेतां क्यों वरसावै नही। इंद्र कु ता रंक जु आपांनै देवै आपांनै आपणौ कर्म देसी। और उदम करती सु पासी निराट कर्मा ऊपर पिण बैस रहै तिकौ मूरष। उदम करतौ रहै पछै कर्म मांहै हुवै तिकुं पावै।

इन्द्र सोरै क्युं नही। अर थे कोह से। इतरी सामगरी पकवांन कियो छौ सु कियो किरों तो आपणौ जीवन इल गोरधन परबत छौ। तिकै सुं घास पावै छै। पांणी पीवणा नै नदी वहै छै तो सुं गोधन सोरौ छौ। सु गोवरधन परबत रौ प्रसाद छौ तो गोवरधनरी पूजा करो। पकवांन सबै ले चालो। भांत भांत रो और भोजन करौ गाडै बै सो अर गोरधन चोलौ। गोवरधन हाथ मांड मांड भोजन लेली। और गायां ब्राह्मणां नै दैवौ होम करौ। इये बात सुं ब्राह्मणा सुख पासी गोवरधन सु प्रसन्न हुसी। हुं पिंता री ज्यो हुईल। म्हारै तौ आ बात दाय आवै छै। पछै जिकुं थांहरै दाय

आवै सु करौ। इतरी बात नंदजी सुणी। बीजा
पण उपनंद आदिलेर सातै नंद छै आहुता तिकां
सगलां सुणी। नंदजी उपनंद सांमो जोयो
बोलीया साबास किसन साबास आ बात
भली कही। सारीही आपआप माहै क
हण लागा। इयै वडा वडा दैत मारीया।
आ बात पण इयैरै आसाण छै। चालौ भाई
सगला गोरधन पूजा करसां सगलां नै
आग्या दीनी सगला गाडां चढी चढी पक
वांन भांत भांतरा ले ले चालीया। सर्व गो
पांगना गाडां छ बैठी श्री कृष्णजी रीली
ला चरित्त गावती चाली केई पालाकेई च
ढीया गावता खेलता चालीया। सगलां जाय
गोरधन गाडा छोडीया। आपं आपरा पकवां
न भोजन चढाया। गोवरधन हाथ काढ़ का
ढ सैदेही कवा लैण लागो। सर्व किसन
जी आपरा रूप कर आहुतलीवी। श्री किस
नजी कहण लागा। देखो गोवरधन किसी
भांत पूजा लेवै छै। थे इन्द्र जीरी करता
सो थां कदेही इंद्र नु दीठो ही इयै भांत प्री
ति सूं पूजा लेवै तिकांरी पूजा कीजै।

सगला गोप सुखी हुवा धन्य आपणा भा
ग। गोवरधनजी आप प्रगट हुवा और
आरोगतां लीवी। इणरी कथा चौवीसवै अ
ध्याय मै छै। इति श्री भागवते महापुरा
णे दशम स्कंधे चतुर्विंशतिमो ध्याय: ॥
२४॥ आठा सुं आगै पचीसवै अध्यायमै
आ कथा हुती। इन्द्रनै षबर हुई जु म्हारो
महोत्सव मेटीयो। अर गोवरधनरो महो
त्सव कीयौ। तारां इंद्र कोप कीयौ। दे
खो नंद गोपरी बुराई। पछै आपरा मेघ
हुता बारे ही तिकै मद गलित थकां सां
कलां मांहे बांधीया हुता तिकांनु कही
गोपां बालकांरै कहे सुं ईसडौ काम
कीयो। म्हारो महोत्सव मेटीयौ। नंदरै
बेटो एक किसन कहावै छै तिकैरै कहै
सुं महोत्सव मेटीयो। उ कि जाणै उ तो
मूरष छै। अरे वालतो पिंडतां कहै सुं
कीजै। उ तो कही कनै भणीयो नही ठोठ
छै तिकैरे कहै लागा म्हारो महोत्सो मेटीयौ।
हमै हुं इयांनै राषुं नही। अै गायांरा चारणा
हार। कोई उमराव नही। अहीर छै तिकां

म्हारौ महोछौ मेटीयौ। सु इयांरी कुलचुनी याद पढै वडौ मेघ हुं तो परलैरौ करणा हारौ तिकैरी सांकलां छोडी। आगआदी वी जु वृज मे छै सु जितरौ ही सारौ ही मही जोड करौ। कोई एक ही जीवतो मतां राखौ। गोधन छै सु तो पहली मारौ कहौ नै मतां छोडौ। पर हुं पण थारै वांसै हा थी चढ सारा देवता वरण कुबेर आदिले र आऊ छुं। अर थे जायर ओ कामकरौ। म्हानै नंद गोप कोई राखणौ नही ताहरै प्लै कालरौ मेघ आवै तिकी भांत आयौ। सुंडाधार वरसण लागौ। गडा पडणला गा। वाव वाजण लागी। सगली ही दुष पावण लागी। ताहरां विचारी यौ। आपां इंद्र महोछौ मेटीयै। सुं इंद कोप कीयौ श्री किसनजीरी सरण हालो। ताहरै श्री किसनजी कनै सगला गया। महाराज मरांछां राज उबारौ। ताहरै श्री किसनजी देषै तो लोक दुख पावै। आप दीठौ इंद्र अज्ञान हुवौ इयै मदांधनै आंख्यांनै अंजन

हुं देइस। ताहरां श्री कृष्णजी गोपांनै
कह्यौ। मत डरौ जितरै दूर करु तित
धीरौ। ताहरां श्री किसनजी कह्यौ गोवर
धन पर्बत चालौ ताहरां सर्व गोवरधन
आया। श्री किसनजी चिटिरै नषऊपर
गोवरधन उठाय लीयौ। बारै को सांमै
लांबो च्यार को सांमै ऊंचौ तिको परबत
उठाय लीयौ। सारा गोप गोपांगनानी
चै रह्या खेह सता षेलता जिकै भांत वृज
मै आगे हुता उवैहीज भांत रहण लागा
सात दिन तांई मेघ प्रलै कालरी भांत
वुठौ। इंद्रनै षबर गईज उवै तौ चैन छै ताह
रां बारै ही मेघांनै विदा कीया था। ताहरां
बारै ही मेघ उवै ही भांत वुठा पछै इंद्र
हाथी चढ देवतां सहित देषण आयौ
जो गोकुल लुठतौ देषुं आर देषै तां इ
यांरै तौ अति षुस्याली छै। इसड़ी परमे
श्वर री माया ई। जु कहीनै भूष लागी
नही। षुली पका रह्या अर बीजा गो
पाल कडारा टेका दे दे उभा रह्या जु

श्री किसनजी था का हुती श्री किसनजी कहै छै मलां की यौ गोपारे कौ देरा यौ सु मलां कीयौ सुश्रौ लमालौ इंद्र दी ठौ। ताहरां मेघां नै पलौ फेरीयौ मतां व रसौ। श्रौ श्री परमेश्वर छै। इंद्र डरणा लागौ मेघ रही गया। श्री किसनजी कह्यौ मेघ रह्यौ हमै नीसरो। ताहरां सगला लोक नीसरीया। श्री किसनजी परबत उतारं नीचौ राषीयौ नंदजी मि लीया। माता जसोदाजी मिली पुत्र था कौ हुवौ छै माता जसोदाजी बांह चांपण लागी। बीजा लोक कै ई मिलीया केई पगे पड़ीया। कहीरै श्राप पगां पडीया। इयै भांत सुं षुस ल हुवा पछा व्रज मे श्राया इतरी कथा पचीसवै श्रध्याय मे हुई॥ इ ति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कं धे पंचविंशतिमोध्याय: श्रठा श्रागे छाईसवै श्रध्याय मै श्रा कथा हुती। गोप सर्व पौरी ऊपर बैठा छै। श्रर

वांतां करै छै देषौ जी श्री किसन
जी किसीडो इयौ काम कीयौ छै।
व्रह्मादिक हुंता काम न हुवै तिस
डो काम कीयौ। गोवरधन परबत
तिको इयै सात दिन ताइ चिटीरैन
ष उपर राषीयौ सु लीला मात्र सु
असुर आगै इतना मारी सु पतालि
ला मात्र सुं स्तन पांन कर आंतां
काटीयां छकोसघरै विस्तार हुइ पडी।
पछै सकट भंग कीयौ कागासुर मारीयौ। प
छै तृणवर्त्त मारीयौ। पछै मानै मुष माहै च
वदै लोक दिखाया पछै ऊषल सुं बंधाया। ज
मलार्जुन रूंष भागा पछै वत्सासुर दैत्य मारीयौ।
पछै धेनक दैत्य मारीयौ गदैरै रूप आयौ हु
तौ सु। पछै बकासुर मारीयौ प्रलंब दैत्य मारी
यौ। सु बलभद्र जी कनै मरवायौ। अघा
सुर मारीयौ। पछै काली मर्दन कीयौ। इ
सडा इसडा कांम इयै कीया। आपां अहीर
लोकांरै औ कहा। इतरीबात सगलां गोपां
कही तारां नंदजी बोलीया। पेन जांणौ

इयै जिकै थोक कीया तिकै मनै गर्गाचार्य पहली हीज कह्या हुताजु। इयैरा इतराना व छै। वासुदेव १ नारायण २ ब्रह्म ३ बीजा नाव इयैरा अनंत छै। ओ पूरण ब्रह्म छै। च्यार ४ इयैरा वर्ण छै। जिके जिके औथो क करसी तिके मनै गर्गजी पैहली कह्या था। अर कह्यौ छै ओ वसुदेवजी रो पुत्र छै। नाम मात्र थाहरो कहावै छै। इतरी वातां मनै गर्गजी आगै ही कही थी सु हुं जांणु हुं छुं। औ श्री परमेश्वर छै। म्हारै मन वि बै निकेवल आ छै। इतरी वात नंदजी कही ताहरां बीजा गोप कहण लागा। नंदजी धन्य थांहरो जन्म। थांहरा वडा भाग्य जु थांइ रै श्री किसनजी अवतार लीयौ। इयै भांत अनेक उमा दीनी॥ इति श्री भागवते महा पुराणे दशम स्कंधे षड्विंशतमोध्याय: ।२६॥ अठा आगैं सताईसवै अध्याय मै आ कथा हुसी। इंद्र डरीयौ जु मै वुरौ काम कीयौ ताहरां काम धेनुनुं आगै कर अर श्री किसनजी आगै आयौ। कह्योज महारा

न हुं वडौ अज्ञानी मैं राजनै जाणीया नही।
हुं रावलौ वैसाणीयो वै ठो छुं। मै जाणीयो
हुं ईंजन राजा छुं। कुबेर वरण और देवता
सारा ही म्हारे वस छै। हुं रावली माया
सुं भूलौ। राज षिमा करै। हुं रावलो
सेवग छुं। मै माहैं चूक पडी राज माफ
करै। इयै भांत बहुत अस्तुति कीवी।
घणौ विस्तार सुं। पछै कामधेनु अस्तु
ति कीवी। महाराज इंद्र डरीयौ ताहरां
मने वला कह्यौ। तुं श्री किसनजी कनै
जाय इंद्र नै पगै लगाय। ताहरां हुं
आई। महाराज थे तो म्हारा प्रत पाल छौ।
म्हारो कुटुंब सर्ब गोधन तिकैरी प्रति पा
लणं राज करो छौ। इयै भांत सुं इंद्र का
म धेनु घणी अस्तुति करि पगै लागा
ताहरां श्री किसनजी। इंद्रनै कह्यो तुं
सावधांन थको काम कर आज पछै सा
वधान रहै। इतरो कह्यो ताहरां इंद्र
पगै लाग विदा हो गयौ। आ कथा
सत्ताईसवै ध्याय मै छै॥ इति श्री भाग

वते महा पुराणे दशम स्कंधे सप्तविंशति
मोध्याय: ॥ २७॥ अठा सुं आगैं अठाईस
वैं अध्याय मै आ कथा हुली। बारस सां
कडी हुती हुती अर नंदजी इग्यारस की
वी हुती। सांकडी बारस जांणर नंदजी
च्यार घडी रात पाछली लेर उठीया जमना
जी सनान करण गया। ताहरां वरण रा
आदमी पकडर नंदजीनै ले गया। वरण
कने ले गया पछै वृज मै षबर गई। जु नंद
जी जमुनाजी मै डूबा। लोक सर्व त्राहि त्रा
हि करण लागा। ताहरां श्री किसनजी
जमुना जी माहै पैठा जाणीयौ कि वृह्मा इं
द्र तौ मनै जाणीयौ। हमै वरुणरी निसां
करां। इव जाण जमुना मै पैठा। आगै
वरण सांमौ आयौ। महाराज हुं राव
लै दरसणरी चाहि करतौ हुतौ। मै रावलौ
दरसण कीयौ। कृतारथ हुवौ। भांत भांत
री अस्तुति घणौ विस्तार सौ कीवी।
मोती मांणक थाल भरनजर कीया।
पगे लागो डंडौत कर हाथ जोड ऊभौ

रह्यो। पछै श्री किसनजी नंदजी नै ले
वृज मै आया सारा गोप दुष पावता
हुता सु सुषी हुवा पछै जिकै यो क
वरण श्री किसनजी सुं कीया इतरा
नंदजी देषर इचरज हुवा। गोप सारां
नुं कही। कह्यौ जी औ श्री परमेश्वर
पूरण ब्रह्म छै पुत्र नही॥ इति श्री भाग
वते महापुराणे दशमस्कंधे अष्ट
विंशतिमोध्याय:॥ २८॥ अठा सुं आ
गै गुणतीसवै ध्याय मै आ कथा हुती।
श्री किसनजी सरद पूनिमरी आधीरात
गई तालरां वंसी वर जायनै वंसी व
जाई। तालरां वृजरी गोपांगना सिगली
यां सुणी। तालरां जितरीयां सुणी तित री
सारी उठ दोडी। काई भरतार सुं क्रीडा
करती हुती। काई भरतार नुं बीडा बुना
डती हुती। काई गाय दुहावती हुती
काई चौकौ देती हुती। काई बालक
धुंघावती हुती। जिकै जिकै काम करती
हुती तिके काम भूल गई। श्री किसन

जी री वंसी बाजती सुणी। अर दोडी पगांरी जेहड हाथे पहरी। अर हाथांरी कांकण पगे पहरीआ। पहरणरा कपडा ऊंधीया। इयै भांत सांवली वर गई ता हरां श्री किसनजी देषर कह्यौ थे किसै वासतै आई। आपणां भरतांरा नुं छोडर आई बुरां कीयौ। रात पडी छै रात पडी पछै अस्त्री घर सुं बाहर नीसरै नही। जो नीसरै तो महा पापरी अधिकाररा हुवे थे परी जावो। ऐ लक्षण कुलरी अस्त्री यांरा नही। ऐ लक्षण दोषित स्त्रीयांरा छै। इस वचन श्री किसनजी कह्या। ताहरां गोपागना रोवण लागी। उतर देणौ नावै। पछै साहस कर बोलीयां। महाराज म्हे कुलरी लाज छोड अर थां कन्है आई। अर थे म्हानै आ कहो छो महाराज म्हांउपर कृपा कर सांमो जोवौ। इयै भांत घणी प्रीति सुं विल विलार कीया। ताहरां श्री किसनजी खुसी हुवा। अर जितरी गोपी हुती इतरा रूप आपरा कीया।

हाथा जोडी कर अरजमुना जीरै तीर
माहै गया। दोय दोय गोपीरै विचालै
एक एक रूप आपरौ कीयौ एकै पासै
गोपांगना हुई विचालै आप हुवा।
छ महीनां री रात कीवी। इयैं मां
त सुं अद्भुत क्रीडा कीवी। ताहरां
गोपांगना मन मांहे गुमांन कीयौ जु
धन्य मांहरा भाग म्हां सिरीषी कुण छै जि
का सुं श्री किसनजी क्रीडा करै छै।
ताहरां श्री किसनजी जांणीयो इयां ग
र्व कीयौ। ताहरां आप अंतर्ध्यान हुवा।
गोपांगना देषती ही रही। जु श्री कि
सनजी कठै गया। असो समझ यो दे
ष अर दिल गीर हुई। पछै विलाप
करण लागी॥ इति श्री भागवते
महापुराणे दशमस्कंधे एकेनत्रिंशोध्या
यः॥२९॥ अठ आगे तीसवै अध्या
य मै आ कथा हुसी। श्री किसनजी
अंतर्ध्यान हुवा। गोपांगना विलाप
करती फिरै छै। सु आं बारा पेड

छै तिकां नु पूछै छै। जथे किथे श्री किसनजी नैं दीठा म्हांनैं वतावौं का मांधा हुई धर्णी वृक्षांनुं पूछै छै। इव न जांनै ज वृक्ष किसी भांतबो लती। पछै चंपेलीरैं पेडनै पूछै छै। पछै फुलजीनै पूछै छै। औरही ठौड ठौड पूछती फिरै छै। जिके जिके श्री किसनजी चिरत कीया तिके तिके चिरत करण लागी। अर भांत भांत रा विलाप करण लागी। सु घणौ विस्तार छै। श्री किसनजी रैं घर रां रौ बोज दीठौ सु जुती हुई। पछै च्यार पग दीठा ताहरां कह्यौ एक तौ गोपी साथे छै। सु धन्य अ वैरा भाग। औरि गोप्यां नै तौ छोड दीनी अर मनै साथै लीनी। पछै श्री किसनजी नै कह्यौ हुं थाकी हुई। ताहरां श्री किसनजी कह्यौ तौ म्हांरै कांधौ चढौ ताहरां राधजी ऊंचा पग कर च ढण लागी। ताहरां श्री किसनजी अंत

ध्यांनि हुय गया राधिका जी विलाप करता लागा। हाय हाय महाराज मै गुमांन कीयो। हुं अकेली छुं मनै बीज्यां गोप्यां भेली तौ कीजै। इतरो कह्यो ताहरां फेर ठाकुरजी आय ऊभा रह्या हुं तौ अठै हीज हुं तौ। इतरौ कहर फेर अंतध्यांनि हुवा। पछै बीज्यां गोप्यां सुं राधिकाजी मिलीया ताहरां कह्यौ मनै छोड गया जितरै फेर श्री किसनजी एके गोपांगनारो रूप कर आया कह्यो दोय दोय जणी हाथा जोडी हुय चालौ। ताहरां श्री किसनजी नाम्यौ। ताहरां दोय दोय जणी हाथा जोडी करता लागी। ताहरां श्री किसनजी गोपी रौ रूप कर राधिकाजी सूं हाथा जोडी कररफिरया पछै फेर अंतध्यांन हुवा। गोपी विलाप करती फिरै छै॥ इतरी कथा तीसवे ध्याय मे छै॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे त्रिंशतमो ध्यायः। ३०॥ अथ आगे इकतीसवै

ध्याय मै आ कथा हुती। गोपांगना आ
बत्यां हुई विलाप करती फिरी। श्री
किसनजी नै बारा वचन कह्या। मां
त भांतरा विलाप कीया चलै विस्ता
र छै। पछै फिरती जमुनाजी रै तीर
ऊपर आई। इतरी कथा इकतीसवै
ध्याय मै छै। इति श्री भागवते महा
पुराणै दशमस्कंधे एक त्रिंशो ध्यायः॥
३१॥ गोपांगना विलाप करती थी
इतरै माहे श्री किसनजी हसत्त खेल
ता आय ऊभा रह्या। पीतांबर धारी
कांनै मकर कुंडल वंसी वजाव
ता आया। गोपांगना सारी हर्षित
हुई। सारां ही नुं साथे लै जमुना
जी री उत्तम वेलुका ऊपर जाय ऊभा
रह्या। गोपांगना आपरी साडी आस
णो टैरी जायगा विछाई। ऊपर श्री कृष्ण
जी बैठा गोपांगना सारी आसै पासै
बैठी छै। मधुनायक वीच श्री किसनजी
बैठा। गोपांगना काई उलंभा देण लागी।

काई मुखार विंदरो अमृत पांन करण लागी। काई कहण लागी महाराज मांणस तीन भांतरो हुवै। एक तो भली करै तै सुं भली करै। बीजो भली न करै तै सुं भली करै। तीजो भली करै तिकै सुं बुरी करै। तिकैरो महाराज कां सूं विचार। पछै श्री कृष्ण जी उत्तर दीनो। कहण लागा म्हे थांसु बुरी कीवी। थे म्हांनै माफ करौ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे द्वात्रिंशो ध्याय:॥ ३२॥ अथ आगे तेतीसवे ध्याय मे आ कथा हुती। गोपांगना सारी ही श्री किसन जी नै ओलंभा देती हुती। तहरां श्री कृष्ण जी गोपांगना नु कह्यो। बैसो जी बैसो सगलां नु आदर दे बैसांणी। मीठी वातां कीवी। पछै श्री किसन जी जाणियो। इयां कात्यायनी व्रत कीयो छै। अपर पारबती कने वर मांगीयो छै। म्हांनै नंद कुमार गोप भरतार देवौ सु

तिके सर्व कीवी छै। तालरां राजा परीक्षित शुक देवजी नै पुछीयौ। महाराज हुं कृतार्थ हुवौ। आ लीला कही पण म्हारै मन मै सांसो रह्यो श्री किसनजी तौ पुरण ब्रह्म हुवा। अर पारकी स्त्रीयां सुं रमीया। औ तौ भलो काम न कीयौ। आपर तौ पर स्त्री स्त्री हुई उवै नुं आ लीला कासुं जु गोपांगना सुं इतरौ स्नेह करैं औ कासुं सुष छै। औ तौ म्हांरै मन मै सांसौ रह्यौ तालरां श्री शुकदेवजी कही। राजा श्री कृष्ण जी पुरण ब्रह्म छै। एक आही लीला कीवी पारकी अस्त्री जो जे कोई और पुरुष हुवै तो गोपांगना मांहे अंश सो ही आ हीज। जीव जंत मांहे श्री कृष्ण जी छै। इये काम देवरौ मान मर्दन करण नुं आ लीला रची। इतरी गोपांगना सु चिह्न कीया पण काम देव सिषा मांहे वसतौ अर सिषा सु पासै षिसण पावै नही निराकार रह्यौ

अर कोई आदमी जांण लीज श्री क्रु
षणजी आ लीला कीवी म्हे पण करां
आ मन मै आण लौ तौ नरक गामी हु
वौ। ऐ वातां अवां नै ही छाजै।
औरं करै तौ विगूचै। श्री किसनजी
काली नाग मर्दन कीयौ गोवरधन
परवत ऊठायो। औरही भांत भांत
रा पूतना आदि रौ प्रवाडा कीया
कोई करलौ। इतरी वांत औ ही
करै अर इये नुही भली लागै। औ
पूरण ब्रह्म छै। एक आ ही लीला की
वी। इतरी कथा तेतीसवै अध्याय
मै छै॥ इति श्री भागवते महापुरा
णे दशमस्कंधे त्रयत्रिंशत मोध्याय:
॥ ३३॥ अठा आगै चौतीसवै अ
ध्याय मे आ कथा हुवी। श्री क्रुष्णजी
नंदजी सारा गोप गोपांगना गाडां
बैसर गोकुलजी आठे कोसे अंब
का जीरौ देहरौ हुतौ। तेथ रजा
करण नु गया। गोपांगना गाडै

अर कोई आदमी जांण लीज श्री कृ
षणजी आ लीला कीवी म्हे पण करौ
आ मन मै आण लौ तौ नरक गामी हु
सी। अै वातां अवांनै ही छाजै।
और करै तौ विगूचै। श्री किसनजी
काली नाग मर्दन कीयौ गोवरधन
परवत उठायो। औरही भांत भांत
रा पूतना आदि लै प्रवाडा कीया
कोई करसी। इतरी वांत औ ही
करै अर इये नु ही भली लागै। औ
पूरा व्रहम छै एक आ ही लीला की
वी। इतरी कथा तेतीसवै अध्याय
मै छै॥ इतिश्री भागवते महापुरा
णे दशमस्कंधे त्रयत्रिंशत्मोध्याय:
॥ ३३॥ अब आगै चौतीसवै अ
ध्याय मे आ कथा हुसी। श्री कृष्णजी
नंदजी सारा गोप गोपांगना गाडां
बैसर गोकुलजी आठे कोसे अंब
का जीरौ देहरौ हुतौ। तेथ दरजा
करण नु गया। गोपांगना गा डै

बैठी गावती बजावती जाय उठै
रजा कीवी। ब्राह्मण ने गोदान
दीना सारौं भोजन कीयौ रात गई।
ताहरां उठै ही सूता. आधी रात गई
ताहरां एक इजगर सर पनीसर नंदजीनै
ग्रास करण लागौ। आधौ गिली यैं
ताहरां नंदजी कू कीया। हो किसन हो
किसन मनै सर्प गिलै इतरौ कू कौ
सारै सुणीयौ कोइ गोप लाठीले उ
ठीयौ कोई हथीयार ले उठीयौ सगला
मार कूटर रह्या पण छोडै नही ताह रै
श्री किसनजी दोडर लातरी मारी ताह
रां नंदजी नै सर्प छोड दीनौ। अरण
पी हुं लो लिकेरी देवता हुय ऊभो रह्यौ।
पछै श्री कृष्ण जी ने नमस्कार कीयौ दं
डोत कर पगे पड़ीयौ ताहरां श्री कृष्ण
जी रछीयौ तूं कुण छै। ताहरांउ बो
लीयौ। महाराज हुं गंधर्व देवता हुतौ
विवांण बैठो म्हारी स्त्री ने साथे ली
यां फिरतो। एक दिन हुं जावतौ हुतौ।

अपर अष्टावक्र तपस्या करतौ हुतौ ति
को कठ रूप कुचील हुतौ । ताहरां म्हा
री अस्त्रीनै मैं कह्यौ एक हुं ईं प्रुलब
छुं । इयै मांल म्हारे रूपरौ मै गुमांन
कीयौ । ताहरां मनै सराप दीयौ । सु
हुं इण रूप हुवौ थौ सु म्हारे थांहरा
चरण लागा । सु कृतार्थ हुवौ । ताहरां
अ गंधर्ब साप थौ सु ठाकुरांनुं दंडा
त दे परकमा दे आपरै ठिकांणै गयौ ।
सारा गोप देष हरान रह्या । औ कांसूं
विरतांत ताहरां नंदादिक गोप बोलीया
औ कृष्ण ब्रह्म छै । इयैरी गति औ जा
णै । पछै प्रभात फेर अंबकारी रजाक
र बृज मैं आया । पछै फेर श्री कृष्ण
जी बलभद्र जी दुंनै गायां चरावता वन
मैं गया वंसी वजाई । ताहरां वंसी
गोपांगना सुणी । सु मन मै आई गीत
गावण लागी । जितरै संष चूड़ामणि जक्ष
आयो । लाठी हाथ लीयां गोपांगना सगल्यां
नुं लाठी सुं मारतौ थकौ टोलर ले चाल्यौ

थो। गोपी कुकल लागी। महाराज म्हानै लीयै जाय छै। औरे कुको श्री कृष्णजी बलभद्रजी सुणीयो ताहरां साल वृक्ष उपाडर वांसै दोडीया दैत री नै मारै। ताहरां गोप्यां नै छोड नाठो ताहरां बलभद्रजी नै अभा राखीया। अर श्री कृष्णजी पाछे दोडर दैत नु मारीयो। एक सौ टुकडा कीया। संखचूडामणी मारी यो। ताहरां माहै एक रतन नीसरीयो तिको रतन मिण थी सु श्री बलभद्रजी नु आण दीनो कहयो थे गलै मे राखो। ओ जक्ष कुबेर रो हुतो वडो सेवग हुतो। औ रतन इयै नु कुबेर दीयो हुतो सु थे राखो ताहरां बलभद्रजी राखी जोपांरा सारां री गोप्यो कासुं तमासो कीयो। इतरै वृज मै आया। और विस्तार दो ड मोड घणो छै। आ कथा चौतीसवै ध्याय में हुई॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसमस्कंधे चतुत्रिंशत मो ध्याय:।34॥ अथ आगे पैंतीसवै

अध्याय में आ कथा हुती। श्री किसन
जी वंसी वजावै छै सु गोपी आपआ
परै घरौं वषांण करै छै। काई कहै
छै देषोजी श्री किसनजी वीणा वजा
वै छै। सु गायां चरती थी सु ऊभी
रही छै। पशु जात छै तिकेही मोहित
हुई छै। मनुष्य क्युं न हुवै। काई क
है नदीरौ जल चलतौ हुतौ सु थंभ रह्यौ
छै। इयै भांत घर घर विषै गोपी
वंसीरा वषांण करै छै। भांत भांत
रा वषांण कीया तैरो विस्तार घणौ
छै। आ कथा पैती सवे अध्याय में हुई॥
इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कं
धे पंचत्रिंशतिमोध्यायः। ३५॥ अठा
सुं आगै छतीसवे अध्याय माहै आ
कथा हुती। वृषभासुर दैत्य वृषरै रूप
आयौ। कालै रूप मोटा सींग पगां
सुं धूड उछालतौ दडूकतौ जो कुलजी
आयौ इयै भांत सुं सबद की असत्रयां
री गायां रा गर्भ पडीया। देव

अध्याय मै आ कथा हुती। श्री किसन
जी वंसी वजावै छै सु गोपी आपआ
परै घरां वषांण करै छै। काई कहै
छै देषोजी श्री किसनजी वीणा वजा
वै छै। सु गायां चरती थी सु ऊभी
रही छै। पशु जात छै तिकेही मोहित
हुई छै। मनुष्य क्युं न हुवै। काई क
हे नदीरौ जल चलतौ हुतौ सु थंभ रह्यौ
छै। इसै भांत घर घर विषै गोपी
वंसीरा वषांण करै छै। भांत भांत
रा वषांण कीया तैरौ विस्तार घणौ
छै। आ कथा पैतीसवे अध्याय मै हुई॥
इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कं
धे पंचत्रिंशतिमोध्यायः। ३५॥ अठा
सुं आगै छतीसवै अध्याय माहे आ
कथा हुती। वृषभासुर दैत्य वृषरै रूप
आयौ। कालै रूप मोटा सींग पगां
सुं धूड़ उछालतौ दड़ूकतौ गोकुलजी
आयौ इसै भांत सुं सबद की असत्रियां
री गायांरा गर्भ पड़ीया। देव

तांरी ग्रस्त्रीयांरा गर्भ पडीया। इस
डो सबद हुवो। श्री कृष्णजी बल
भद्रजी ऊभा हुंता ग्रौर सभा ऊभा हुं
ता। सारां दीठो श्री किसनजी जालीयो।
ग्रो दैत्य वृषभासुर छै कंसरो मेलो
यो ग्रायो मनु मारण नु ग्रायो छै।
ताहरां बलभद्र जी नुं ऊभा राख श्री
किसनजी वृषभासुररै सामा गया
ग्रर ताली दे ग्रर बोलीया जु ग्रायो
ग्रावजुं ग्रायो छै ताहरां वृषभासुर
जांणीयां ग्रोम हरै सामो ग्रावै छै सु
कुण छै दैत्य क्रोध कर रडूकीयो
पुंछ ऊंची कर पगां सुं धूल उछाल
तो दोडीयो जिसडै सांमां ग्रायो।
तिसडै श्री कृष्णजी सींग पकडीया
एक सो धनुष पाछो ले गया दैत्य नै
फॅफेड नांषीयो। ताहरां दैत्य पडीयो।
तडफ उर फेर ऊठीयो। ताहरां फेर सी
ग पकड पटो कीयो पछै प्राण नीस
रीया। गोप तमासो देषर हैरान हुवा।

नंद जसोदा गोदान ब्राह्मणां नुं दीनौ धर्म
कराया ब्राह्मण कैने अभिषेक करीयौ। प
छै आ षबर कंस नुं हुई। ताहरां चिंता
उपजी जिसड़े कंस नुं नारद जी आय मि
लीयो। कह्यौ कंस नुं कासुं करै छै थे
दैत्य मरावै छै। सु किसै वासतै औ मरण
हारो नही। औ नंदरौ पुत्र नही औ वसुदेव
जादूरौ पुत्र छै। संकरषण कर देवकी रै ग
र्भ सै रोहिणी रै गर्भ मांहे आणीयो छै सु
औ थारो मारण हारौ छै। तुं इणे बुलाय ढो
ल न कर। अर थोरै हाथ मार। औ पुत्र
देवकी जायो ताहरां वसुदेवजी रै नंद धर्म
भाई छै। अर जसोदारै देवकी धर्म बैहन
छै। सु श्री किसनजी नै वसुदेव पौहचाय
आयौ सु औ इयै भांत मरै नहीं। अर
बात नारदजी कही। ताहरां कंस क्रोध
कीयौ उठीयौ कह्यो हुं मारीस। ताहरां
नारदजी कह्यो राजा तुं कासुं जीवे था
रो काम नहीं। उवां नुं अठै बुलायर
मार। ताहरां कंस बोलीयौ। वसुदेव दे

वकी री बेडी बोली छै जिके फेर जडौ। इयां मे सुं कूड कीयौ ओ भला नही प छै आपरा परधांन तेडीया आगया दी नी काम इये भांतरौ छै थे करो। ता हरां कुवलीया पीड हाथी रौ माहुत तेडीयौ कह्यौ हाथी नुं भला भला उं बंध दे मातौ करौ उवांनु माररणा छै। प छै मल्लां नुं तेडीया। थे आपरी विद्या मै सावधान रह्या उवांनु माररणा छै। पछै अक्रूर नै साथ ले भीतर गया। क ह्यौ काका जी हुं थांहरौ आज्ञाकारी छुं। अर थे जादु कुलरा सिंगार सिंगार छौ थां उप्रांत माहरै काई बात नही। मांहरै एक कांम छै सु थां सुं हुवै नंद रा किसन बलभद्र छै सु विघन करै छै। इलरा दैत्य मारीया। अर फेर उपद्रव करै छै सु थे विंद्रावन जावौ अर उवांनु ले आवौ^(नायर कह्यौ कासरै जग छौ)। अठै आंतौ पछै मारसां। म्हैं सारौ सरजाम मारणरौ कीयौ छै पण थे उवांनु ल्यावौ। ~~नायर~~ भावै

अध्याय मै आ कथा हुती। श्री किसन
जी वंसी वजावै छै सु गोपी आपआ
परै घरमैं वखांण करै छै। काई कहै
छै देखोजी श्री किसनजी वीणा वजा
वै छै। सु गायां चरती थी सु उभी
रही छै। पशु जात छै तिकेही मोहित
हुई छै। मनुष्य क्युं न हुवै। कोई क
हे नदीरो जल चलतो हुतो सु थंभ रह्यो
छै। इणै भांत घर घर विषै गोपी
वंसीरा वखांण करै छै। भांत भांत
रा वखांण कीया तैरो विस्तार घणो
छै। आ कथा पैंतीसवै अध्याय मै हुई॥
इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कं
धे पंचत्रिंशतिमोध्यायः। ३५॥ अठा
सुं आगै छतीसवै अध्याय माहै आ
कथा हुती। वृषभासुर दैत्य वृषरै रूप
आयो। कालो रूप मोटा सींग पगां
सुं धूड़ उछालतो दडूकतो गोकुलजी
आयो इणै भांत सुं सबद कीयो अस्त्रियां
री गायांरा गर्भ पडीया। देव

तांरी अस्त्रीयांरा गर्भ पडीया। इस
डो सबद हुवो। श्री कृष्णजी बल
भद्रजी ऊभा हुंता और सबा ऊभा हुं
ता। सारां दीठो श्री किसनजी जाणीयो।
औ दैत्य वृषभासुर छै कंसरो मेली
यो आयो मनु मारण नु आयो छै।
ताहरां बलभद्र जी नुं ऊभा राख श्री
किसनजी वृषभासुररै सामा गया
अर ताली दे अर बोलीया जु आयो
आवजुं आयो छै ताहरां वृषभासुर
जांणीयां आंम हरै सामो आवै छै सु
कुण छै दैत्य क्रोध कर रडूकीयो
पुंछ ऊंची कर पगां सुं धूल उछाल
तो दोडीयो जिलडै सांमां आयो।
तिलडै श्री कृष्णजी सींग पकडीया
एक तो धनुष पाछो ले गया दैत्य नै
फंफेड नांषीयो। ताहरां दैत्य पडीयो।
तडफड र फेर उठीयो। ताहरां फेर सीं
ग पकड पटो कीयो पछै प्राण नीस
रीया। गोप तमासो देषर हैरान हुवा।

लिव कर उवांनुं ले आवौ। सारा लोकरा श
जा आया छै थे पिला आवौ। ताहरां अ
क्रूरजी कह्यौ थां भली बात कही जि
कुं थे थे आग्या देसो तिकुं करौ री सा।
अक्रूर जांणीयां इव विनां कंस मरै नही।
भली हुई इयैनुं आ बुद्धि आई। हमे वै
गेरौ मरसी। अक्रूर श्री परमेश्वर रो भ
गत छै सुली हुवो हुं श्री कृष्णजी रो
दरसण करीस आजांणा अक्रूर त्यार
हुवौ गोकुलजी नुं मेलीयौ॥ इति श्री
भागवते महापुराणे दशमस्कंधे षट्‌त्रिं
शतिमोध्याय:॥३६॥ अठ आगे सै
तीसवें अध्याय मे आ कथा हुसी। अक्रूर
नै विदा कीयौ कंस कह्यौ थे गोकुल
जावौ। उवै दोनुं बालक नंदरा छै
सु भावै लिव कर ले आवौ। अक्रूर
विदा कर घरै आयो रात घरे रह्यौ। जाणीयौ
परभात गोकुल जाईस। मन माहे हरष की
यौ। जमै कुण पुण्य कीया छै जनमांतर विषै
ज हुं कंस पापी रो चाकर। अर मनै श्री पर-

मेश्वरजी रौ दरसण हुसी। इये भांत सुं
हरषित हुवौ रात घेरे रह्यौ अर प्रभात
सुं उठर सारां चाकरां नु आग्या की
वी। रथ आंणौ जुं वेगा गोकुल जावां
तत्काल सुं रथ जोड असवार हुय गो-
कुल चालीया। जिसा गोकुलरी सींव
मैं आया। अर रथ सुं उतरीया पाला
चालीया। डंडोत कर गोकुल जी
गया। पछै कंस जाणीयौ। अकरूर
कदाच ढील करसी। अर उवै बालक
नास जावता हुवै। तिकै वासतै केसीना
म दैत्य आपरौ वडौ परधान हुतौ ति
कै नुं कह्यौ आगे दैत्य भला भला मा
रीया। हमै थे जावौ अर उवांनै मा
रौ सु वात करौ। तारां केशी दैत्य
घोडै रौ रूप कर गोकुल आयौ। स्या
म वरण राता नेत्र काले रूप जैसौ
मेघ घनरी घटा हुवै अैसौ रूप प
गां सुं धरती पुणै पौड मारै धरती
कांपी तारां नागां जाणीयौ किसै

कारण फाडी जै नागां डरीया। पुंछ
फेरी स्त्रीयां रा गर्भ पडीया देव तां
डर माया। वडै गरव रै रूप आय
हीं सीयौ। ताहरां गोप सारा ही चौ
की बैठा हुता जालीयौ घोडौ आ
यौ ताहरां श्री किसनजी जांणीयौ।
केशी दैत्य आयौ ताहरां श्री किस
न जी उठीया। पीतांबर कटि सुं
बांधर सांमा गया। केशी दैत्य जां
णीयौ भली हुई। हुं चाहतौ थो तिको
माहरै साम्हौ आयौ। हमै मारूं
रूबौ हुतौ अर गिराज मुष मै
आयौ। आ जांण क्रोध्य कर सां
म्हो दोड़ीयौ। निजीक आयौ अर
दुलतौ वाहयौ। ताहरां श्री कृष्णजी ला
त टाली लागण दीनी नही। पछै
दैत्य रा पाछला पग पकड एक सौ धनु-
ष माथै धींतीयौ फेर परकीयौ घडी १
अचेत न हुवौ फेर उठीयौ। श्री किसन
जी सामौ दोडीयौ। मुष पसारीयौ

जिसौ आकाश ग्रास करै काल हुवौ। सा मो आयौ तोहरां श्री किसनजी आपरो हाथ दैतरै मुख मे घातीयौ जिसौ सर्प बिल मै पैसै तिसो हाथ मुख मै पैठो पछै हाथ फूलीयो सु दैत्यरो पेट गलो फाटण लागो। नवे द्वार री कीया सासनावे ताहरां ताहरां दैत तडफडीयौ। पग पछाडीया पछै दैत केशी रा प्राण छूटा। जीव सारा सुखी हुवा। औ वडौ उपद्रव टलीयौ। देवतां फूलांरी वरखा कीवी पछै नारदजी श्री किसनजी कने आया। आय र अस्तुति कीवी महाराज थां वडौ काम कीयौ। इतरा काम थां कीया सु मै दीठा। हमै पण थे काम करसो सु हुं देखीस। केसी मारीयो हमै कुण असुर मारसौ। पछै कंस मारसौ। पछै कालजवन मारसौ दरी द्रष्ट सुं मारसौ। पछै जरासंधि भीम कना मरासौ पछै शिशुपाल मारसौ युधिष्ठिर रै यज्ञ मांहे। पछै बाणासुर मारसौ पछै नरकासुर मारसौ सोलै हजार एकसौ आठ कन्या थे परणीजसौ।

इग्यारै वरस गोकुल मै रहलो। ...कूर रै
मथुरा मै रहलो। एक सो नव वर...रै मेल्ही
का मै रहलो। पछै ब्राह्मणा रा... जाणर
जुद्ध मै सुं भाग देलो। पछै जांब... बाघ ज्ञा
मारै मिण लासो। थांनै कल... जाणी।
सुणिया लासो। थांनै कलंक ...णी सु
मिणरी कथा कीह दाल लौ देख...वो घ
इंद्र सुं जुद्ध कर अर कल्प वृक्ष ...ये म्ही
सत भामारै बारणै आंगण रो पसो ओ... थांह
वी डा घणा करलो। सु हुं सर्व देखीस ...करी
भांत नारद च्यौं विस्तार सुं कही। प...त
कमा दंडोत दे हाथ जोड नारद जी क...रवै
हाराज मनै दरसण बेड बेड देता रीह...घर
इतरी कीहर नारदजी ठिकांणै गया...
छै श्री किसनजी सखा साथ ले वन...
खेल हुंता एकै हाथ एकै पग सुं बांध...
लीया पछै एक छोकरो नीचो हुवो एक...
पर चढीयो पछै एक नीरवा फेर ल्यायो इसै
भांत रमता हुता जितरै मै दूर सुं दैत छोक...
रौ रूप कर आयो ...नजा जाणीयो।

उवै अंतरजांमी छै। जाणे ली अक्रूर रै जीव मै दोल कोऊ नही कंसरौ मेल्यो यौ छै पण म्हालरौ सेवग छै। आ जाणर म्हारै सांमा आसी। अर म्हारा दोनु हाथ आ परां हाथां सुं झालर मनै घर मै लेजासी। अर हुं पगे पडीस। ताहरां मनै छातीसु लगासी। नीचौ हुवल देसी नहीं। छोरौ घ णौ कायदौ राषसी मनै कहसी थे म्हा रा काका लागौ छौ वडेरा छौ। म्हे थांह रा छोरू छां इये भांत मनै कहसी ताहरा म्हारा पाप सारा दुर हुसी। इण भांत चलण चलण हरष करतौ गोकुलरै गोरवै गयौ। श्री किसनजीरा चरणांरा षोज धर ती ऊपर दीठा तिके चरण च्यार चिन्ह सं जुगत। एक वज्र एक अंकुश एक कवल एक धजा ए च्यारुं चारण मांहे तिकौ चरण दीठौ तिके चरणरी धूलले आपरी छाती सुं घसी आंष्यां लगाई माथै चढाई। षुसी हुवौ इये भांत संकारै स मै गोकुल आया। श्री किसनजी जाणीयौ।

आक्रूर आयौ बलभद्रजीनै साथे ले
अर सांम्हां आया अकरूर जी दीठ श्री
कृष्णजी बलभद्रजी आया। अकरूर रथ
सुं उतर डंडोत करण लागा पडीया
जिणी धूली दीपडै तिण पड पड दंडोत
करण लागा। करता करता सांम्हां ग
या। श्री किसन जी बलभद्रजी उतावला
सांम्हे दोडीया। अर अक्रूर जी जाणि
यौ। हुं सांम्हां दोडुं पण साम्हां दोडीयौ
जावै नही। बोल सकै नही गद गद कं
ठ हुवौ पछै श्री किसनजी बलभद्रजी
दोडर उंचौ उठाय लीयौ छातु सुं लगायौ।
एकै पासै श्री किसन जी हुवा बीजै पा
सै श्री बलभद्र जी हुवा। दोनौ हाथ पक
ड घर मांहे ले गया। आसण विछाय
बैसाणीया। पग प्रक्षालण कीया पूजा
री सांमगरी ले पुजा करी उंच्यावै
साणीया। जिसौ वडौ आयां आदर
कीजै तिव आदर कीयौ। कहण ला
गा थे दोहरा हुवा। श्री किसन जी आ

परैन हाथ सुं अकरूरजीरै उपरी रज लू हए लागा के म्हांरा काकाजी छौ। घणी दूर सौ आया। तेरौ श्रम हुवो। और घणी आगत सागत कीवी। भोजन छ प्रकाररा कराया। अकरूरजी भोजन कर ने बैठा। श्री किसनजी अकरूरनु कहयौ कंसरी वातां कहौ कंस पापी छै। आपरी बैन बैनेईनै बंदी खाल मे रोकीया छै। उग्रसेननै बंदी खानै दीया छै वसुदेवरा छ पुत्र मारीया र लसी अनीत करै छै सु बुरा करै छै। ताहरां अकरूरजी बोलीया। बाबा कंस पापी छै। कंसनै नारदजी कहयौ नुं पुत्र मतां रा वै। इ वैरो आठवौ गर्भ तनै मारसी। कदाच औ ईज आठवौ पुत्र छै तो। अर जादव सारा थारा वैरी छै। आ वात नारदजी कही पछै इये पुत्र मराया। जादव सारां सुं वैर छै वसुदेव देवकीरै फेर सांकल जडायी। और पग थांडरा

उपाव करै छै जम्हारो मारण वालो जो कुल मे छै। अर वसुदेव देवकी नै दुष देवै छै। जादव सारां सुं वैर करै छै। अर म्हारां माईतां नै दुष म्हारै वासतै देवै छै तो धिकार म्हांनुं म्हे कुल पुत्र लिकांरै वासतै माईतांनै दुष पडै। इयै भांत श्री किसन जी घली भांत दुषी यो पकी अकरूर नै कहै छै। पछै ढोलीयो बिछाय अकरूर जी नै पौढाया। आप चरण पलोटण लागा अ करुरजी हाथ पकड बैसाली यौ। बलभद्र जी श्री किसन जी जाजम ऊपर बैठा। अकरूर ढोलीयै पोढीयो। इतरी कथा अडतीसवे अध्याय मै छै। इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे अष्टत्रिंशतमोध्याय:। ३८॥ अब आगे गुणतालीसवे अध्याय मे आ कथा हुली। अकरूर जी ढोलीयै पोढीया छै। सु श्री किसन जी अकरूर नै कह्यौ के किसे कारण आ

या छो म्हांनै कहौ। तालरां अकरूर कही। मनै कंस मेलीयौ छै कह्यौ छै जु तुं गोकुल जायर नंदजसोदा सहित किसन बलभद्र नै ले आव। कंसन नी जाणे छै जु मै दैतां नै मेलीया हुता सु लो सर्व मारीया हमै उवांनु तेडर मथुरा मांहे मारु आ जाणौ छै तिकै वासतै मनै कह्यौ जु तुं गोकुल जायर आ कीहि कंसरै जग्य छै। सु जि कौं कंसरी धरती मांहे रहै छै जिको सर्व आवौ इव कीहर अठै लेआवौ। आ कहिर मनै अठै मेली यौ छै। अर महाराज औ पापी इव बिगर मरै नही। इतरी वात अकरूर कही। ता हरां श्री कृष्णजी बलभद्रजी सों मौजो पर कह्यौ। आपांनै कंस तेडीया छै। चालौजी जासां तालरां नंदजी जसो दाजी नै तेडीया छै। ओर उपनंद आ दि सारां नुं तेडीया। कह्यौ चालोजी आपांनै कंस तेडीया छै। कंसरै जग्य

एकै रथ बैठा। रथ चडीयौ गोपांगना
सारी साथे हुई। देखोरे अकरूर तौ बुरां
करै छै। परा सारा ही गाम छै तिकांसी
ही अकल गई छै। कंस तौ सांप
रत बैरी छै तैरै घरे जावै छै। इयै
भांत पुकारती साथे चाली लाहरां
श्री कृष्ण जी रथ ऊभौ राखर गोपांग
ना सारी ही नुं कल्यौ। हुं वेगौ आ
वुं छुं थे कलपौ मतां इयै भांत करती
सारी गोपांगनां नु जुदी सीख कर
ऊभी राखी रथ बडीयौ तितरी लाई रथ
री धूजा दीठी रथरी धूड उडती तित
री तांई ऊभी रही पछै फेर पाछी कलाप
करती वृज मे आई श्री किसनजी
री लीला गावरा लागी दिलगीर
थकी रहै छै। अपर श्री किसन जी
अकरूर जी रथ चडता चडता जमना
जी आया। धयान हुवौ अकरूरजी
कहीज कहौ तौम धयान हुवौ छै। स
नान कर तर्परा करै। लाहरां श्री

किसन जी कह्यो करौ ताहरां
श्री किसन जी बलभद्र जी रथ ऊपर
बैठा। घोडों री वाग काल अक
रूर जी स्नान करण नै जमुना जी
मै सनांन जुगत सुं कीयो पछै
पाणी मे डुबी मारी। पाणी मै श्री
किसन जी बलभद्र जी दीठा। क
हण लागा बालक छै। हुं रथ
झलाय आयो थो। अर मै सुं पह
ली हीज पाणी मै आय बैठा। आजा
णर अकरूर जी फेर उठीया। देषै तौ
श्री किसन जी बलभद्र जी रथ ऊपर
बैठा छै। फेर डुबी मारी फेर पाणी
मै दीसण लागा। फेर उठीया देषै तौ
रथ ऊपर बैठा छै। विलषा सऊपनौ
फेर डुबी मारी। देषै तौ पाणी मा
है इतरा दीसण लागा। ब्रह्मा महादेव
कुबेर चरण इंद्र गंधर्व सर्ब जितरी बै
कुंठरी सामगरी दीसण लागी।
श्री किसन जी चतुर्भुज रूप मकरा।

कृत कुंडल वैजयंती माला कौस्तु
भ मणि पिताम्बर धारी । पूरण ब्रह्म
दीसण लागा सेषजी छत्र कीयौ छै।
आप आसण मार बैठा छै। मूल प्र
कृति आगै ऊभी छै। इण भांत
सूं अकरूर देखर आश्चर्य हुवौ दीठौ
पराण ब्रह्म छै। अकरूर देषर बिस्म
य हुवौ । इतरी कथा गुणताली
सवै अध्याय मै छै। इति श्री भाग
वते महापुराणे दशमस्कंधेएकोन
चत्वारिंशोध्याय: । ३९ ॥ अठ आगै
चालीसवे अध्याय मै आ कथा हुसी।
अकरूर जी श्री किसनजीरी लीला
देषर अस्तुति करण लागौ । मन
माहै उरधौज कंस पापी छै का सूं
करती सुजुगी हुवौ औ तौ पूरण
ब्रह्म छै। इणैनै कुण मारै आ जाण
अस्तुति करण लागौ । महाराज
थे कर्तारा कर्तार छौ। सृष्टि रो क
र्त्ता ब्रह्मारा मूल थे छौ ति कै पुरुष

नै म्हारो नमस्कार छै। जिकै विराट
स्वरूप कीयो। अर पांच तत्व उपा
या। अकाश तिकौ कानां विषै
राषीयो अर पृथिवी तिका नासिका
विषै राषी। तेज तिकौ नेत्रां विषै
राषीयो। जल जिकौ जिभ्या विषै
राषीयो। वायु तिकौ त्वचा विषै रा
षी यो पांच कर्मेंद्रियां। मुष हाथ
पाव पोताल गुदा। औरचार अवतार
वे अवतारीया छै। मन रो अवतार श्री
किसनजी बुधिरो अवतार प्रदुमन।
चितरो अवतार अनरुध। अहंकार
रो अवतार बलभद्रजी। ऐच्यार अव
तार छै। मनबुधि चित्त अहं चतुर्थ
अंत: करण तैका करण हार छै तै
नुं म्हारो नमस्कार छै। पछै मछ
अवतार हुय वेद ल्याया। पछै कुरम
रो अवतार कर मेरु गिर पूठ ऊपर
समुद्र मथीयो। पछै वराह अवतार हु
य पृथ्वी आणी। पछै वावन अवतार

हुय बाली (बल) नै छलीयौ। पछै
राम अवतार भरथ शत्रुघ्न लक्ष्मण अै
च्यार ४ अवतार हुवा। रांतौ रावण
मारीयौ। पछै च्यार भुजा च्यार अवतार
हुवा। इंद्र वरुण जम कुबेर। सु च्यारां
दिसांमै राखीया। पछै अग्नि नै कुतवी
व व्याई सांन अै च्यार ४ विदिशा विषै
राखीया। अर निकलंक अवतार हु
यर मलेछा नै मार सौ तिकै प्रभु नै
म्हारो नमस्कार छै। कोई महादेव
जी नै भजै छै। कोई सूरज जी
नै भजै छै। कोई गनेश जी नै
भजै छै। कोई भगवती नै भजै छै।
कोई विष्णु नै भजै छै। पण सर्व
सर्व नमस्कार यां नै पोहचै छै।
वे एक हुता तिकेरा पांच अवतार
कर पूजा लेवौ छौ सु वेही जइछौ
तिकै नै मारो नमस्कार छै। इयै भांत
अप कस्वर जी थांरो विस्तार सुअ
स्तुति कीवि। पछै कह्यौ महारा

जन हमै रावलो रूप छिपावौ। आ कथा
चालीसवै अध्याय मै छै।। इति श्री
भागवते महापुराणे दशमस्कंधे चत्वा
रिंशतमो ध्याय:।४०।। अब सुं आगै
इकतालीसवै अध्याय मै आ कथा
हुली। अकरूर जी श्री कृष्ण जीरो
रूप देखकर विस्मै हुवा। कह्यो महारा
जन औरूप छिपावौ। ताहरां श्री किसन
जी रूप छिपायो। सागी जिसडा
हुता तिसडा हुवा अकरूर जी पाणीसुं
ऊचा नीसरीया। देखै तौ श्री कृष्ण जी
बलभद्र जी रथ ऊपर बैठा छै। अक
रूर जी रथ कनै आयर ऊभा रह्या।
ताहरां श्री किसन जी बोलीया। अक
रूर जी थे चकतचित्र सादीसौ छौ
सु थां कासुं दीठो। हुं जाणु छुं थे
किंवा आकाश ऊपर दीठो का मार
मांहै दीठो एकलो थां तमासो दीठो।
तिकै वासतै थे चकित चित्र
छौ। ताहरां अक्रूर जी बोलीया

मै जिकुं दीनौ सु राज हीज छौ राज अंतर जामी छौ। इतरी कहि रथ चलायौ। पैडै आवतां गाव गांवरी स्त्री रजा ले ले सांमी आई। श्री किसन जी री रजा कीवी। पछै वासलो घडी २।३। दिन रह्यौ ताहरां जमना जी पोहता पछै किसन गंगा ऊपर आया। आगैं गुवाल गोपांग ना नंद जसोदा आतुर हुवा। जाणी यौ अजेस आया नही। सु कोई विघ हुवी। आकुल हुवा जितरै श्री किसन जी बलभद्र जी अकरूरजी रौ रथ दीठौ सारा षुसी हुवा जोपां गना साथ हुती। जिके सांमी आय निछरावल कीवी। जमना ऊपर सारां ही डेरा कीया ताहरां श्री किसन जी अक्रूर जी नै कह्यौ। थे घरे जावौ ताहरां अक्रूर जी कह्यौ महाराज हुं रावलौ दासांनदास। अंतर राजअंतर जामी हूं तौ रावले साथै जाईस।

आवौ न जाऊं महाराज मनै कृ
तार्थ करौ। मारे घरे चालौ जु म्हांरौ
जनम सफल हुवै। रावला चरणामा
रै घर मै धरौ इयै भांत अकरूर जी
घणी वीनती कीवी ताहरां श्री किस
न जी कह्यौ। अकरूर जी हेतौ थे
थाहरै घरे जावौ मनै काम करणौ।
सो प्रभाते काम करु पछै कंसनै मा
रता पछै थाहरै घरे आउं। थांने सुख देऊ
थे चिंता मत करौ थांहरा मनोरथ सि
द्धि करीस। इयै भांत श्री किसनजी क
ह्यौ। ताहरां अकरूर जी फेर वीनती
करी महाराज रावली खुसी। हुं रा
वलो छुं इयै भांत वीनती कर। अक
रूर जी रात उठै ही रह्या। पछै कंसनै
खबर हुई। बलभद्र किसन आया कि
सनी जंगा ऊपर ऊतरी या छै। अकरू
र घरे आयो। तिके अकरूर खबरकं
सनुं दीवीज उवांनै ल्यौ छुं। इतरी
कथा इकतालीसवे अध्याय मै छै॥

इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे
एक चत्वारिंशोध्याय: ।४१।। अठाअगै
बईयाली तिवे धयाय मै आ कथा हुली ।
श्री किसनी बलभद्रजी प्रभात सवेरे
दीया । सारा ही गोपां नै जगाया । कह्यो
भोजन करौ आपां सहररो तमासौ दे
षण जासौ । ताहरां सवारा ही ऊठीया देह
कृत कीयौ भोजन कीयां पछै सारा
ही साथ हुवा । सहर मै तमासौ देषण
चालीया । सहररै दरवाजै आया । द
रवाजौर तनां सुं जडत छै । पछै आगै चा
लीया सहर माहे पैठा । सहरकी सारी
असतरी देखण लागी । सहरकी शोभा
घणी वरणन करै छै । पछै चौहटै
मै आया । कंसरो धोबी कपडा धौ
यो ही लीयै सांम्हां मिलीयौ । ताहरां
श्री किसनजी कह्योज म्हांनै कपडा
दे म्हारा साथी पेहरसी । ताहरां धोबी
कोप कर गाल देण लागौ । राजा
कंसरा कपडा मांगो मारी यो जासौ

धोलरा मुं हुतो दीलै । उथां कपड़ां जो
जो । धोबी बुरा बोलीयौ । ताहरां
धोबी नै पकड़ मार नांखीयौ ।
चिटी रै नख सुं माथौ काट नांखीयौ ।
पछै सारा ही कपड़ा गोपांगना नै
बांट दिआ । सारा पैहर आगै चा
लीया । तंतुवाय दरजी रै घरै ग
या जरीरा कपड़ा मांगीया । आगै क
पड़ा ले सांमौ आयौ महाराज क
पड़ा पैहरीजै मनै कृतार्थ कीजै
यौ घणो हेत सुं कपड़ा हाजर की
या । पछै सारां जरीरा कपड़ा पैह
रीया राजी हुवा तंतुवायनुं निरला
सादे आगै चालीया बीजार मांहै
अरगजै रै कटोरे भरीयां थकां कुबज्या
सांमी मिली ताहरां कुबज्याने । श्री
कृष्ण जी कहीयो ज म्हांनै अंगराग जोइ,
ताहरां कुबज्या अरगजो आगण हाज
र कीयो । महाराज धन्य म्हारा मा
ग्य राजमै कन्है अरगजो मांगीयो ।

राजा कंसनै लेजोवंती हुती। अदुत अपरगजौ छै। परा थां मांगीयो थांनै देईस राजा रीस करसी तौ कर रहसी। पण अपरगजो थां लायक छै। राज लगावौ घणौ हेत सुं कुबज्यां अपरगजौ दीयौ ठाकुरां लगायो। पछै बीजी गोपी पण कुबी हुती घरै सारां गोपां लगायौ। खुसी हुवा छै। कुबज्या अति रूपवंत हुती ताहरां श्री किसनजी पगां सु पकड ठबी तैसु कूब काढनांबी। अर सुधी कीवी। पछै अपसरा सारीसौ रूप हुवौ पछै कुबज्यानुं कह्यौ नुं वर मांग। ताहरां कुबज्या कह्यौ महाराज कृपा करौ छौ तौ म्हारै पधारो। घणी भांत सुं दिन हुई वीनती कीवी। ताहरां श्री कृष्णजी बोलीया थारो मनोरथ पूरण करीस। पण म्हारै काम करणो छै। पछै थारै घरै आईस इतरौ कुबज्यानै

वचन दे आगै हालीया। आगै सुदामा
माली फुलांरी माला लीकां साम्हौ
मिलीयौ सु घणौ हेत सुं भेट कीवी।
सारां ही लोकां भेट सांम्हा आयर आं
ण कीवी। अहणा भांत भांतरा माला
वां सर्व लोकां आप आपरी भेट कीवी।
लोकां सारां ही कुबज्याने सावी कीवी
दीठी सारां ही वात सुणी। पछै धनु
ष १ कंसरै हुतौ तिकौ एक ठोड प
डीयौ हुतौ। जोधा रखवाला छै ठा
हुता। रूडौ दरवाजौ थौ सु श्री
कृष्ण जी उठे गया लोक सारा धनुष
रो तमासो देखता हुता। श्री कृष्ण जी
कह्यो म्हांनै तमासौ देखण देवौ। ताह
रां जोधा आगै पैलण देवै नहीं। ता
हरां श्री कृष्ण जी बलभद्र जी जोरा
वरी सु रिवाजै मै पैठा। पकड धनु
ष रा दोय टुकडा कीया पकड भांज
नांषीयो। जोधा रखवाला हुता तिकां नै
कहीनै मारीया केई नाश गया। सा

रां लोकां तमासौ दीठौ। अपच मैं रहयो
धनुष नै तीन सै जोडी जुपती ताहरां
चालतौ सुणि तिकौ धनुष श्री किसन
जी लीला मात्र भागौ। धनुष भांज तां
टंकार सबद हुवौ। धरती आकाश
सारै कंप हुवौ। देवता डरीया इसौ
सबद हुवौ। पछै कंसनै खबर हुईज
धनुष भांजीयौ ताहरां केस जोधानै
आगया दीनी मार लेवौ ताहरां कंस
रा जोधा दोडीया ताहरां श्री किसन
जी बलभद्र जी धनुषरा टुकडा हाथले
सारां जोधा नुं मारीया। सारां नुं मार
रहस तार मता आपरा गाडा छुटा हुंता
किसन गंगा ऊपर तठै गया। नंद जसो
दा बीजा गोप गोपांगना सारा आतुर
हुवा हुता मथुरा माहे विघ्न सुण डरीया
हुता। जितरै श्री किसन जी बलभद्र
जी सारै साथ सुं आया। सारां ही
सामा आपर निछरावल कीवी। इतरौ
इतरौ काम द्वादशीरै दिन कंस मारीस।

आ बात जांणे श्री किसन जी
कंसरै मोहलां दिसी मुष कर पोढीया
ज प्रभात म्हारै कंसनै मारणौ छै
पछै धनुष रा टुकडा कीया तिकी बा
त कंस सुणी जु टुकडां सुं जोध्यां जु
मारीया। पछै हसत्ता रमत्ता आपरां
गाडां गया। पछै रात पडी ताहरां
कंस मोहलां मै डु सुपना दीठा मुंडा
सुपना दीठा। कंस जाणे छै जमारो मा
थौ मुंडीयौ छै। तेल लगायौ छै गधै
चढीयो तथा भैंसै चढीयो पीछणे दि
शा कांनी जाय छै। और: जाणे छै
जुरात विषै सु तारो म्हारो कोई माथो
काट ले गयौ आपरा पग जाणै
छै जु छै नहीं इसै भांत[रा]त चिती
त कीवी। पछै प्रभात हुवौ कंस
उठीयौ। देखै तो सूर्य माहै छेद दी
से छै। एसा मुंडा सुकन दीठा। पछै
हाथी कुवलीया पीड मगायौ माहु
तनै कह्यौ हाथी नै ~~[illegible]~~ मारग मै उभौ

राखं। किसन बलभद्र जी हाथीक
ना मराय आ कोहर हाथी नै
पेडै मै ओ राखी यौ। पछै चंडूर
मल आदि दे जोडी १६। दश हजार
हाथीयांरै बल राख रता हार तिके
रंग भूमि मां है आगे उभा राखीया
मलां नु कह्यौ ज किसन बलभद्र
आ जी तिकांनै सारो देखां पाहरौ
मुजरो छै। आपरा पक्ष राजा हुंहुता ति
के सार तेड आपरै पासै बैसांणीया।
अर आप भरो जे बैठो अर किसन
जीरै पखरा लोक हुंता तिके सारा
तेड बैसाणीया। पछै वसुदेव देव
की नै तेड बैसांणीयां। ज कै म्हारा
पुसमण इयां देखतां किसन जी ब
लभद्र नै मराऊं आ मन मै आणि
बीजी सहरकी प्रस्त्री सारी ही एके
पासै तमासौ देखण बैठी छै। गोप आ
या हुंता तिके पण एकै पासै बैसांणीया।
जेथ पयांणी भीड हुती ति जायगा गोप आया

हुला तिके पण एकै वासे बैसा दीया।
जेथ घणी भीड़ हुती तिकी जायगा केरा
बैसांलीया अौर पंडित ब्राह्मण तेडीया
वेदी मांडीयज्ञ हुसी तिकै वासते अर
रंग भूमि रची छै। ढोल दमांमा वाजै छै
सांमगरी सारी तईयार हुई छै कंस
अाप बैठो छै। चतुर्दशीरो दिन छै। इन
री कथी बाईयालीसवे ध्याय मे हुई॥
इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे
द्विचत्वारिंशोध्याय:।४२॥ अब सु आगै
तयालीसवे ध्याय मे आ कथा हुती। श्रीकि
सनजी बलभद्रजी प्रभात सु उठी सारांही
देह कृत कर भोजन कर श्री कृष्णजी बल
भद्रजी नै कह्यो जु नगारा वाजे छै। कं
सरै रंग भूमि रची छै। सु आपणै वास्तै
सगला चोक करे छै। पछै सारा गोप साथ
कर श्री किसनजी बलभद्रजी मथराजी
माहे आया। आगै कंसरै दरबार रंगभू
मि मंडी छै। मल बैठे छै। लोक बहुत
जुडीया छै। मारग मांहै कवलीया पीड

हाथी ऊभो छै। पछै श्री किसनजी माहुत
नुं कह्यौ जे हाथी नै चाल जुं म्हे ही त
मासो देषण जांवां ताहरां हाथी नै माहु
त चले नही। ताहरां श्री किसन जी कह्यौ,
का तो हाथी नै चाल अर न चालीयौ
तो हाथी अर तनै दोनांही नै मारीस।
इतरी बात श्री किसन जी कही। ताहरां
माहुत हाथी नै चलायर श्री कृष्ण ऊपर
आंलीयौ। ताहरै श्री कृष्ण जी पाच वा
पेच सवार बांधीया। अर हाथांरी बांह
पहोंडी पीतांवर सु कटी बांधी। आपरा
अलंकार सुधार हाथी नै आयो की
यौ पछै आपेरे हाथ आयो कीयौ। ताह
रां हाथी नै सूंड सुं पकडीयौ फेर
छुडायौ। पछै श्री किसनजी हाथी रै प
गां नीचै पेस गया सु हाथी रै पगां
करे छै। सु श्री किसनजी काहरै हाथीरैं
आगलां पगां मै आवे छै। अर काहरै
पाछलां पगां मै आवै। इयै भांत घणी
बार हुई। ताहरां लोक वाहि वाहि करन

लागा। तारां श्री किसनजी दीठो लो
क दुष पांवै। ताहरां हाथीरी सूंढ प
कडर पचीस धनुष पाछो नांषीयो। अर
फेर रपट कीयो ताहरां घडी १ मूर्छित रह्यो
पछै फेर उठीयो। ताहरां श्री किसनजीदी
ठो मुवो नही। ताहरां सूंड पकडर गो
फण रै भाठो फिराइजै जिको भांति हाथी
फिरायो पछै पटो कीयै ताहरां हाथीरा
प्राण नीसरीया। पछै दांत १ श्री ~~किसन~~ बलभद्र
जी उपाड लीयो। दोनु जणां एक एक प्रा
हर माहुतरै कीयो माहुत मुवो। माहुत
मुवो पछै। दोनुं दांत कांधा उपर ले रंग
भूमि मै पैठा लोहीरी धारा चली। ति
कैरै नागां अपर दीसै। तिकैरो अद्भुत
सिंगार हुवो। सारी सभा बैठी हुती
सु कंसरी नजर मै तो प्रायोज म्हारो का
ल छै सु आयो अर कंसरै पक्ष राजा हु
बैठा हुता तिकांही दीठो ज वज्र रूप का
ल आयो। अर किसनजीरै पक्षरां जा
दुवांरी नजर पचीस वरसरो जौध आयो।

म्हारो मित्र आयो जिकां जिकां जिसड़ी
भावना राखी तिकांरी नजर तिसडा आय
केई लोक कहै छे औ रणी ब्रस्न छै। इयै
वडा वडा काम कीया। पूतना भारी त्रिणा
वर्त्त मारीयो वकासुर कसासुर अघासुर केशी
धेनक प्रलंब। औरही दैत इयै हीज मारी
या। दावानल पांन कीयो काली नाग
मर्दन इयै हीज कीयौ। और ही भांत भांत
रा प्रवाड़ा किया। औ रणः ब्रस्न छै इ
तरा मारीया। अर लिए कवलीया पीड हा
थी मारीयो। अर हमे कंसरी मोत आई
दीसै छे। इयै भांत लोक वातां करे छै।
अर श्री कृष्ण जी रंग भूमि ऊभा छै। पछै
चंडूर नाम मल सिरदार छै। तिकौ श्री
किसनजी नै कहै छै। अहो नंदरा पुत्र
किसन बलभद्र थे वडा जोध्धा छौ थांहरै
बलरी वात कंस राजा सु छै तिके वासतै
थांनु मल विद्या खेलण नुं तेडीया छै सु थे
म्हां सु खेलौ कंस देसरौ राजा छै। सु
तमासो देखसी। थे कंसरै देश मे रहो छो

राजा कहै सु करै राजा रौ कह्यौ कीजै
तो मोक्ष गामी हुई जै। तौ थे म्हां सुं लडौ
राजा सुख पासी। और भांत भांत रा वच
न जाब चंडूर कह्या ताहरां श्री किसनजी क
ह्यौ जम्हे गिवार लोक छां मल विद्या
नै कोई जाणौं न छां अर थे कहसो तौ
लडसां पण म्हे बालक छां। अरु थे तरुण
छो। म्हां अर थां बराबरी नही। म्हां सुं
म्हांरी दांईरा मल विढावो। आ बात पण
कंस नै कहौ। जु किसनजी कहै छै म्हांनै
पणरी बराबरां मलां सुं लडावौ। ताहरां
चडूर बोलीयौ म्हां सु मसकरी मतां क
रौ जु म्हे बालक छां। थे बालक न छौ।
थां कवलीयापीड हाथी दश हजार हाथी
यांरै बलरौ घरणहार हाथी मारीयौ। थां
इतना मारी। और ही वडा वडा कांम की
या तौ औ कांम बालकां सूं न हुवै थे म्हां
सुं लडौ चंडूर कहै छै। जो मै सु थे लडौ अर
मुष्टक म्हारै भाई छै तिकै सुं बलभद्रजी नै
लडावौ इतरी बात चंडूर कही॥ इति

श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे
त्रयश्चत्वारिंशोध्यायः ॥४३॥ अथ सुं
आगै चमालीसवै ध्याय मै आ कथा हुवी।
चंडूर मल कह्योज श्री किसन जी थे
लडौ। ताहरां श्री किसन जी आपबल
भद्र जी नै कह्योज इमै इयां नुं मारणा।
ताहरां श्री कृष्ण जी बलभद्र जी कटि पी
तांबर सुं बांधी। श्री किसन जी सुं चं
डूर जुटीयो। बलभद्र जी सुं मुष्टक
जुटीयो लोकां सारा देखतां चंडूर सौ श्री
कृष्ण जी हाथ जोडीया सु गोडां सुं गो
डा वाजै छै। माथै सुं माथो वाजे छाती
सुं छाती वाजे इसडा सबद हुवा। जांणै इंद्र
वज्र सुं पर्वतांरी पांषां काटै छै सु इयै भांत
सुं भडाका वाजै छै। इंद्रादिक देवता डरणला
गा। काहरै चंडूर नीचै आवै छै। अर श्री
कृष्ण जी ऊपर आवैं छै। अर कारै श्री
कृष्ण जी नीचै आवै छै। अर चंडूर ऊपर आ
वै छै। श्रोर काहरै श्री कृष्णं जी। चंडूर नै
धमकायर पाछौ ले जावै छै। अर कारे चडूर
धकायर श्री कृष्ण जी नै पाछा ले जाय छै।

श्री कृष्णजीरै मुष प्रस्वेदरा कण आया। ता
हरां लोक सारा तथा स्त्रीयां देषै छै ति के
सर्व त्राहि त्राहि करण लागा। अर कहै
छै कंस पापीरी सभा मांहै नाई जै तौ
भला। कंस अधर्मरो जुध करावै छै चंडूर
मुष्टिक दस हजार हाथीयांरै बलरा धारण
हार तिकां सुं इयां बालकां नुं चिढावै
छै। इसडो अनरथ करै छै। अठै अमांरह्यां
रो धर्म कोई नही। इयै भांत सारा ही त्रा
हि त्राहि करै छै। जैती मुक्की चंडूर मारै
छै। तैसी ही जु मुक्की श्री कृष्ण जी मारै
छै। बराबर रो जुध करै छै। सु चंडूर वि
चारो कितरो कितरो इक मांणस तिको श्री
किसनजी सुं जुद्ध करै। श्री कृष्ण जी रै चं
डूर नुं मारणो हुवै तौ लीला करता तुरत
मारै। पण औ तमासौ लोकानुं देषावणो
तिकै वासतै चंडूर नै सेर करै छै। इयै भां
त सुं लडतां आपरा लोक दुष पावण लागा।
अर वसुदेवजी देवकी दुष पावण लागा।
ताहरां श्री कृष्ण जी जांणीयो। मारा हि तु लोक
दुष पांवै। ताहरां चंडूर रा हाथ पकड

पटो कीयौ ताहरां मूर्छित हुवौ पडीयौ घड़ी १२ हुवो फेर ऊठीयौ श्री कृष्ण जी सांमौ दोडीयौ। दोनां हाथांरी मूकी समा हिर श्री कृष्णजीरै माथै मारी। वज्रपात हुवौ जिसडौ शब्द हुवौ पण श्री कृष्ण जीनै जांणौ मद गलत हाथीरै फूलौंरी माला लागी। फेर श्री कृष्ण जी चंडूर नुं पगां सुं पकड फिराय पटकीयौ सु चंडूररा प्राण छूटा। पाहड समां न हुय पडीयौ जिकी भांत चंडूर नुं श्री किसन जी मारीयौ। तिकी भांति हीज मुष्टक नुं श्री बलभद्र जी मारीयौ। थाप मुष्टक रै मारी। ज्यातानी सरीया मुष सुं लोहीरी धारा चली यै दोनै मारीया। ताहरां मल १ कूट नांमा श्री कृष्ण जी सांम्हौ दोडीयौ। अरमल १ सल नामा बलभद्र जी साम्हौ दोडीयौ। आवतां नै लीला मात्र एक एक चपेडे सुं मारीया। पछै च वदे जोडी मल ऊभा थाति के भाग भाग नास नासर। गो पांरै वांसै

दिछ पीया अर लोक सारा तमासगीर
नाठा कंसरै पछरा लोक धातिके सारा भा
गा। कंस एकलौ संघासण ऊपर बैठौ रह्यौ
श्री कृष्ण जीरा जिके लोक हुता तिके
घुसी हुवा। धन्य महाराज धन्य कां
विनै पापी कुण मारै। भली कीवी
वसुदेव देवकी खुसी हुवा। अर कंसदी
फौज जो काम हुवौ ताहरां कंस
बोलीयौ। नगारा मती वजावौ किस
न अर बलभद्र ने अठ सुं परा
काढोईयौ मै बैठां चुकीन कीयौ छै।
मारी संका [illegible] (ही) मांनी काईन
ही इयां नै अठै कै बुलाया था।
इयां वडौ इनाव कीयौ। नंद जसोदा
नै पकड ल्यावौ। सारां गोपांरा गा
डा लूटौ अर इयां नै परा काढौ। कं
स आ बात कही। ताहरां श्री कृष्ण
जी बलभद्र जी सुणी। ताहरांश्री कृष्णजी
कूद अर कंस बैठौ थौ तिके झरोखे बेच
ठीया ताहरां कंस पड गया समाही।

जाणीयौ म्हारै काल आयौ। आंजां
ला उवतो हुतौ जितरै श्री कृष्ण जी कंस
रै थपेडरी मारी पाघड़ी नांखीयौ पछै
फेर केसा सुं पकडर रंग भूमि मांहै
नांखीयौ कंसरी छाती उपर आय बैठा।
कंसरा प्राण नीसरीया नीसरतां र कं
स नै परमेश्वर जी रै दरसण हुवौ। संख
चक्र कउस्तभ मणि वैजयंती माला
मकरा कृत कुंडल पीतांबर धारी
च्यार भुजा माथे मुकुट इयै भांतरो
दरसण कंसनै हुवौ कंस मोक्ष गयौ।
बीजारा वण लागा। श्री किसन जी रै
क्रोध सुं कंस मुवौ मारर पछै मोक्ष
दीनौ। कंसनै मारीयां पछै कंसरा
भाई नव ९ बीजा हुता जिकां बीजां
कह्यौ आपरी राजा मारीयौ। इयै
आपां जीवीयांरौ किसौ कांम छै आं
जांण अर श्री किसनजी सामा दो.
डीया। तांहरा जिका आया तिका
एक एक थाप सुं मारीया नवे लीला
मात्र मारीया। पछै देव श्री तांइ पुहप

करषा कीवी महोत्सव कीयौ। द्रुंदवन सेन व जाई। दुखी हुवा पछै कंसरी अस्त्री दोनुं त्राहि त्राहि करण लागी। हाइ नाथ हाथ तै विना म्हांरो कुण ग ति। म्हां थांहरै प्रसाद सुं देवता सुख भोगवै नही तिकै सुख म्हां भोगवीया। हमै म्हे कठै जावां इयै भांत सुं त्राहि त्राहि करण लागी। बीजा लो क कंसरा त्राहि त्राहि करण लागा। पछै श्री कृष्ण जी बलभद्र जी माम्यां कनै आया। हाथ जोडर ऊभा रहा। अर कह्यौ शोक मतां करौ। हुवण पदारथ मिटै नही कुण कहीनै मारै जाणीयौ छै सु मरसी होज होतब मिटै न ही। हमै थे सोक मत करौ। सारां नै धी रज दे सापै बैसालीयां लोकाचार कर सारा ही सापै बैसांणीयां। पछै वसुदेवजी देवकी जी बैठा हुता तेथ गया। हाथां पगांरी सांकलां खोलीयां आपरै हाथां सुं। पछै श्री कृष्ण जी बलभद्र जी वसुदेवजी देवकी जी रै पगे लागा। दंडोत कीवी। असुपात हुवा नेत्रां सुं नीर झरन लागा। पछै श्री कृष्ण जी बलभद्र जी वसुदेव जी देव

की जी सुं छाती सुं लगायर मिलीया प
छै श्री किसनजी बोलीया धिकार छै म्हांनै
जिकांरै वासतै थांनै कंस इतरौ दुष
दीनौ। धिकार तिकां पुत्रां नै तिकांरा माइत्त
पुत्रांरै वासतै इतरौ दुष पावै। थे लहलीयौ
माहरौ। जिकांरै वास्तै थां इतरौ कलेस सह्या
इयै भांत श्री किसनजी बलभद्रजी माइतां
सुं दीनता वचन कह्या। इणरी कथा चमा
लीसवै ध्याय मै छै॥ इति श्री भागवते महा
पुराणे दशमस्कंधे चतुश्चत्वारिंशतमोध्यायः
।४४॥ अथ आगै पैतालीसवै ध्याय मै आ
कथा हुली। श्री किसनजी बलभद्र जी वसु
देव जी देवकी सुं घणा दीनतारा वचन कह्या।
पछै डंडोत कर पगे पडीया। म्हां मांहै
चूक छै थां सुं अलगा रह्या का सुं करां थे पण
कंसरा त्रास सुं म्हांनै गोकुल मांहै मेल्ह्या
या। अर म्हे पण कंसरै त्रास सुं आय संकीया
नही पण हमै थे क्षमा करो। इणरा दिन तौ
म्हां नंद जसोदा नै सुष दीयौ। हमै जां लगं
छां थांनै सुष देसां इतरा दीनतारा वचन कह्या

ताहरां वसुदेवजी देवकीजी छाती सुं ल
जाय लीया नेत्रां सूं प्रवाह छूटा। बोल
सकै नही गद गद कंठ हुवौ। पगैं प
डण देवै नही शरण ब्रह्म कर जांणीया
पुत्र कर न जांणै। ताहरां श्री किसनजी
आपरी माया फेरी। ताहरा वसुदेवजी
देवकीजी जाणीयौ औ मांहरौ पुत्र छै
गीलीया सुष पायौ पछै श्री किसनजी ब
लभद्र जी नै वसुदेवजी देवकी कह्यौ
एकर जौ नंद जसोदा कन्है जावौ। उवां
नै दिलासा देवौ उवै दुष पावता हुसी।
ताहरां श्री कृष्णजी बलभद्रजी। उवां
आगै गाडा आया। नंद जी नै कह्यौ
थे गोकुल जावौ। थां म्हांसु वडौ उप
गार कीयौ जिकैरी किसरीयेकपडो की
जै। म्हांनै थे मोटा कीया पण इतरा
दिन तांई थां कन्है रह्या हमै वसुदेव
देवकी रै मुल आगे ऊभा रहि सां। इतरी
बात कही ताहरां नंद जसोदारा नेत्रां
सुं अस्नुपात हुवा। जांणीयौ औ कासुं

हुवौ म्हांनै किसन श्रा बात कहै दिल
गीर हुवा। गोप सारा दिलगीर हु वाला
हरां श्री किसन जी माया फेरी नंद
जसोदा कह्यौ भलां जिकुं उपांरै दाय
आई जिका प्रमाण। ताहरां भली भली
वसतां गहणां वस्त्र नंद जी नै पेस की
या। गाडा भरीया राजी हु वा नंद जसोदा
किसन जी सुं बलभद्र जी सुं मिलीया। प
छै विदा कीवी संषनाद कीयौ। गोकु
ल नु गाडा चलाया। सारां गोप गो
पांगना रसीष कर चालीया। श्री
कृष्ण जी बलभद्र जी पगे लाग पछैं
मथुरा आया। पछै गर्गाचार्य ने तेडर
उगर सेणरै राज कै बैसणरौ महूर्त्त पू
छीयौ। ताहरां गर्ग जी कह्यौ। श्री कि
सन जी नै पे कर्त्तम कर्त्ता अन्यथा कर्त्तमसु
श्रोरीरी ओर करौ सौ राज टीकै बैसो।
बीजो श्रोर कुण छै लिकौ टीके बैसे
ग्रर राज करै। ताहरां श्री किसन जी
बोलीया माहरै कुल मे टीकौ नही ज

जातरा जानै सराप हुवौ। ता पछै मांह
रै कुल मै टीकैरौ अधिकार नही। टीकै
रा अधिकारी भोज वंसी जादुं छै सु टीकौ
उग्रसेण नै देसां ताहरां टीकौ उग्रसेण नै
दीनौ। उग्रसेण जी बोलीया श्री किसन
नै कहौ तो टीकौ थे लेवौ। ताहरां श्री
कृष्ण जी कह्यो टीकौ थांहरौ छै। अर
थांहरै मुहडै आगै सेवग हुं छुं। तिकुं
थांहरै काम करणौ हुवै तिकौ हुं करूं।
थे राज बैसौ ताहरां उग्रसेण जी राज
बैठा उगरसेणरा पक्षरा किसन जी रै
पक्षरा लोक कंसरी त्रास सुं भाग भाग
गया हुंता। देश छोड छोड तिकां लोकां
नै कागद लिष तेडाया सोरट: कोई म
धरा आवौ। आपरी ठिकांणां आवौ।
राजा उग्रसेण राज बैठौ छै। अर कंस
रौ समयौ समयौ हुवौ छै। सु थे सुणौ ही
ज हुसी। इयै भांतरा कागद लिष सारां नुं
तेडीया। पछै गार्ग जी आछौ दिन देष
श्री कृष्ण जी बलभद्र जी नुं जनोई दीनी।

उछोह हुवौ। उणारां बसरां हुवा ताहरां कंस मारीयौ खर चारां वरसांरा हुवा ताहरां जनोई घाती। पछै संदीपन ब्राह्मण कन्है दिन ६४ माहे चवदै विद्या पढीया। संदीपन ब्राह्मण जांणीयौ श्री बालक श्री परमेश्वर जी रौ अवतार छै जिकै चवदे दिनां माहे चवदे विद्या पढी। पछै संदीपन कह्यौ थे घरै जावौ विद्या करौ म्हे थानै पढाया छै। ताहरां श्री किसन जी कह्यौ थे म्हां कनै गुरु दक्षिणा मांगौ, ताहरां संदीपन कह्यौ हुं मांगौ कुछ नही। ताहरां फेर श्री किसन जी कह्यौ थे म्हा नै कोई काम कहौ। ताहरां गुरु पत्नि कह्यौ लकडां ले आवौ। ताहरां श्री किसन जी बलभद्र जी लकड्यां नै गया ताहरां रात पडी ऊपर मेह आय आया। सु रात वन मैं ही रह्या प्रभात हुवां सु लकड्यां माथै ले ब्राह्मण रै घरै आया। ब्राह्मण स्त्री नै रिसायौ थां बुरौ कियौ ईयां बा लकांनै लकड्यां नै ही कोई मेल्है छै ताहरां ब्राह्मणी कह्यौ इयां कह्यौ मानै कोई

काम कहो। ताहरां लकड़ां नै मेलीया। पछै श्री कृष्ण जी कह्यौ म्हां कन्हा दषण मांगौ। ताहरां ब्राह्मणी कह्यो ब्राह्मण नै। ईयां कनै आपणो बेटो मुवौ छै तिको मांगौ ताहरां पुत्र मांगीयौ ताहरां श्री कृष्णचन्द्रजी बलभद्र जी रथ बैस समुद्र गया। समुद्र मोती मांण का सुं थाल भर सांम्हा आयौ। ताहरां श्री किसनजी कह्यो थांहरी म्हां भेट मांनी। म्हारै गुरु रौ पुत्र अठै सनान करण आयो थो। सु थां लहर सुं थेलीयो छै सु देवौ। ताहरां समुद्र कह्यो इसड़ो हुं पापी नही। ब्राह्मण रै पुत्र मारू संषासुर दाणो थांहरै गुरु पुत्र नै ले गयो छै। ताहरां श्री किसनजी समुद्र मांहै कुदीया समुद्र ढुंढी यो। पछै संषासुर नै जाय पकड़र मारीयौ। पेट ढंढोलियौ गुरु पुत्र दीसै नही। ताहरां संषासुर री पासली आपरे हाथां सुं पकड़र षांची टुकड़ा १ तोड काढीयो। तिकैरौ पंचायण संष हुवौ। पछै श्री किसन जी जमपुरी गया। संष नाद कीयौ जम जाणीयो श्री परमेश्वरजी

मे ऊपर आयो। बीजो संष नाद कु
ता करै। ताहरां जम भेट लेर सांमो आयो।
ताहरां गुरु पुत्र के १ घडीमे हुतो सु जम ब्रा
ह्मणरै बेटे नुं हाथ सुं पकडर श्री किसन
जी नै दीयौ डंडोत कर ऊभो रह्यो पछै गु
रु पुत्र ले संदीपन गुरु गुरु रै घरे आय पु
त्र गुरु नै दीयौ। पछै गुरु आज्ञा ले मथु
राजी आया। नगर मांहे पैसतां संष
नाद कीयौ। तीन लोक कांपीया। अैसौ
संष बाजीयौ मथुरारा लोक वसुदेव देवकी
षुसी हुवा श्री कृष्ण जी बलभद्र जी आया।
सारा लोक चाहता हुता। घणा दिन हुवा
मिलनै आय वसुदेव देवकीरै पगे लागा।
आ कथा पैतालीसवे ध्याय मे हुई॥ इति
श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे
पंचचत्वारिंशो ध्याय:। ४५। अठा आगे
छयालीसवे ध्याय मे आ कथा हुसी।
श्री कृष्ण जी उद्धव जी नै एकांत लै
कह्यौ थे गोकुल जावौ। नंद जी
जसोदा जी नै म्हारै मुख सुं दिलासा दौ।

ओर गोपांगनायां नै दिलासा धीरज दी मै उवांनै कह्यौ धो हुं वेगो आवुं छुं लै जीवौ छै। नहीं तर उहां रै जीव कठिन थी रहै पे जावै। अर ज्ञान देर दिलासा दी। तारसां उद्धवजी रथ बैस गोकुल आया। संध्या समै ठौड ठौड सुं गोधन आवता दीठा। बालक षेलता दीठा। भांत भांत रा गायांरा बालकांरा वृंद दीठा षुसी हुवी। पछै गोकुलजी मै नंदजी रै घरै आया। नंदजी जसोदा सांम्हा आयर घर मांहै ले गया। बैसणो दीनौ चरण प्रक्षालण कीया पछै ऊंचा बैसा णिया। भोजन करायौ ढोलीयै कसीयै ऊंचा बैसारिया। कुसल प्रसन कियौ श्री किसन जी नीका छै। अर म्हां नै कदे याद करै छै। म्हौ नै अनेक उपद्रव सुं राषीया हुता। पुतना आदि जिके जिके कांम कीया अर गोवरधन पर्बत सात दिन तांई चिटीरै नष ऊपर राषीयौ अर

म्हांनै सुष सुं राषीया जिका श्री क्रष्णजी भलाछै। इतरा दिन तौ म्हांनै सुष दीया। अर हमै वसुदेव देवकीनै सुष देवै छै। इवै भांत घणा विलविलाट कर रुदन कीयौ। नंद जसोदा दोने ही बोधा सोया विकल हुवा। ताहरां उद्धव कह्यौ। सुणौ जी सुणौ जी श्री क्रष्णजी थांनै कहाडीयो छै। थे जाणौ सो जु किसन मथुरा मै छै अरा बुधि थे मतां जाणौ। हुं तो थां कन्है ही छुं थांहरे ह्रदे मै थे देषौ हुं छुं क नही। सु हुं तौ थांहरै अंतर मांहि छुं मारौ जिकौ अलगौ सुमरण करै जिकौ मनै प्यारौ लागै। अर नैडौ थकौ कहौ सु इतरौ प्यारौ नही तौ थे मनै अंतर मै हीज राषौ हुं थां कन्है ही ज छुं। इण भांत उद्धवजी नंद जसोदाजी नै कह्यौ। श्री क्रष्णजी नै पुत्र कर मतां जाणौ उतौ पूर्ण ब्रह्म छै उकेरौ पुत्र उवे रा पुत्र ब्रह्मा महादेव छै केई पोतरा लागै। उवै नै थे साक्षात परमेश्वर जांणज्यो औ दृष्ट

मतौ राषो। इयै भांत नंद जसोदा नै उद्धव जी नै आया गोपांगना सुणीया सु दीठो ज औ कोई आयो छै। सु अक्रूर ही न छै। आं जांण गोपांगना सारी ही नंद जी रै घरै आई। ताहरां उद्धव जी रौ रथ दीठो उद्धव नै दीठो ताहरां जांणीयौ औ श्री कृष्ण जी छै। उसडो ही रथ उसडो ही स्यांम छै सु कृष्ण जी छै। पछै नजीक आय देषै तौ श्री कृष्ण जी नहीं उद्धव छै अंसमै देष रही। इतरी कथा छयालीसवै ध्याय मै छै॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे षट्चत्वारिंशोध्याय:। ४६।

अठा आगै सैतालीसवै ध्याय मै आ कथा हुती। उद्धव जी सनान करण जमना जी पधारीया। ताहरां गोपांगना सारा सी ही श्री किसन जी रा समाचार पूछण नुं आडी ऊभी आय हुय रही। जितरै उद्धव जी आया हीज पछै उद्धव जी नै गोपांगना कहै छै जु जिसडो ठाकुर कालौ छै

तिसडौ सेवग ही कालौ छै। ये दोनो
ही ठग छै म्हांनै ठगीयां जिवआ
हेडी राग वजावै अर मृगां नै मारै
सु इण विधि श्री कृष्ण जी वंसी व
जाई अर म्हांनै मारीया म्हारा प्राण
ले गया हमै म्हांनै कुण चितारै।
इये भांत सुं गोपांगनाउं लंभा दे हला
गी। अर उद्धव नै भवर कीयौ। औ
कालौ भवर छै मांणस नही अर इ
यै नै भवरौ जाणर श्री कृष्णजी आ
पां कनै मेलीयो छै पगै पडे छै। अर
कहै छै भवरा म्हारै पगै मतां प
डै अलगौ हु जुं जो ठग छै इयै भां
त घणै विस्तार सुं विलविलाट की
या पछै उद्धव बोलीयौ सुणो जी जि
कु मै साध थांनै श्री किसनजी
कहाड मेल्हीयौ छै जु लुं जाय
म्हारै मुष हुंता दिलासा दे मै उवां नै
कह्यौ थौ हुं आइस ति कै वास्ते
गोपींगना जीवती रही छै॥ नही तर

गोपांगनारी जीवणौ मुसकल हु तौ सु
वे जा पर ~~कह्यौ~~ हौ॥ थे मनै अलगौ
मतां जाणौं हुं थां कन्है छुं अंतरजामी छुं
जिकुं थे जांणौ सु हुं सर्व जांण छुं थां
हरी प्रीत जाणि ताहरां थां मनै अलगौ जा
णीयौ थां हरौ ही यौ संभालवौ देषौ हुं
अंतर मोहे छुं चुना नही मनै थांलरी
प्रीत वीसरै नही॥ छै पिण हमै थे
अंतर मोहे म्हारो सुमरण करौ हुं थां
मारे छुं॥ थां कन्है छुं इतरी कही पछै
उद्धव कही गोपांगना थे जिकै पर
मेश्वर सुं इतरी प्रीत राषौ छौ सु
सभागणि छै॥ थांहरी कितरी येक
तारीफ करौ पिण थे श्री कृष्णजी
नै पूरण ब्रह्म कर जाणीं ज्यो॥ और
वात काई मतां जांण ज्यौ थांनै मो
क्ष देसी। इतरी वात उद्धव कही ताह
रां गोपांगना बोली म्हांनै मोक्ष न
चाहीजै॥ म्हे उवांरा चरणारविंद चाहां
छां॥ जितरै दूसरी बोली म्हांनै कदे चि

जिसड़ौ सेवग ही कालौ छै। ये दोनो ही ठग छै म्हांनै ठगीयां जिव आ हेडी राग वजावै अर मृगां नै मारै सु इण विधि श्री कृष्ण जी वंसी व जाई अर म्हांनै मारीया म्हारा प्राण ले गया हमै म्हांनै कुण चितारै। इयै भांत सुं जोपींगनाउ लंभा दे हला गी। अर उद्धव नै भवर कीयौ। औ कालौ भवर छै मांणसनही अर इ यै नै भवरौ जाणर श्री कृष्ण जी आ पां कनै मेलीयौ छै पगै पडै छै। अर कहै छै भवरा म्हारै पगै मतां प डै अलगौ हु जुं लो ठग छै इयै भां त घणै विस्तार सुं विल विलाट की या पछै उद्धव बोलीयौ सुणौ जी जि कु मै साध थांनै श्री किसन जी कहाड मेल्हीयौ छै जु तुं जाय म्हारै मुष हुं ला दिलासा दे मै उवांनै कह्यौ थौ हुं आइस तिकै वासते जोपींगना जीवती रही छै॥नहीतर

तारै छै ॥ और बोली कैनै चितारै। उ
वांरैं नघराजीरी अस्त्रियां चतुरांगना
बलभ छै। आपां गवार लोक छां आ
पानै कुण याद करै ॥ पछै उद्धव जी
कही ॥ उतौ केहवै हुं गोपागना रौ
दास छुं पण अंतरजामी छै ये मांण
स कर मतां जाणौ श्री कृष्ण जी
सरण वस छै ॥ के आपरो अंतर
संभाल देषौ थांहरै घटमै हीज छै ॥
इतरी वात उद्धव कही ताहरां गोपांग
ना जाणी यो औ तौ उद्धव छै भवरौ
नही ॥ इतरी जाण सारी ही गोपां
गना उद्धवरै पगै लागी कुसल पू
छी यौ कहयो जी श्री किसनजी भला
छै ॥ भली हुई हमे म्होराजी छां ॥ और
कन्या परणी जौ सुष करौ म्है लौगि
वार लोक छां इये भांत गोपांगना घ
णा झगडा विलविलाट उद्धव आगै की
या पछै उद्धवरी पूजा कीवी वडा
करे जिकी भांत सुं पूजा कीवी उद्धव

जी छ मास ताईं गोकुल मैं रह्यो अर इल
डी प्रीत गोपांगना सुं लागी पछै नं
दजी जसोदाजी सुं सीष कीवी। गो
पांगनां सुं सीष कीवी॥ सारी ही फूलां
री माला वां भेट ले ले आई॥ यथा
शक्ति भेट कीवी॥ पछै गोपांगनानंदादि
क सगलं राजा उग्रसेन नु भेट मे
ली॥ उद्धव सीष कर मथुरा जी आयो
और विस्तार घणौ छै॥ पछै उद्धव
श्री कृष्णजी नै वातां कही॥ महाराज
धन्य गोपांगना जिकां री चित्त राज
विषै उ कांरै प्रेमरी कितरी येक वातां
कहुं॥ उकांरै चित्त राज मांहै छै इन
री कही पछै वसुदेव देवकी नै कही॥
उकांरी प्रीतरी वात कितरी येक क
हुं॥ पछै राजा उग्रसेन जी नै भेटदी
नी हुंती सु दीन सु पारस कीवी॥
श्री कृष्ण सैला ली सबै अध्या मै छै॥
॥इति श्री भागवते महापुराणे दश
म स्कंधे सप्तचत्वारिंशो ध्याय:॥ ॥४७॥

अठ आगै अडताली सवै ध्याय मै आ
कथा हुली ॥ श्री किसनजी उद्धव नै
कहयौज म्हां कुबज्यां सूं वचन छै ॥
कंसरै कांम कीयां पछै हुं थां हरै
घरें आईस सु उवैरै जांवतां ताहरो
उद्धनै साथ ले कुबज्यारै घरै गया ॥
कुबज्या सांमी आई चरण प्रक्षालन कर
पूजा कर ढोली पै पधराया ॥ उद्धवरी
पण पूजा उवैंहिभांत कीनी ॥ पछै कु
बज्या भांत भांतरा अलंकार सुगंध ल
गाया ॥ अर किसनजी साथ हुवा ॥
एकांत हुवा ॥ पछै संसाररा सुष अ
स्त्री पुरुषरा सुष हुवै तिकै सर्व की
या ॥ श्री किसनजी षुसी हुवा ॥ कु
बज्या कह्यौ राज वरदीनौ तो म्हांरै
घरै रहौ इयै भांतरौ वर मांगीयौ प
छै उद्धव नै साथ ले घरे आया पछै
बलभद्रजी उद्धवनै साथले घरे आया
पछै बलभद्रजी उद्धवजी नै साथ ले ॥
श्री किसनजी अकरूर रै घरै आया

कहण लागा मै अकरूर सूं बोल छै ॥ कंस मारीयां पछै थांरै घरे आ। ईस अकरूररै घरे गया॥ अकरूर सांमौ आयौ रजा कीवी वडां आ। यां रजा कीजै जिकी भांत कीवी॥ श्री कृष्णजी बलभद्रजी नै नमस्कार कीयौ ऊंचा वैसांणीया॥ पछै श्री कृष्णजी बलभद्रजी उद्धवजी तीने अकरूरजीरै पगै लागा कहण लागा के मांहरे काका लागौ छौ॥ पछै अकरूरनै श्री कृष्णजी कह्यौ थां सुं म्हारै काम छै थां सारी बौ म्हारै हितू कोई नही तिकै वासतै थौं विना बीजै कैनुं कहुं पे म्हारै कांम जावौ हस्तनापुर जावौ॥ कुंता म्हांरी बूवा छै॥ अर कुंतीरा पांच पुत्र छै तिकांरौ पिता सांत हुवौ छै॥ उवै दिलगीर छै सु के जावौ म्हारै मुख सुं थे दिलासा देवौ॥ अर कहौ हुं अठै छुं तौही थांहरौ राज थांनै देराईस॥

अर थांहरा चरण कारज करीस थां
उपरांत म्हारै काई वात न छै चेका
ई चिन्ता मत करौ इणां भांत पेजाय
कहयो पछै अकरूर सुं विदा कर घरे
आया॥ अकरूर नै हस्तीनापुर री
विदा दीनी॥ इतरी कथा अडतालीस
वै धयामै छै॥ ॥ इति श्री भागवते महा
पुराणे दशम स्कंधे अष्टचत्वारिंशो॥
ध्यायः॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ॥ अठे अठा
नै गुणचासवै ध्याय मै आ कथा हु
ती॥ अकरूर जी हस्तानापुर आया॥
आगै राजा धृतराष्ट्र सभा माहे बै
ठो छै॥ गंधारी आंख्यां आडौ पाटौ
बांधीयां बैठी छै॥ संजय कथा कहैछै॥
दुर्योधन करण दुसासन॥ सुनक॥ द्रो
णाचार्य कृपाचार्य अश्वथामां॥ इतरा
सारा ही सभा मै बैठा छै॥ पांचै पुत्र
कुंतीरा पण बैठा छै॥ और पिण लोक
बैठा छै॥ संजय कथा वाचै छै॥ इतरै
मै अकरूरजी पधारीया॥ अकरूरसुं

मिलिया कुसल प्रसन कीयौ।। श्री
किसनजीरा वसदेवजीरा देवकीजी
रा कुसल र छीया।। और पिता स
माचार सारा र छीया।। कुंती कनै
आया मिलाया कुशल प्रसन्न कीयौ
सारा समाचार र छीया।। पछै अ
करूरजी किनरा येक दिन हस्तनापुर
रह्या।। श्री किसनजी कह्यो हुंतो
के उठै कोईक दिन रह्या चास मास ने
ज्यौ रह्यो विना खबर पडसी नहीं।।
तिकै वासतै अकरूरजी रह्या द्रोणाचार्य धृ
तराष्ट्ररा पुत्र १०० अर पुत्र ५ कुंतीरा ति
कानै एकठा बैसाए अस्त्र शास्त्र विद्या सारी
पढावै आंबलीरै रूंख ऊपर मत्स मांडै
अर आंबली नीचै शर वाहै मछ वेध करै॥
धृतराष्ट्ररा बेटा दुर्योधनादि १०० तिके चो
ट करै सु आंबलीरां पांन डाली छेद
करता करता शर जाय लागै तौ ला
गै न लागै तौ न लागै।। अर अर्जुन
चोट करै तिको शर आंबलीरा पांन

याल ऊपर मध्य वेध करै॥ इसडी चोट सघरी करै तिका दुर्योधन नै सुहावै न ही॥ और पिण भीम जोरावर तिको दु र्योधन सुं रमै सु दुर्योधन नै सुहावै नही॥ और पिण भीम जोरावर तिको दुर्जोधन सुं रमतो दुर्योधनरी नस पकड बैसै॥ ताहरां दुर्जोधन धृतराष्ट्र कनै जाय पुकारै॥ कहै कातो म्हांनै गाव मै राषो क पांडवां नै गॉंव मै राषो॥ पछै धृत राष्ट्र पण रीस करै ज ओ भला नही॥ आजांपर पांडवारै मारणरो विचार करै॥ पछै एक दिन भीवनै विसरौ पालो दीनो॥ भीव मूर्छित हुवो चे त गई॥ प्राण रह्या बीजी सुध भूल गई॥ ताहरां धृतराष्ट्ररा बैटां एक ठा हुय झोली मांहे घातर नदी माहे नां- ष आया॥ पछै नदीरै जल मांहै नाग हुता तिकां भीवनै चके चाच्यौ॥ तेसो विष उतर गयो भीव सावचेत हुवो॥ नागां उलषीयो ओ तो भीवराजा

पांडुरौ पुत्र छै ॥ ताहरां नागां भीव
नै आपरी कन्या परणाई ॥ रायजी
देह हस्तनापुर पौहचतौ भीयौ अ-
र आगै दुर्योधन तौ खुसी हुवौ हु
तौज भीव मुवौ जितरै मैं भीव ह-
लांरौ लेर दिन १० पछै आय ऊभौ रह्यौ॥
दीठौ ताहरां दुर्योधन दिलगीर हुवौ
सु ऐ वृतांत अकरूर दीठा ॥ पछै एक
दिन कुंती अक्रूर कनै सारी बात
कही ॥ म्हारै श्री किसन सारीखौ भ
तीजौ छै अवर वसुदेव सारीखौ भा
ई छै ॥ थे पिण म्हारा भाई छौ ॥ अर
हुं इतरौ दुख पाऊं छुं सु कदे म्हा
नै खरदही करै छै क नहीं ॥ और म्हां
रै भर्तार तौ सांत हुवौ अरु हुं म्हा
रां पुत्रां नुं पालुं छी सु म्हारां पुत्रां नुं
दुर्जोधन घात राखै मारी चाहै छै
सु थे पण देखौ छौ म्हांनै तौ वडौ
कष्ट छै ॥ इयै भांत दीनतारा वचन
कह्या अर कह्यौ विदुर नै रहै छै ॥

ताहरै विदुर कह्यौ साच छै जी जि-
कुं कुंती कहै छै सु सत्य छै जी ॥ पछै
ऊंचै सुर सुं कुंती रोई ॥ पछै अक्रूर
पण ऊंचौ सुर सुं रोयौ ॥ पछै कुंती
नै दिलासा दीनी ॥ बाई तुं दिलगीर म
तां हुवै थारै श्री किसनजी सा सहाय
हुवा छै रुं मतां डरै थारा कारज
सर्व करसी ॥ अर थारै पुत्र छै ति
के पण समरथ छै ॥ युधिष्ठिर धर्मरौ
अवतार छै ॥ अर भीव छै सु पवन
रौ अवतार छै ॥ अर्जुन इंद्ररौ अव
तार छै ॥ नकुल सहदेव अश्वनीकुमा
ररा अवतार छै ॥ इयां सारीषो कुण
छै ॥ यै हैण बालक छै मोटा हुवा
ताहरां अकै रहणरा छै नही ॥ इये
भांत कुंतिनै दिलास दे अर अक्रूर
जी धृतराष्ट्र कनै गया ॥ अर धृ
तराष्ट्रनै कह्यौ पे वडा राजा छौ
धर्मरा जाणण हार छौ ॥ अर था
रा भतीजा यां कनै आया छै ॥

ताहरै विदुर कह्यौ साच छै जी जि-
कुं कुंती कहै छै सु सत्य छै जी॥ पछै
ऊंचै सुर सुं कुंती रोई॥ पछै अकरूर
पण ऊंचौ सुर सुं रोयौ॥ पछै कुंती
नै दिलासा दीनी॥ बाई तुं दिलगीर म
तां हुवै थारै श्री किसनजी सा सहाय
हुवा छै तूं मतां डरै थारा कारज
सर्व करसी॥ अर थारै पुत्र छै ति
के पण समरथ छै॥ युधिष्ठिर धर्मरौ
अवतार छै॥ अर भीव छै सु पवन
री अवतार छै॥ अर्जुन इंद्ररौ अव
तार छै॥ नकुल सहदेव अश्वनी कुमा
ररा अवतार छै॥ इयां सारीषो कुण
छै॥ यै हैणौ बालक छै मोटा हुवा
ताहरां अठै रहणरा छै नही॥ इये
भांत कुंतिनै दिलासदे अर अकरूर
जी धृतराष्ट्र कनै गया॥ अर धृ
तराष्ट्र नै कह्यौ थे वडा राजा छौ
धर्मरा जाणणहार छौ॥ अर था
रा भतीजा थां कनै आया छै॥

थे थांरा पुत्रां अर भतीजां वीचअं
तर मतां राषो इथांरो पिता सांत
हुवो छै ॥ भतीजा नै पुत्रां सारीषा
जाणीजे कोई भेद राषो तो नरकरो
अधिकरी हुवै ॥ तो थे ईथां सुं बीजी
बुद्धि मतां राषो ॥ अर थांनै राज पांडु
रो दीयो छै ॥ थारा पुत्र अनीत करै छै ॥
तुं पाल ॥ ताहरां धृतराष्ट्र कह्यो ॥
अकरूरजी थाहरी बांणी म्हानै अमृतस
मान लागे छै ॥ अर हुं धर्म पापरी
षबर जांणुं छुं पिण कासुं करुं संसार मै
पुत्र उपरांत वात काई नही ॥ अर हुं ई
घणी ही सारीषी द्रिष्ट राषुं ॥ पण कोई
पुरुष जादवांरै कुल मै औतरीयो छै ॥
धरतीरे भार उतारण नुं अवतार ली
यो छै तिको पुरुष करावै छै सु करुं
छुं मारो वस कोई नही ॥ इतरी बात
धृतराष्ट्र कही ॥ ताहरां अकरूर हस्त
ना पुर सुं विदा कर मथुराजी आया ॥
श्री किसनजी सुं तुं सर्ब वातां कही ॥

इतरी कथा गुणचासवै अध्याय मै छै ॥
॥ इति भागवते महापुराणे दशमस्कंधे
एकोनपंचाशतमोध्याय ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ समाप्तो-
यं पूर्वार्द्ध ॥ ॥ सुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ ॥ छ ॥ बू ॥ ॥
॥ श्री गणेशायनमः ॥ ॥ अथ दशमभाषा
उत्तरार्द्ध लिष्यते ॥ आगासुं पचासवै
अध्याय मै च्या कथा हुती ॥ कंसरी
असतरी दोनुं आपरै पिता जरासंध
कनै पुकारु गई ॥ माहरौ भरतार कंस
जिकौ किसन मारीयौ ॥ ताहरां ज-
रासंध कौपीयौ ॥ म्हारौ जवाई
मारै सु कुण मांणस ॥ हुं साराजा-
दव मारीस ॥ जादवांरौ कोई बीज
राषुं नही ॥ इयै भांत सु कोपी
यौ ॥ कटक २३ तेईस बोहणी एकठी
कीवी ॥ आपर मथुरा घेर श्री किसन
जी नै षबर हुई ॥ ताहरां साराजा
दवां नै कह्यौ वे तईयारी करौ
सातिकाजादु आदिल सारा तयार

हुय कटक एकठा कीया॥ जुद्ध री तया
री कीवी॥ जितरै रथ दोय आ
काश मारग सुं उतरीया॥ देवतां रा
हथयारां सुं भरीया उतरीया॥ तांह
रां मैं एक श्री किसन जी नै॥ अर
एक श्री बलभद्र जी नै॥ ताह रां
श्री किसन जी बोलीयो॥ बलभद्र
जी थे रथ बैसो॥ अठै हथयार
आपणै आया छै ताहरां एकै श्री कि
सन जी बैठा एकै श्री बलभद्र जी
बैठा॥ जरासंधरै सांमां गया जरा
संध श्री किसन जी नै देख अर
बोलीयो अहो अधम पुरुष॥
मांमैरा मरणहार तुं पापी छै
तुं किसो मांणसां मैं मांणस छै॥
कठै ही जावौ कठै ही उपनौ॥ ति
कौ कांसु गुमांन करै हुं तैसुं वि
ढुं नही॥ तुं टाबर तैसुं बढतां
मनै लाज आवै अर बलभद्र सुं
वले विढील॥ बलभद्र रो रोम रोम

छेद करि स्वर्ग पुहचाईस ॥ अर बलभद्र
जी थांमै कोई पराक्रम छै तौ मनै
प्रहार कर ॥ इतरी वात जरासिंध कही
ताहरां श्री किसनजी बोलीया ॥ अहो
अधर्मी इसडा वचन मत कैहै ॥ क्षत्री
इसडा वचन कोठै नही ॥ जे वचन
नीच हुवे तिकै कोटै जुं तौ मैसुं विढीयौ
तो छै ही नही ॥ अर ता पीहली कैहै छै
मनै तैसुं विढंतांनैं लाज आवे ॥ तौ
एकर सौंमैसुं विढं तांनै लाज आवे ॥
एकर सौंमैसुं विढं पछै गुमांन षायर इतरी
कहे ॥ पछै जुद्ध आरंभ हुवौ ॥ जरासंध
रा शर छुटा सु घणा छुटा मेघ वरसै तिण
सर वहै छै ॥ घोडांरां पगांसुं रजी उडै
तिकै सुं श्री किसनजी बलभद्रजी रा
रथ दीसै नही ॥ ताहरां मथराजी रा लो
क सारा चाहि चाहि करण लागा ॥
रथ दीसै नही लोक डरण लागा ॥ श्री
किसनजी रौ साथ सारो सीदावण
लागौ ॥ ताहरै श्री किसनजी सारंग

धनुष संबाल्यो॥ तिकै सुं एक सरचला
वे असहजार लाष हुयर लागै ताहरां ज
रासंधरो कटक सारो मरण लागो॥
सारे लसकर दोलो अंबाड फिरै तिरडोस
र अषै बुगीरो फिरै॥ बलभद्र जी हल
सुं जोध्यां नुं षांचै॥ अर मुसल सुं
मारै॥ जरासंधरो कटक सारो मा
रीयो॥ रुधरकी नदी चली जोधारा ह
ष जिकै मछल्यां हुई॥ माथा तिका
काछबा बाला मुवरीया हुवा॥ त
रगल धनुष हुवा। इयै भांत सारौ क
टक सोभण लागो सारो सैलस कर
मारीयो॥ हाथ मारे नगवीवी हुता सु
मिण हुवा। इयै भांत सुं कटक सोभण
लागो। एक जरासंध रथ विषै बै
ठो रह्यो ताहरां बलभद्र जी जरासंधनु
मारण लागा॥ ताहरं श्री किसनजी
कह्यो मतां मारो॥ ओ मारीयो तो
इलरै जसरती अर ओ पापी जीवतो
रहसी तो बलै कदे कलो आसी अरम्हारै

धरतीरौ भार उतारणौ छै दुष्ट लोक इया
रै छै तिकै सरब मारणा छै॥ तिकै वास्तै
जरासंध नुं मतां मारौ॥ ताहरां जरासंध
नुं पकडर रथ सुं नीचौ नाषीयौ॥ अरुनी
बांह बांधीयौ ताहरां जरासंध लजत हु
वौ जांणीयां धिकार म्हारै जीवयै नुं॥
पकडर छोडीयै सुं मुवौ भलौ पछै जरा
सिंध नुं छोड दीनौ॥ श्री किसनजी
बलभद्र जी सारै साथ सुं रथ बैसह
सता रमता षेलता मथुरा जी आया॥
देवतां पोहप वर्षा कीवी॥ पछै जरा
संध कह्यौ हुं तपस्या करीस॥ हथीया
र बांधु नही॥ पछै जिकै जरासंधरा
लोक हुता तिकां समुझायौ॥ आपरौ
दीव देषीजै फेर पी छौ तौ कर क
चाणो ही करसां॥ ताहरां जरासंध फेर
तियार हुवौ॥ तेईस षोहणी वले भेली
कर उवैहीज भांत लडाई कीवी॥
इयै भांत सतरा फेरा तेईस तेईस षोहणी
ले ले आयौ॥ अर जिकी यांत पहल

डै फेरै कटक मार जरासंघ नै बांध
बांध बोडा छोड दीनो तिकी भांत स
तरै फेरा मार मार बांध बांध छोड
दीनौ ।। जादवां घणौं ही कह्यौ वैसी
नै मतां छोडौ पण श्री किसनजी छोड
छोड दीनौ ।। पछै अठारवे फेरे जरासंघ
तयार हुय तेईस बोहण आपरी ल्यायौ।।
अर अठारै कालजवनमलेच्छी ल्यायौ।।
ताहरां श्री कृष्ण जी घडे १ माहै नाग १ कालं
दर घालर ऐट मेल दीनौ ताहरां कालज
वन घडे माहै कीडा घातीया ।।ताहरां ना
गनै कीडा खाय गया पछै घडौ मुंदर
पाछो मेलीयौ ।।ताहरां श्री किसन जी
जादवां नै कह्यौ इयां माहे अकल घणी।।
इयां सुं लडाई पोहचां नहीं आपां जरासं
घ मै कीवी थी जिका आपां मै काल
जवन करती का नासौ ।। ताहरां विश्वक
रमानै आग्या दीनी ।। पे अडतालीसां को
सां माहै दुवारका नगरीरा चौ चार नकार
रा घर-द्वार वणारा करौ समुद्र नै आग्या

दीनी तुं अडतालीस कोस आद्यौ बिस॥
ताहरौ समुद्र पाछौ खिसीयौ विश्वकर्मा
स्वर्ग मई घर कीया॥ अडतालीसां
कोसां मांहे दुवारका नगरी रची॥ जि
सा जिसा लायक माणस हुता॥ तिसा
तिसा घर रचीया॥ अर काल जवन
जरासंध आय मथरा घेरी छै प्रभात सुं
वसां ताहरां श्री किसनजी इसी माया
कीनी जरा जरा सारा लोक सुता था
सु प्रभात दुवारकाजी माहे उठीया वांसै
श्री किसन जी बलभद्र जी रह्या॥ इतरी
कथा पचासवै ध्याय मै छै॥ इतिश्री
भागवते महापुराणे दशमस्कंधे पंचाश
तमोध्याय:॥ ५०॥ ॥ अठ आगै इकांवन
मै अध्याय मे आ कथा हुली॥ काल जवन
जरासंध आंगे मथुरा घेरी। ताहरां श्री कृ
ष्णजी बलभद्रजी हथीयार छोड कमर बांध
पालाहीज मथराजी मांहि सुं नीसरीया॥
नीसरतां नुं काल जवन जरासंध दीठा॥
ताहरां जातीयौज नारदजी बतायौ हुतौ
ज किसन इसडे आकारे छै सु माथे मुकुट

मकराकृत कुंडल कौस्तुभमणि वैजयंती
माला पीतांबर धारी ॥ स्याम मूरत इस डे
आकारे वतायौ थौ सु ओहीज छै ॥ ताह
रां काल जवन वां वांसे दोडीयो श्री किस
नजी नै कह्यौ भला जादवांने लजाया
क्षत्री पणौ भलो राखीयौ पिण हमै मा
रुं छुं ॥ ऐसे वचन कहतो वांसै दोडीयौ
किसनजी नै हथयार विना पाला जावंता
दीठा ॥ ताहरां कह्यौ हुं पिण पालोजा
इस मनै चढीयौ जांवणौ धर्म नही ॥ ता
हरां काल जवन पण वांसै पालौदो
डीयौ किसन केथ जावै कालजवन
जांणौ हेतौ पकडां छां ॥ इयै भांत दोड
तां दोडतां राजा मुचुकंदरी गुफा गया ॥
सु पाहडां माहे गुफा थी तिकै मै
मुचकंद सूतो पडीयौ थौ ॥ सु श्री किसन
जी आप रौ पीतांबर उढा यदल आप
आगली गुफा मे हे छिपीया ॥ वां सै
काल जवन जाणीयौ किसन छै ॥ तां
हरो लातरी मुचकंदरै मारी ॥ कह्यौ मै
सारीखो वैरी वांसै अर तनै नीद आइ ॥

तुं वडो जोधो मै वांसी थकौ सोय रह्यौ इतरी कही लात वाली ॥ अर मुचकं द रै नेत्रां जागीयो देखै तौ कालौ दैत्य ऊभौ छै ॥ मुचकंद रै नेत्रां मांहे अग्नि ज्वाला नीसरी तै सुं काल जवन बलि भस्म हुवौ ॥ पछै राजा परीक्षत प्रश्न कीयो ॥ महाराज औ मुचकंद कुंण हु तौ जिकैरी द्रष्ट सुं कालजवन भस्म हुवौ ॥ ताहरां श्री शुकदेवजी कह्यो ॥ मुचकुंद राजा मांनधातारो पुत्र अरु जोवन राजारो पोतरौ हुवौ चकवै राजा हुवौ ॥ ताहरां एक समयै दैत्य जोरावर हुवा सु देवतानै जीता सु स्वर्ग छुडायो देवता प्रथ्वी विषै मानवी फिरै तिकी भांत फिरण लागा ॥ ताहरां देवता एकठा हुयर मुचकंद कनै आया ॥ वृहस्पति कही महाराज तुं वडो राजा मांनधातारौ तुम्हांनै दैतां छोडाई तुं मांहरी सहाय कर ॥ तांहरां मुचकंद कही भलां ॥ ताहरां राजा मुचकंद देवतांरी सहाय

गयौ दैत्य मारीया ॥ देवतां नै राजधा
नी दीवी ॥ देवत्ता खुसी हुवा राजा नै
म्हांसुं वडो उपगार कीयौ थांरी
कितरीयेक सराह करां हमै तुं म्हांक
नां वर मांग ॥ ताहरां मुचकंद कह्यौ हुं
थांकौ हुवौ छुं ॥ आग्या देवौ तौ जाय नि
द्रा करु ताहरां देवतां कह्यौ ॥ थे निद्रा
करौ थांनै सुतां नै जगासी तिकौ भ
स्म हुसी ॥ अर थांनुं श्री परमेश्वर जी
रौ दर्शन हुसी ॥ पछै मुचकंद आप रै
देस आयौ ॥ देखै तो नगर सूनौ पडी
यौ छै सारौ ॥ ताहरां मुचकंद विचारी
हमै हुं तपस्या करीस ॥ ताहरां इ यै
गुफा आयौ विचारीयौ थकौ छुं एक र
सो निद्रा कररूप छै तपस्या करीस आ विचा
र सुतौ थौ जितरै काल यमन आय ज
गायौ ॥ काल जवन भस्म हुवौ ताहरां
मुचकंद देषरहौज औ कुण हुतौ जितरै
देखे तौ मांहली गुफा माहे ॥ श्री कृष्ण जी
नीसर आया चतुर्भुज स्वरूप माथे मुकुट

वैजेयंती माला॥ मकरा कृत कुंडल कौ स्तुभमणि पीतांबर धारी दीठा देषर चकत हुवा॥मुचकंद बोलयौ थे कुण छौ जिकैरी आ सोभा कोमल चरण अर औ मधुर वन पाहड पगौ पादत्र नहीं॥ के किती भांत और आपाछौ पांहरी जो तिमै सुं सहीन जाय छै॥ थे कुण छौ माह रै मन मै आवै छै जे थे अगनि छौ का सूरज छौ का इंद्र छौ कुबेर छौ का वरुण छौ नही का ब्रह्मा विष्णु महेश इयां तीनां मांहिली छौ तिकां मै उत्तम दर्सि थे छौ सारा ही देवतांरी ठाकुर छौ पिण मनै कहौ हुं थांनै अवतार जांणुं हु मै तो कृपा करौ कहौ जिके थे छौ सु मनै कहो॥ताहरां श्री किसन जी बोलीया॥ म्हांरा नाम तौ अनंत छै जि कैरौ अंत नही॥एक समय विषै ध रती भार क्रांत हुई ताहरां ब्रह्मा कनै गई ताहरां ब्रह्मा देवतां नै लेर षीर साग र विषै आया म्हांरी स्तुति करीता

हरां हुं वसुदेव जादुरै घरै अवतरीयौ छुं ॥ हुं वसुदेवरौ पुत्र तिकै वास्तै म्हारौ नाव वासुदेव ॥ अर म्हारा नावांरी संख्या तौ कोई न छै ॥ धरती भार उतारण नै अवतार लीयौ छै काल नेमरौ अवतार केंस थौ तिकौ तो मै मारीयौ ॥ केसी पूतना आदि देत्य मारीया काल जवन नै थारी द्रिष्ट सुं मारीयौ ॥ अर तै पैवतांरी सहाय कीवी तिकै वास्तै तुं तै ऊपर प्रसन्न हुवौ ॥ तनै दरशन देणनै अठै आयौ छुं वर मांग ताहरां मुचकंद बोलीयौ थांहरै तौ दरसण सु ही कृतारथ हुवौ वर किसौ मांगु जिकांरै नाव सु ही कृतारथ हुइ जै ॥ तौ मै तौ साक्षात दरसण कीयौ ॥ हुं क्षत्री हुवौ मै अनेक जुध कीया ॥ धरती जीती राज कीयौ लाखां वरष भोग कीया रावलौ सुमरण न कीयौ ॥ मनुष जन्म पावणौ मुसकल छै तिकौ वृथा गमायौ हमै रावली माया सुं डरुं छु ॥ तामसरा

जस सातक त्रिगुण माया छै सु मनै सातिक गुण दीजै औ क्युं मांगौ नहीं ॥ इतरी कही ताहरां श्री किसनजी बोलीया साबास तनै मै तौ तनै लालच घणौ ही दिखालीयौ पण थारो चित्त ठिकाणै रह्यो ॥ मै कनै न मांगै तिकै नै हुं आपके देऊं हमे तुं तीर्थव्रत कर म्हारा भजन छै तेथ फिर पछै तनै हुं मोक्ष देईस वैकुंठ लेजाईस ॥ इतरी कथा इकावन मै अध्याय मै छै ॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे एक पंचाशोध्यायः ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ अठ सुं आ गै बावन मै अध्याय मै आ कथा हुवी राजा मुचकंद ने आज्ञा दीनी थे जावौ राज करौ ताहरां मुचकंद श्री कृष्णजी नै नमस्कार कर पर्वत सुं उतरीयौ आ परी राजधानी थी तिके जायगा आयौ ॥ देषे तौ सतजुग तौ वितीत हुवौ कलि जुग आयौ ॥ मांणस मोटा दीसता सु छोटा दीसै धरती पिण आगै और थी अर हमै और ही दीसण लागी ॥

तारहरां मुचकंद मन मै जाणीयौ ह मै
रह्योरौ धरम कोई नही॥ तारहरां मुं
चकुंद बदरिकाश्रम गयौ तपस्या अ्रा
रं भी अ्रर श्री किसनजी दीठौ का
ल जवन तौ मुवो पिण लसकर वांसै
छै तारहरां नीचा उतरीया आगै दे
खै तौ काल जवनरौ लसकर सर्व गयौ
अ्रर जरासंध साबतै लसकर सुं आौ
छै॥ तारहरां श्री किसनजी बलभद्र जी
हाथां जोडी कर नीसरीया जरासं
ध वांसै दोडीयौ॥ अ्रर कहै छै जम
ला जादवां नै लजाया है डोकै तनै
छोडु नही॥ तारहरां श्री किसनजी कु
अ्रर परबत १॥ जोजन ८ उंचौ हुं तौ
तिके चढीया जरासंध दीठौ परबत च
ढीया॥ तारहरां तेईस बोहण लसकर
परबत दोलौ फेरीयौ॥ पछै चौगरिद
पुला बालर पाहडनै अगनि लगायोई
पछै जरासिंध जांणीयौ बल मुवा॥ अ्रर
श्री किसनजी बलभद्रजी पाहड सुं कु

दीया सु द्वारकाजी आया ॥ पछै गुजरा
तरै देस विषै परबत १ रेवत नावैति
की ठोडरे वंतनाम राजा रहै तिकेरे क
न्या १ रेवती नामे तिका सदा बालक
रहै ॥ ताहरै कन्यारो पिता ब्रह्माजी कनै
गयो जायर कह्यो माहाराज म्हारी कन्या
के नुं देऊ ताहरां ब्रह्माजी कह्यो बल
भद्रजी नै देवौ वसुदेवरै पुत्र छ ॥
ताहरां रेवती नै बलभद्रजी परणीया
पछै द्वारका आया ॥ पछै रुकमणीरीब
बर आई श्री कृष्णजी नै जु भीषमक
राजारै बेटीरो स्वयं वर छै ॥ ताहरां
श्री कृष्णजी विद्रभ देश कुंनणपुर नगर
गया सारां राजावांपांरा मान मरदन
कर रुकमणी नै परणी राक्षसी वीवाह
कीयो रुकमणी नै ले आया ॥ इतरी
वात शुकदेवजी कही ॥ ताहरां परीक्षतजी
प्रसन कीयो ॥ महाराज आ कथा विस्तार
सुं कह्यो पे जाणजो सात दिन हुवा छै
राजा नै अन बांध्यां कदाच विलल हुवौ छै ॥

सु हुं थांहरै मुखरी वांणी रूपी अमृत
पांन करूं छुं सु मनै त्रप तिस काई
नही ॥ कृपा कर कथा विस्तार सु
सुणावौ ताहरां सुकदेवजी कही राजा
चित्त दे सुणौ ॥ धन्य तुं इयै वेला आ
प्रीति राखै छै धन्य तुं सुणौ तै हुं कहुं
राजा भीमक कुंनणपुर रहै तिकैरै पु
त्री 1 रो नाम रुकमणी अर पुत्र ५ ताह
रां नाम 1 रुकमईयौ २ विमल ३ धन्नरुक
म बाहु ४ रुकम केश ५ रुकमरथ ॥ अर
कन्या रुकमणी जिका लक्ष्मीजीरौ अवतार सु
छोटी थकी गवररी पूजा करै सु श्री कि
सनजी नै वर मांगै इयै विधि करतां दसां
वरसांमै हुई ॥ ताहरां माता पिता कुटुंब
परवा:र सारांही विचार कीयौ जु श्री कृ
ष्णजी नै परणासां ॥ ताहरां रुकमईयै
वात सुणी सु कहै छै किसनै रुकमणी पर
णांसा ॥ ताहरां सारां सु विढीयौ कहै जइसडौ
कुण छै जु म्हारी बहन नै किसन नै परणावै ॥
किसन तौ गायां नुं चरावणहारौ गुवाल

छै ॥ कांमल्यांरौ उछणहारौ तिकै ने
म्हांरी बहन परणावो भली अकल विचा
रो छो ॥ म्हारी बहन परणाईस तो शि-
शुपालनै परणाईस तिको ५० पचास मोह
णरौ धणी उवै नु देईस ॥ इतरी वात
रुकमईयैरी सुणी ताहरां रुकमणी चि
तातुर हुई जद औ अभागीयौ बुरौ बोलै
ताहरां आपरी सषी १ नुं कह्यौ ब्रा
ह्मण १ दुर्बल सो तेडायौ ॥ अर कागद
१ आपरे हाथा सु श्री किसनजी सामौ
लिख दीनौ ॥ ब्राह्मण कुंनणपुर सु बा
हर नीसरतो विचारै छै जचार सै कोस
धरती कद जाईस ॥ अर साहे आडतो
तीन दिन छै ॥ आ विचार रातरो सुतो थो
प्रभातै उठै तो द्वारका मांहे जागीयो स्वर्ण
मय घर दीठा वेद धुनि सुणी ॥ लोकांनै २
पुछीयौ कुण देश छै लोकौ कह्यौ द्वारका छै॥
ब्राह्मण षुसी हुवो राजदरबार पुछतो २
पुछतो गयो आगे श्री किसन जी बैठा छै॥
रतन जडत संघासण उपर बैठा छै ब्राह्मण

जाय आशीर्वाद दीनौ श्री किसनजी
नै सुणराई ॥ ब्राह्मण कुंदणपुर सुं
आयौ छै ॥ श्री किसनजी उठर सांमा
आया आपरां हाथां सुं चरण प्रक्षालन
कीया आसन दीनौ ॥ भोजन पा करी सा
मरावी कराई ॥ पछै श्री किसनजी ब्राह्म
णनै रूछीयौ थे अठै क्युं आया छौ ॥
थांनै कोई जोर छल तौ कनां धर्महानि
हुवौ कनां राजा भुंडौ हुवौ ॥ जिकै वास
तै के अठै आया छौ सु मनै कह्यौ ॥
जारां ब्राह्मण एकांत विषै कह्यौ महा
राज कागल १ राजा भीषमकरी पुत्री
रुकमणी दीनौ छै सु वाचीजै ॥ रुकमन्युवा
च ॥ ॥ महाराज श्री किसनदेवजी हुं रावली
छुं अर राजरा प्रवाडा मै सुणीया छै ॥ मै
राज नै वरीया छै ॥ राज भक्तांरा प्रतिपालक
छौ ॥ राज नरसिंघ नाव कहावौ छौ भक्तनि
मित थंभां मै प्रगट हुवा था ॥ अर पहला
द उबारीयौ तिकै राज छौ ॥ अर हुं दीन छुं
म्हारौ भाई दुष्ट छै ॥ कहै छै शसिपालनै देईस

बालणा ३ सुं जरासिंध आयौ छै ॥ बोह
णा तीन शिशपाल आयौ छै ॥ बोहणा
३ सुं दंतवक्त्र आयौ छै इतरा राजा
एकठा हुवा छै ॥ सु मनै शिशपालनै
दीनी तौ हुं प्राण त्यागीस ॥ मै म्हारौ
शरीर राजनै दीनौ छै ॥ पछै राजरै विचार
मैं आवै सु करौ राज अंतर्जामी छौ ॥
हुं अबला छुं अर राज कहलौज इतरा
राजवीयां मैं किसी भांत सुं आऊं एक
उपाय छै हुं सिणगार कर अर अंबे कौरे
देहरै आईस ॥ राज उठा सुं मनुले नीसरौ
राखसी विवाह करौ ॥ औ उपाय छै
अर कटक घाणौ त्याणा अबै कटक
घाणौ छै ॥ लोक कहसी भीषम करौ
कन्यारै वास्ते उपद्रव हुवो ॥ सु राज
रै विचार मै आवै सु कीजयौ ॥ मनै
शिशपालनै दीवी तौ मरीस सिंघरौ
भष छै अर स्याल लेण करै छै राजअं
तर्जामी छौ ॥ इतरा वचन कागल रा
सर्व ब्रामण बाचीया ताहरां श्री कृष्णजी

सुनी हुवो ॥ इतरी कथा बांवन मैं ध्याय
मै छै ॥ ॥ इति श्री भागवते महापुरा
णे दशमस्कंधे त्रापिंचाशौ ध्याय: ॥ ॥५२॥
॥ ॥ अब आगै तिपनवै ध्याय मै आ
कथा हुती ॥ श्री किसनजी कह्यौ रात
दिन मने रुकमणी वीसरै न छै ॥ आ
म्हारै वास्तै ब्राह्मण नै इतरी वातक
ही तुरत रथ मगायौ ॥ दारिक्य सार
थी अर घोडा ४ सुग्रीव सेन मेघ पोहप
च्यार घोडा रथ सुं जोडर आणीया ॥ श्री
किसनजी असवार हुवा ब्राह्मणनै रथ
आगै बैसाणीयै ॥ श्री किसनजी विचारी
यो ब्याव साहौ छै रथ चलायौ सु च्यार
पोहर ४ मांहै कुंदणपुर आया सु षबर
हुई जादव आयो छै ॥ और शिशपाल
पिण आयो छै ॥ रुकमईयौ ब्यार सिण
गारै छै ॥ कंचन मय मंदिर तईयार की
या छै ॥ च्यार भांतरा वाजा वाजै छै ॥
राजा भीषमक शिशपालरै जाय रजा
कीवी ॥ पछै वींद आयारा सासत कीजै

तिकी भांतरा सासत कीया ॥ औ़र ही आगत सागत सर्वे कीवी ॥ शिशपालरै नाव ले ले असी गीत गावै छै ॥ ताहरां रुकमणी कहे छै ॥ म्हा रा गीत मतां गावौ हुं परणीजीस तौ श्री कृष्णजी नुं परणीजीस ॥ नही तर प्राण त्यागीस थे मतां गावौ ॥ औ़ेव चन रुकमणीरा सुणर सखी राणी नु रा जी नुं कह्यौ ॥ रुकमणी औ़ वातां कहै छै ॥ राजा राणी चिंता करे कासुं हुंती ॥ अर बलभद्र जी नै षबर हुई विद्रभ देस रा राजा भीषमकरै श्री कृष्णजी गया स्वयंवर छै ॥ राजा जरासिंध शिशपाल दंतवक्र औ़र ही वडा वडा आया छै जिके बुलमण छै ॥ अर श्री किसनजी एकला पधारीया छै ॥ आजा णर बलभद्र जी चढीया षोहण १॥ छोढ लसकर साथ लेर चढीया ॥ जिसडै श्री किसनजी कुंनण पुर माहे पैठा तिसडै वांसा सुं बलभद्र जी जाय पोहता नगर माहे एकठा पैठा ॥ आ

मै रुकमणी जी चिंता करै छै॥ श्री किसन जी अजेस आया नही॥ म्हा रै कोई औगुण चितारी यौ॥ दीसै छै मन मै आ वात आणिज राज कन्या कहावै अर मनै ब्रासण मेल्है रो लक्षण कुल रौ नही॥ औ औ-गुण जाणर आया नही तो दीसै छै म्हां रा प्राण जाती अर म्हांरो आई पिण जातौ छै॥ आमरती तो मरो हुं तो शिशपालनै परणीस॥ इमै दीसै छै मरणौ आयौ इये भांत विलाप करै छै॥ आयण साहै छै॥ अर बांमण डीआ यौ नही दिलगीर थकी रा नेत्रां सुं न नीर वहण लागा जितरै डाई आंख डाई जांघ फुरकण लागा तिकै सुची रज हुई जितरै मै ब्रासण आयौ॥ सु मुषरी धारण आछी दीठी ब्रासण षुसी थकौ आयौ॥ ब्रासण कहयौ ज श्री किसनजी आया सही कर आया॥ पछै रुकमणी ब्रासणरै वार वार पगै लागी

षुसी हुई ॥ राजा भीषमक श्री कृष्णजी रै सांमां गया पूजा कीवी ॥ वडांरी पूजा कीजै तिकी भांत पूजा कीवी ॥ डेरौ सषरी दैड दीनौ॥ पछै रुकमणी जी माता नै कह्यौ म्हारै अंबिका मातारी जात छै ॥ कहै जाऊं ताहरां राणी राजा नुं कुडबै सारै नुं पूछीयौ सु आग्या दीनी जावै ॥ ताहरां रुकमणीजी कुम कुमै सुं सांपडर सिंगार कर अंबिका रै देहरै चाली ॥ पछै राजा शिशपालजरासिंघनै षबर हुईज किसन आयौ छै कप टी छै ॥ षबरदारी राषो इयै नै मार लेवौ पकड लेवौ ॥ ताहरां जरासिंध शिशपाल बीजा राजवीयां जुधरी तयारी कीवी॥ हथयार बांध जीन साला पहर रुकमणी साथे हुवा ॥ भीषमक राजा पिण आपरै लसकर तईयारी कीयौ साथे गया ॥ एकै पासै जादवौं रो लसकर साथे रुकमणीजरै देहरै आया ॥ पूजा सामगरी सारी सषी रै हाथ मै छै ॥ और वडी वडी ब्राह्मणां असतरी तिकै विधि सुं पूजा कराई॥

रुकमणी जी पूजा कर हाथ जोडीया॥ माता जी मने (मनु) श्री किसन जी वर दीजै॥ इण भांत वर मांगीयौ॥ पछै सऊवारौ समय हुवौ रुकमणी पूजा कर बारणे आई॥ मुष ऊपर सुं पलौ चोडो सौझर कीयौ॥ ताहरां कारा बांण पांचे छोडीया मन मोहे लाजती थकी मुष बोलीयौ॥ ताहरा सारी सेना मूर्छित हुई॥ ऊपर श्री किसन जी रौ दरसण हुवौ॥ पछै श्री कृष्णजी रथ षड भीत गया॥ पछै रुकमणीरो हाथ पकडर रथ ऊपर बैसांणी बोलीया रुकमणी नै लीयै जांऊ छुं कोई आडो आवै सु आवौ॥ इतरौ वचन कीहर रथ बडीयौ॥ जरासंध शिशपाल देखत्ता ही रहीया॥ कहेयो धिकार आपरौ षत्री पणै नुं॥ आपां सगलांरौ मान मरदन कर लेजावै छै॥ आपां सारा युद्ध करानै तयार हुवा॥ आपरी आशा सुं कितरी येक दूर जासी हेडां पकडां छां॥ इतरी कथा तिपनवै ध्याय

मै छै॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे त्रिपंचाशोध्याय:॥ ॥५३॥ ॥ ॥ ॥ अथ आगै चोपनै ध्याय मैं आकथा हुती॥ श्री कृष्ण जी रुकमणी जी नुं रथ उपर वैसांण चालीया॥ताहरां सारा राजा जरासिंध शिशपाल दंतवकत्र और ही सारा राजा जरा हुंता सुं आपत माहै एकौ कर वांसै छोडीया॥ सुजाद वांरै लसकर नै जाय पुहता बलभद्रजी आदि सारा जादव वांणां संवाहि पाछा फिरीया बाण छूटण लागा॥ जिती पाहड मै मेघ वरषा हुवै जिसा शर पडण लागा॥ श्री किसनजी रै दल उपर जोर पडण लागौ जोधा सिदाया॥ श्री किसन जी सांमो जोधा जोवण लागा॥ सारो साथ विहुल हुवौ॥ श्री किसनजी रै रथरै शारण लागा सु जिसै सहलो हुवै तिसौ रथ शरै सुं हुवौ भरीयो॥ ताहरां रुकमणी जी डरण लागा रोवण लागा॥ ताहरां श्री किसनजी कह्यौ

मतां डरौ थे परलैरा जीव छै थे मतां डरौ॥ पछै श्री बलदेवजी हल सुं पकडर जोधां नु बांधै अर मुसल सुं मारै जरासंधरै कटक मराण लागो गजारूढ अश्वारूढ रथारूढ प्यादा च्यार भांतरा जोधारां सिर कटण लागा सारो कटक मराणौ॥ जरासिंध आदि छ राजा पाछा फिरीया मुंडो मुलडो कीयां॥ शिशपाल वांसै हुतौ तिके सुं आय मिलीया॥ शिशपाल नै कह्यो आपणि हार हुई ताहरां शिशपालरो ही मुंडौ मुंहडो हुवौ॥ ताहरां जरासिंध शिश पाल नु कहण लागौ॥ थे चिंता मतां क रौ॥ आपणौ कटक घणो हुतो॥ पण परमेश्वर रै करणी हुवै सु करै॥ चिंता मत करौ भावीक टलै नहीं॥ आपणौ दाव देष लडसां तिहडै तो आपणी हार छै॥ आपा हेडां छिदां नही के पाछा फि रै॥ हुं तो अमारै वार किसन कनै भा गो॥ पण शोक न कीओ सदा हारही हुवती आई छै॥ आपणौ दाव देषव

ले उद्यम करसौ चे शोक मतां करै॥ ता
हरै शिशपाल साथ हुय पाछौ फिरी
यौ॥ आपरै देश नै चालण रौ मतौ
कीयौ॥ तितरे बोहण १ लसकर साथ
ले रुकमईयौ आयौ सो लाग मेलजी
मेले॥ जिकांरी बहन तौ कनै बैसा
ता छै तिकौ नै मारो छौ इसडी वात
आपणी कुल मै कदैन हुई छै रुकमई
ये नुं छोडौ॥ ओ मारीयौ ही सारीबौ
छै रुकमइये रौ माथो मुंडीयौ॥ एक मुं
छ मुंडी ऊपर आपरीहीज पाघडी सुं
रुकमईये नुं बांधीयौ॥ इणरा घोकतौ
कीया घणी ही कुली कीवी तो बलभद्रजी
कहै छै हमे तो महाराज इये नुं छोडौ॥
इयेरी बहन दुष पावै छै॥ रुकमणी
रै मन मै कसक रहिली॥ म्हौरे भाई
नै मै वरजतां मारीयौ॥ हमे तौ आप
प्रसन्न हुयर छोडौ इणरी वात बल
भद्र जी कही॥ ताहरां श्री किसनजी
रुकईयै नुं छोडीयौ॥ रुकमणी जीनु

दुवारकारी स्त्रीयां आपरां भरतारां नै
कहण लागी ॥ प्रीत कीजै तौ इसड़ी
श्री किसनजी कीवी ॥ रुकमणीरै वास
तै कूण कूण थोक किया छै ॥ इतरी कथा
चौपनवै ध्याय मै छै ॥ ॥ इति श्री भाग-
वते महापुराणे दशम स्कंधे चतुपंचाशो
ध्याय: ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ आगा सुं पचांवनै
ध्याय मै आ कथा हुसी ॥ श्री किसनजी रौ वी
हाव भली भांत सुं हुवौ ग्रहस्तरा सुष हुवै ति
कै भांत करण लागा ॥ पछै रुकमणीजी रै
(रुकमणीजी) पुत्र जायौ सु प्रद्युम्न कामदेवरौ
अवतार जायौ ॥ एक समै महादेव जी करुर
तपस्या करता हुता ताहरां इंद्र डरीयौ जम्हा
रौ इंद्रसण ले ली ॥ ताहरां इंद्र कामदेवनै कह्यौ
के महादेवरी तपस्यानै भंग करौ ॥ ताहरां
कामदेव महादेव कनै आयौ ताहरां महा-
देवजी क्रोध कीयौ कामदेवनै भस्म कियौ
ताहरां कामदेवरी अस्त्री कुत रुदन करण
लागी जितरै संबंर दैत्य सिकार-चढीयौ हुतौ
दौड़ैतौ ॥ एक अस्त्री वन मै रुदन करती

फिरै छै॥ ताहरां संबर कह्यौ तुम्हारै आव ताहरां कुत कह्यौ थारै घररी रसोई मांल मांलरी करीस ताहरां संबर कह्यौ थारी दाय आवै सु कर॥ ताहरां कुत संबर रै रसोई उपर रही॥ पछै कामदेव रुकमणी जी रै पेट अवतरीयौ॥ सु रुकमणी जी सुं बै मांहै प्रद्युमन नै लीयां पोढीया हुता॥ज कामदेव रुकमणी रै पुत्र हुवो छै॥ ताहरां संबर दैत्य प्रद्युमन नै उठाय लेगयौ॥ लेजायर नदी मांहै नांखीयौ॥ ताहरां प्रद्युमन नै मछ गिलीयौ॥ पछै मछ भीवर रै हाथ आयौ॥ भीवर मछ नै राजा संबर री रसोई मै दीनौ॥ ताहरां रसोई मै मछ रो पेट फाडीयौ॥ ताहरां बालक नीसरीयौ॥ संबर नै खबर दीनी॥ मछ रै पेट मै बालक एक सरुप नीसरीयो छै॥ ताहरां संबर कह्यौ बालक इयै रसोई दार नै देवौ ताहरां बालक कुत नै दीनौ कुत आपरा अस्तनां नै चुंपायौ॥ पछै कुत नै नारद

जी आय मिलीया कह्यौ औ बालक
थारौ भरतार छै॥ कामदेव छै रुक
मणीरौ पुत्र छै संबर आय नदी मैंना
खीयौ हुतौ॥ सु औ थारौ भरतार छै
ताहरां कुंति कामदेव राजा तन करमोटौ
कीयौ अर उनै जोबन प्राप्त हुवौ॥ ता
हरां कुंति आगै पुत्र मातारा चिन्ह
करती हुई अस्त्री पुरुषरा चिन्ह करण
लागी॥ ताहरां प्रद्युमन कहण लागौ
माता थे कासुं करौ छौ॥ ताहरां कुंति
कह्यौ थे म्हारा भरतार छौ॥ मनै नार
द जी कह्यौ छै के संभालौ अर संबर
सुं युद्ध करौ मनै ले जावौ॥ मै कनै
माया छै सु थे लेवौ अर इयै संबर नै
मारौ॥ ताहरां प्रद्युमन जी ताली दे
ऊभौ रह्यौ॥ संबर नै कह्यौ मै सुं
युद्ध करौ॥ हुं प्रद्युमन छुं ताहरां संबर
गदा ले दौडीयौ॥ पछै दालभ्य सारथी
आकाश मारग रथ ले आयौ हथीया
रौ सीं भरीयौ॥ ताहरां प्रद्युमन जी रथ

पार लीया॥ रथ बैठौ संबर सुं युद्ध कीयौ संबर मार कुते सा पले रथि बैठौ दुवारका नगरी आयौ॥ दोनुं रथ ऊपर बैठा गुवीड मांहै आयऊभा रह्या कुंत पाछै बैठी छै॥ कोटि कंदर्प रूप सहित कांकण डोरौ बाधौ छै॥ जैसी श्री किसनजी री मुर्त्ति छै तैसौ रूप प्रद्युमनरो छै रुकमणी जी री दासी बारणै ऊभी छै तिकै दीठा॥ श्री किसनजी आया तिण कोईक वीवाव करि अस्त्री ले आय॥ ताहरां दासी जाय रुकमणीजी नै कह्यौ॥ रुकमणी जी आय बारणै देखै तो पुत्र छै॥ एतनौ सुदुघरी घार जतरी ताहरां रुकमणी जाणीयौ म्हारौ पुत्र छै॥ जितरै श्री किसनजी नै खबर हुई पछै वसुदेवजी देवकीजी श्री किसनजी नीने एकठा बाहर आयी श्री किसनजी जाण ताहो पूछण लागा अस्त्री कुण छै पछै नारदजी

श्री किसन जी कनै आया कह्यौ॥ औ
थांहरौ पुत्र छै संबर दैत्य ले गयौ
थौ नदी मांहै नाखीयौ हुंतौ॥ पछै सा
री बात वणाय उत पते सुधी कहीअर
कह्यौ प्रद्युमन छै॥ सोलै वरसां सुं थां
नै मिलीयौ॥ ताहरां श्री किसनजी वसु
देवजी देवकीजीरै प्रदमन पगै लागै॥
पछै सारा जादव कोई प्रद्युमन रै पगै
लागै कही रै प्रद्युमनजी पगै लागा॥
अड तीलीलां कोलै मांहै दुवारका
हुंती तितरां लोकांनै षबर हुई प्रद्यु
सोलै वरसांसुं रुकमणीजीरै पुत्रआ
य मिलीयौ सभाग णी रुकमणी॥ पछै
सारा लोक प्रद्युमन जी नुं मिलण नै
आया वधायां वांटीयां लोक करण
लागा॥ श्री किसनजी नौ गुरु रौ
पुत्र मृतक हुंतौ तिकै आंण दीनौ
हुंतौ रुकमणी री आवै नही कांसुं
करै इणरी कथा पचांवनमै ध्यायमै
छै॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे

दशमस्कंधे पंच पंचाशो ध्याय:॥ ॥
५५॥ ॥ अथ आगै छपनै ध्याय मै
आ कथा हुली ॥ सुकदेवजी कही
सत्राजित जादु आपरी कन्या सत-
भामां श्री किसन जी नै परनाई
मणि एक दायजे दीनी सुनै बकसीयौ॥
इतरी बात शुकदेव जी कही॥ ताहरां
राजा परीक्षत जी बोलीया महा
राज किसौ सुनौ सत्राजित कीयौ॥
हुंतौ सु बेटी परणाई॥ अर मिण दा
यजै दीनी सु विस्तार सौ कहैयौ॥
ताहरां शुकदेव जी बोलीया॥ स
त्राजित जादव द्वारका माहै रहै
जिकौ सूरजरौ उपासक हुं तौ सु
सूरज जी सु प्रसन्न हुवा॥ ताहरां
सत्राजित कहयौ महाराज मनै
दरसन नित्य देवौ॥ ताहरां सूरजजी
मिण एक सुमितक नामा सत्राजित नुं
दीवी कहयौ आम्हारौ स्वरूप छै॥ तुं नि
त्य प्रति सेवा कर गलै मांहि राखि

गुफारै बारणै जाय ऊभौ रह्यौ॥ सिंह गुफा माहै सुं नीसरीयौ पछै प्रसीद नै घोड़ै सु घौषा घौ मिण ले चालीयौ॥ आगै जाव तै नै जांब बांनरीछ मिलीयौ॥ जांब वांन सिंघ नुं मार मिण ले गयौ आपरै पुत्ररै पालणै सुं बांधी पछै रात पड़ी प्रसीद नायौ॥ ताहरां लोकौ कह्यौ सत्राजितरौ भाई॥ श्री किसनजी मरायौ वडांरौ कह्यौ करै नही जिकौ षलाषाय॥ आ बात श्री किसन जी सुणी ताहरां दीठौ जुं मांनै प्रसीद मारीयांरौ कलंक आयौ॥ ताहरां लोकां जादवांरौ कटक साथ ले प्रसीद सिकार चढीयौ हुं तो तिकै ठौड गया आगे देषे तौ प्रसीद नुं सिंह घोडे सुधौ बाधौ हाड पड़ीया छै पछै सिंहरा पग लीया आगे गया जांब वानरौ पग दीठौ॥ सु जांब वान सिंघ नुं मारी यौ सु पडीयौ छै॥ ताहरां जांब वांनरौ पग लीयौ सुं जांब वांन गुफा मै पैठौ॥ ताहरां बीजै साथ नुं सीष दीवी ऊपर श्री किसन जी जांब वांनरी गुफा माहै पैठा॥ आडौ

ढाकलौ हुतौ सु पगासुं दूर कर नांखी
यौ ॥ गुफा माहै अंधारौ हुतौ सु चांन
णौ हुवौ ॥ ताहरां जांबवांन दीठौजइ
सडौ कुण छै जु म्हारी गुफा माहै आवै॥
ताहरां जांबवांन अर श्री कृष्णजी रै आ
पस माहै जुध हुवौ सु अठाईस दिन तां
ई जुध हुवौ ॥ जिसी मुकी श्री किसनजी
री लागै तिसडीहीज मुकी जांबवांन
री लागै ॥ ताहरां श्री कृष्ण जी दीठौ
औ रघुनाथ अवतार रै वारै रो छै रघुना
थ सारीखौ पराक्रम छै ॥ औ मरै
नही ताहरां श्री किसनजी रघुनाथजी
रौ रुप कीयौ ॥ ताहरां जांबवांन श्री कि
सनजी रै पगै पड़ीयौ हाथ जोडउ
भौ रहयौ ॥ आपरी कन्या जांबवती श्री
किसन जी नुं परणाई॥ सु मिंण कमण
जांबवती रै गले मे घाती यौ ॥ जांबवं
ती नै किसनजी रै साथ दीनी पछै श्री
किसनजी दुवारका आया सारा जाद
व एकठा कर सत्राजित नै तेडाय सभा

एकठी कर ॥ जिकी भांत सुं जाववांन सुं लडाई, जिकी भांत दुष पडीयां सु विगत सुधी कही पछै मिण सत्राजित नै दीवी ॥ सत्राजित मुंडौ मुंहडौ कीयां घरे आवौ मनमांहै चिंता हुई श्री कृष्ण जी सुं वैर पडीयौ ॥ सु किली भांत भाजै ताहरां आपरी कन्या सत्यभामां श्री किसनजी नै परणाई मिण दायजै दीवी ॥ ताहरां श्री किसनजी कह्यौ मनै अस्त्री रतन दीनौ ॥ तौ मिण कितरीक वात छै मिण वले सत्राजितनै दीनी इयै भांत सतभांमां नै परणाई ॥ इतरी कथा छपनै ध्याय मै छै ॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे षट्पंचाशोध्याय :॥ ॥५६॥ ॥ आगा सुं सतावन मै ध्याय मै आ कथा हुती, श्री किसनजी बलभद्रजी नै कह्यौ एकरसी तौ हस्तनापुर आपां जासां कुंती अर कुंतीरां पांचां पुत्रां मै बिषौ छै उवांनै मार रणरौ विचार दुर्योधन कीयौ हुं तौ लाखरौ मौहल कराय उवांनु माहि राखीया

हुता पछै विदुर खबर दीनी जु थानै मोहल मै बैसांणनरौ विचार छै ताहरां भीम सेन मोहल नीचै गुफा खुणी ॥ सु तीन कोस जमनां जी तांई गुफा खुणी ॥ पछै एक ब्राह्मणी पांच पुत्रां सुधी उठै हुंती राख अर मोहल बाल दीनौ ॥ ता पछै कुंती नै अर युधिष्ठिर नै भीम कांधै लीया अर्जुन नकुल सहदेव नुं पृष्ठ वांसै बांध लीया ॥ अर गुफा मांहे नीचौ ही नीचौ जमना जी जाय नीसरीयौ ॥ अर दुर्जोधन तौ जाणीयौ जु बल मुवा छै सु एकर तो उ वांनुं जायमिलां ॥ उ वांनुं बहुत कलेस छै ॥ ताहरां श्री किसन जी बलभद्र जी दोनै पांडवां कनै गया ॥ अर अकरूर क्रितवर्मा सुधर्मा ईयां तीनां जणां नै पाछै दुवारका भोलाई अर चालीया सु पांडवा कुंती कनै गया पाछै सुधर्मा कृतवर्मा अकरूर कनै गया कहण लागा ॥ सत्राजित आ पणी मांग हुंती जिका श्री किसन जी परणाई सु बुरौ कांम कीयौ अर मिण पिण श्री किसन जी

मांगी थी सु दीनी न थी सु सत्राजित आपणौ वैरी छै आपां सत्राजित नै मारसां॥ ताहरां अकरूर कृतव्रमा बारणै ऊभा॥ अर सुधर्मा पै सारौ बैसर सत्राजित नै मारीयौ माथौ काटर मिण लीवी सतभामां दीठौ त्राहि त्राहि कीयौ सतभामा रोवती हीज रही अर सुधर्मा सत्राजित नै मारर मिण ले गयौ पछै सत्राजित नै बालीयो नही॥ तेलरी कोठी मांहे राषी यौ अर सतभामां रथ ऊपर बैसर श्री किसनजी कनै पुकारू गई॥ ताहरां सुधर्मो दीठो वात भुंडी हुई श्री किसनजी मार ली आपां भुंडो काम कीयौ॥ पछै मिण हुती तिनका तो॥ अकरूरजी नै सांपी॥ अर सुधर्मा जनक विदेही रै री धरती गयौ॥ जाणियो जनकरै वांसै छुं टुं अर अकरूरजी संषो दार गया॥ समुद्र मांह कोस ४० चालीस॥ अर कृतव्रमा गिरनार गयौ सु श्री कृष्णजी रौ जवाई चारुमतीरौ वर हुयै भांत सुं तीनै जाण छिकातो लागा॥ अर सतभामा श्री-

किसनजी कनै गई सो जाय पुकारी॥ महाराज म्हारौ पिता मारीयौ ताहरां श्री कृष्णजी कह्यो ओ काम सुधर्मा कीये॥ अकरूर नै अर कृतवर्मा नै आ बुधि सुधर्मा दीनी ताहरां श्री कृष्णजी बलभद्रजी रथ बैसर दुवारका नै चढीया॥ पछे षबर कीवीज सुधर्मा नै षबर हुई ताहरा सुधर्माजि जनक विदेहीरे देश गयो॥ ताहरां श्री किसनजी बलभद्रजी सुधर्मा रै वांसै गया सु नील पर्वत कनै जाय पोहता॥ देषै तो सुधर्मा पालो जाय छै ताहरां श्री किसनजी पण पाला हुवा सुधर्मा नुं जाय पोहता माथो काटीयौ मिण ढंढोली सु मिण नही॥ ताहरां श्री किसनजी दिलगीर हुवा जु बलभद्रजी जांण सी- श्री किसनजी मिण राषी मनै कलंक आयौ संकोच करण लागा ताहरां बलभद्रजी रथ ऊपर बैठा था सु बोलीया॥ थे संकोचौ क्युं करौ छौ ताहरां श्री कृष्णजी बोलीया॥ सुधर्मा नुं मारीयौ पिण मिण

इवै कनै नही ॥ तारां बलभद्र जी कह्यौ॥
म्है जातीसमझा पछै बलभद्र जी रथ सुं
अतर पडीया ॥ सुधर्मा हुं मारीयौ वै जा
जा राजा जनक विदेही सु म्हारै मेल छै॥ सु
हुं मिथला नगरी जाईस जनक कनै
पछै श्री किसनजी कुकतावीज रह्या॥ अर
बलभद्र जी जनक कनै गया पछै राजा
जनक चरण प्रक्षाल पूजा कर आपाली
या पछै श्री कृष्ण जी दुवारका आया॥ सत्रा
जित रो दाग करायौ॥ अंजली दीनी
देह कृत कीयौ अकरुर री षबर कराई लो
क कहण लागा अकरुर जी संषोधार छै॥
अकरुर जी गयौ। पछै देश मै काल पडी-
यौ॥ लोकां नुं रोग हुवौ छै तारां उद्धवनै
अकरुर जी कनै मेलीयौ उद्धव संषोधारजा
य अकरुर जी नै ले आयौ॥ श्री किसन
जी सांमा जाय हाथ पकड घर मै ल्याया
पछै अकरुर नै कह्यौ मै सुधर्मा नु मारी दो
अर मिण हाथ नाई॥ अर बलभद्र जी मिणरै
वासतै रीस कीवी पिण मिण लाधी नही॥

ताहरां अक्रूरजी मिण काढ श्री कृष्णजी
नै दीवी पछै श्री किसनजी जादवां नु एकठा
कर मिण सत्राजितरै बेटे नु दीवी ॥ पछै
श्री किसन जी कृत वरमारी खबर कराई
गिरनार सुं बोलाय दिलासा दीवी ॥ औ कर्म
सु धर्मीरौ छै सारांनुं दिलासा दीनी ॥ इतरी
कथा सतांवनै ध्याय मे छै ॥ ॥ इति श्री
भागवते महापुराणे दशमस्कंधे सप्त
पंचाशौ ध्याय: ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ अठा आगे अठा
वनै ध्याय मै आ कथा हुवी ॥ पांडवां कनै
श्री कृष्ण जी आया कुंती सुं मिलीया ॥ दु
र्योधन नै कह्यो अ थांरा भाई छै ॥ इयांनुं
पांच गाव देवौ दुयै भांत परधानो कीयो पछै
श्री किसनजी पांडवांनै कह्यो ॥ पे सिकार
करता तिकी दौड चालौ ताहरां श्री कृष्णजी
पांडवांनै साथ कर जमनारै कांठै सिकारगा
या सिकार कीयौ ॥ सूवररो झांखरण तीतरसि
सा मार गाडा भर चलाया ॥ अर ऐ सगला
जमनांजी ऊपर उतरीया ॥ स्नानं कीयां जित
रै देखे तो एक अस्त्री भलै रूप आवे छै ॥ ताहरो

श्री कृष्ण जी अर्जुन नै सांमौ मेलायौ पूछौ
आ कुण छै॥ ताहरां अर्जुन सांमौ गऔ
पूछीयौ तुं कुंण छै हुं जांणुं छुं भरतार
जोवै छै॥ इतरी वात अर्जुन कही ताहरां
उवा बोलीयो हूं सूर्यरी कन्या छुं कालंद्री
म्हारौ नाव छै जमनाजी माहे म्हारौ महल छै॥
अर हुं श्री कृष्ण जी नै भरतार चाहुं छुं ता
हरां अर्जुन श्री किसन जी नै आय कह्यौ
श्री थांनै भरतार चाहै छै॥ सूर्यरी कन्या
छै इयैरौ नाव कालंद्री छै ताहरां श्री कि
सन जी रथ बैस कालंद्रीरौ हाथ पकड
कालंद्री नै रथ ऊपर बैसांण हस्तनापुर
आया॥ कालंद्री परणि पछै फेर उजीण नग
री रै राजारी बैटी परणी स्वयं वर हुवौ हु
तौ॥ सु श्री किसनजी रै भुवारी बेटी हुती॥
पछै आयोध्यारौ राजा हुतौ तिकै रै स्वयं
वर थौ कन्यारौ तिकै सारा राजा बुलाया
था सु किसनजी पण अयोध्या गया त
सकर घणो साथे लीयौ॥ आगै पण घ
णा राजवी एकठा हुवा हुंता॥ अर राजारी

कन्या सत्यारै हाथ माला दे गौ घडै नैसांली
थी ॥ अर राजा प्रतिज्ञा कीवी थीजकी जिको
सात गोधा एकठा नाथे तिकै नै कन्या परणा
उ ॥ पछै गाय १ । अर गोधा ७ सात रंग
भूमि विषै छोडाया हुंता ॥ अर राजवीयां
पग पषालर आग्या कीवी ॥ ऐ गोधा छै
सु नाथौ इतरी कही राजा सारा ऊभा छै
पण आ संग कहीसी मै गोधा आवै नहीजि
तरै श्री कृष्णजी पिण जाय ऊभा रह्या ॥ रा
जा पग पषालण लागौ ताहरां श्री कृष्ण
जी बोलीया ॥ राजा हुं क्षत्री छुं मनै जाच
ना करणी नही पण हुं थारी कन्या दे आज
चनां हुं तै सुं करं छुं जुं रूजवांती छै अर हुं
सोमवंसी छुं आपांरै सदा सगपण छै ॥
ताहरां राजा बोलीयौ महाराज राजअपरांत
कुंण छै ॥ तिकांरै चरणांरी सेवा लक्ष्मी करै छै
पण मै प्रतिज्ञा एक कीवी छै गाय १ अर गोधा ७
सातनै एक वारहीज नाथै तिकै नै कन्या परणाउ
मै इयै भांतरौ प्रज्ञान पणौ कीयौ छै ॥ ताहरां श्री
किसनजी पीतांबर सुं कमर बांधी ॥ अर आप
रा सात रूप कीया एकै ही फेरै सात गोधा

नाथीया ॥ लोकां एक हीज रूप दीठौ कन्या बैठी देषती थी सु खुली हुई पछै सबरो मुहूर्त देष श्री किसनजी नै कन्या पर-नाई॥ पछै राजा दायजो दीनो हजार एक तो हाथी ॥ अर एकला रथ अर १ क कोटि घोडा दीना॥ और गहणा दासदा सी तो अनेक ही दीया ॥ इतरो दायजो लै सत्या नुं परणी जी पछै दुवारका आया ॥ इतरो दायजो बीजो कही दीयौ नही॥ पछै बीजा राजवी जुध नै तयार हुवा॥ ताहरां अर्जुन नै वांतै राषीयौ ज तुं इयानै समझाय आये ताहरां अ र्जुन सारौ नै जीत आयौ॥ इयै भांत सत्या परणी पछै चोथी परणी पछै पांच वी परणी सु इयै भांत पांच वीवाह कीया॥ इतरी कथा अठावन मै ध्याय मै छै॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे अष्ट पंचाशो ध्याय: ॥ ॥ ॥ ५८॥ ॥ अठा आगै गुणसठवै अध्याय मै आ कथा हुसी॥ धरती इंद्र नै साथ ले श्री किसनजी कनै पुकारु आई जि महाराज कुंडल भूमासुर नरकासुर

दैत्य धोस लीया॥ अर सोले हजार कन्या
राजवीयारी रोक छोडी छै इसडा कर्म करै
छै॥ अर सत भांमा धरतीरो अवतार छै॥
सु श्री किसनजी नुं कहै छै महाराज म्हा
रा कुंडल लीया छै ताहरां श्री किसनजी
जादवांरो सारो लसकर साथे ले नरकासुर
ऊपर चढीया सु आगे देखे तौ सांकलांज
डत कोट छै॥ अगनरी खाई छै बीजी पां
णीरी खाई छै जादुं देखि विस्मय हुवा॥ पछै
श्री किसनजी सुदरसण चक्र नै आज्ञा दी
वी॥ ताहरां अगनि सोखीयौ॥ पछै वायनै
आज्ञा दीनी ताहरां पांणी सोखीयौ पछै संख
नाद कीयौ तिकै सु सांकलां खुल पडीयां॥
पछै श्री किसन जी वज्र सुं कोट भागौ ता
हरां नरकासुर जागीयौ त्रिसूल ले श्री किस
नजी सामौ दौडीयौ सु काल रूप सारी खो
दोडीयौ तेरै पांच माथा नेत्रां मांहै अगनि नि
सरै इसडै रूपरो दोडीयौ॥ श्री किसनजीरै
त्रिशूलरो प्रहार कीयौ॥ पछै बांणांरी व
रखा कीवी॥ तेसुं जादवांरो कटक सीदांणौ

तालरां श्री किसनजी चक्र सुं नरकासुररा मा-
था काटीया पांचै पछै नरकासुररा सात पुत्र
था तिकै श्री किसनजी सांमांउवैहीज रु
प सु दोडीया अर जुद्ध कीयौ ।। पछै सातै
पुत्र नरकासुररा मारीया पछै नरकासुर
री सेन्या सारी भागी ।। पछै श्री किसन
जी नरकासुरसै घर ढंढोलीयौ ।। तालरौ घ
रतीरा कुंडल घर मै था सु लेअर सतभा
मां नै दीनां पछै हाथी छ४ चौसठ च्यार
च्यार सुंडांरा हुता सु लीया ।। अर सोले
हजार अेकसौ आठ कन्या हुती सु
ले मालविन कोट मांहि लो सारै ले
दुवारका आया ।। पछै गर्गाचार्य नै
(नुं) तेड एकहीज महुरत सारी कन्या
आप आपरे घर मै चवरी मांड परणी
या ।। पछै उतराही रुप आपरा कीयाइ
यै भांतरी ही परणीछै पछै सतभामा
नै साथे ले इंद्र कनै श्री किसनजी ग
या अर नारद जी नै आंगां नै मेलीया इंद्र
जी नै कहीयौ म्हांनै पारजात वृक्ष देवौ ।।

हुं थांहरां छोटौ भाई छुं मांहरी बहु सत भांमां हठ कीयौ छै ॥ ताहरां इंद्र कहायौज म्हारौ पारजात देउ नही ये आपरी वस्त हु वै सु वहुनुं देवौ हुं देउं नही ॥ ताहरां नार द आयर श्री किसन जी नुं कह्यौ ॥ इंद्र दे वै नही ताहरां श्री किसनजी इंद्रजी सुं युद्ध कीयौ ॥ ताहरां पछै इंद्र नै जीत पारजात उपाड सतभांमांरै. आंगणै रोपीयौ सारीही अस्त्रीयां सुं भांत भांत रा सुष करै छै ॥ इतरी कथा गुणसठवै धयाय मै छै ॥ ॥ इति श्री भागवते महा पुराणे दशमस्कंधे एकोणसाठोध्याय: ॥ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ॥ अठ आगै साठवै धयायमै आ कथा हुती ॥ श्री किसनजी रुकमणि जी दोनेही दुवारका मांहै आपरै निज मंदर मांहे छै ॥ सास्त्र विधि सुं दाली आगै ऊभी छै मंदर रतनां सु जडत छै ढोलीयौ कसीयौ छै ॥ श्री किसन जी ढोली यै ऊपर बैठा छै अर रुकमणी जी पंषौ करै छै ॥ श्री किसन जी रुकमणी जीनै रीस कराव

ण वास्तै इलडा वचन कह्या ॥ श्री किस
नो वीच ॥ राज कन्या भीषमकजी री बेठी तै एक
मुंडौ काम कीयौ ॥ थारै भाई यांनै सिसपालनै
परणावणी कीवी थी अर थांहरै बाप ही कह्यौ
ज भलां सिसपालनै परनावौ ॥ अर तै उवांनुं
छोडर मनै बांमण मेलीयौ सु बहुत मुंडौ का
म कीयौ इसडा काम राज कन्या वांरा नही
थां म्हारौ कासूं दीठौ ॥ हुं तौ कोई राजा नही
राजा तौ उग्रसेनजी छै हुं तो सूधो लोक छुं॥
अर मारै जनमरी पिण थांनै षबर नही॥
हुं तौ कठै ही जायौ कठै ही अपनौ ॥ अही
र लोकौ मै रह्यौ तिकांरौ काका सूं देष
वरीयौ ॥ एक तौ कालौ छुं बीजो म्हारै
धन कोई नही ॥ श्रौर हुं तौ मथरामै
रहतौ सुं डरतौ ना सर समुद्ररै श्रारलै श्रा
यौ ॥ अर शिशपाल जरासंध पचश
५० बोहणरा धणी तिकांनै छोड मनै तेव
रीयौ सु म्हारौ तै कासुं दीठौ ॥ अर कदाच
थे कहलो थे उवांरौ मरदन कर श्रायासु
म्हारौ सु भाव छै जिकौ गुमांन करै तिकैरौ

गुमांन भांजुं सु उवांरो गुमांन भांजीयौ ॥
थांनै ल्यायौ हमे वे सिसपालरै जावौ थांहरौ
भाई रील करै छै थांहरै भाई नुं (नं) सुष दे
वौ ॥ माहरै थांसु काम कोई नही थां वौ
हत मुंढौ कांम कीयौ ॥ इसड़ा कांम कुलरी
रवीन करै हमे थे शिशपालरै जावौ ॥
अर थे कहसौ थे मनै आंणी सु म्हारै आं
णीरौ अहंकार कोई नही ॥ थे निचंत उवां
रै जावौ हुं तौ निरगुण छुं सगुण नही॥
इतरी वात श्री किसन जी कही ताहरां श्री
रुकमणी जी पंषौ करता था सु पंषौ हाथ
सुं छुट पड़ीयौ ॥ अर नैत्रां सुं प्रवाह छुटा
उभा हुता सु गिर पड़ीया ॥ अचेतन हुवा
ताहरां श्री कृष्ण जी आप उठाय पलंग
उपर लीवी ॥ आपरै हाथ मुष लुह्यौ पी
तांबर सु अंगोछौ कीयौ॥ केश छुट गया
था सु आपरै हाथा सुं धारीया ॥ अर क
हण लागा जमे थां सुं हासौ कीयौ सुं
थे रीस कीवी थे म्हां सुं रीस कदे कीवी
न थी तिके वासतै थाहरौ रीसरौ मुष देषण

वात काई नही जे मागो सु कानुं हुं देऊं ॥ अर आठ म्हारै पटराणी छौ तिकां मांहै जे सिरदार छौ ॥ थे म्हारै प्राण वल्लभ छौ इयै भांत विस्तार थारौ छै ॥ इणरी कथा साठवै अध्याय मै छै ॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे साठोध्यायः ॥ ॥ ६० ॥ ॥ अठ आगै इक सठवै अध्याय मै आ कथा हुली ॥ श्री किसनजी रै सोलै हजार एकसौ आठ अस्त्रीयां हुई सु एक एकरै घर मै एक एक रूप आप रो कीयो ॥ जिकै रै घरे जावै जिका स्त्री सांमी आसण दे चरण प्रक्षाल कर सुं गंध तांबूल आगै राखै ॥ उवांरै दासी तौ घणी ही छै पिण सेवा करणनै आप ठक राणी सावधांन रहै दासी कहीनुं नजीक आवण देवै नही इयै भांत घर विषै वि राजै पण श्री किसनजी वस कही स्त्री रैन छै ॥ ओकां नुं लीला देखालै छै ॥ राजा परीक्षत शुकदेवजी नै प्रश्न पूछीयो म हाराज रुकमई दै आपरी कन्या प्रद्युमन

भांणेजे नै दीनी सु किसै वासतै ॥ रु
कमईयौ तौ वैर राषतौ अर आपरी कन्या
प्रद्युमन नु चाहि कर आपे दीनी सु किसे वा
सतै ॥ ताहरां श्री शुकदेवजी कह्यौ श्रीकि
सनजी रै सोलै हजार एकसौ आठ स्त्री
हुई ॥ तिकां मै दश दश पुत्र एक एक कन्या
सगलां रै हुई ॥ तिकां मै आठ पटरां
णी तिहांरा पुत्र तिकारा नाव वीगत सु
चा कह्या छै ॥ अर बीजांरा अस्त्रीयारा
पुत्रांरा कन्यां वारा नाव न कह्या रुक
मणी जी रै वडै पुत्र रौ नांव प्रद्युमन ॥
अर नव बीजांरा नाव छै ॥ एक कन्या ति
कै रौ नाव चारुमती तिकां कृत वर्मा नै प
रणाई ॥ अर दश पुत्र एक कन्या जांबवती
रा नाव कह्या छै ॥ दश पुत्र १ कन्या
सतभांमारां नाव कह्या छै ॥ दश पुत्र १
कन्या कालंद्रीरा नाव कह्या छै ॥ दश
पुत्र १ । एकन्या ~~कालंद्रीरा नाव कह्या छै~~ ॥
लक्ष्मणा (उजीणा) रै राजारी बेटीरा पुत्रां रा
नाव कह्या छै ॥ दश पुत्र एक कन्या सत्या

अयोध्यारै राजारी बेटी तिकांरा नाव क ह्या छै ॥ इतरा ही मित्र विंदा अर भद्रारा पुत्रांरा नांव कह्या छै ॥ अरु रुकमई दै आपरी कन्या प्रद्युमनै परणाई सु जा णीयो ॥ श्री किसन मै सुं वैरी भाव कर सी तौ रुकमणी नै दुहाग देता हुवै तिकै वासतै परणाई ॥ पछै अनुरुध प्रद्युमन रौ पुत्र तिकौ रुकमईयै रै दोहीतो ति कै नुं आपरी कन्या परणाई ॥ ताहरां सारा ही जादव एकठा हुय श्री किसनजी बलभद्रजी अनुरुधरी जांन गया ॥ रुक मईयै रै भोजा नगर गया ताहरां अनुरुध नुं परणायौ ॥ पछै कलिंग देश दुवार का सु सात हजार कोश छै तिकै रौ राजा कलिं ग रुकमईयै रै नौतियार आयौ हुतौ ति कै रुकमईयै नुं कह्यौ ज जादव थारा वैरी अर थारै मन मै कस कांई आवै नही॥ ओ तौ क्षत्रीरौ धर्म नही आपां इयां सुं जुवै रमसां अर इयांनै हरासांईयांरी काय दौ पाड मैलसां॥ ताहरा रुकमईयै तेडौ मे

मेलीयौ चौपड मांडी छै ॥ आवौ बेलौ॥ श्री किसनजी बलभद्र जी आप चौपड मां डर रमण नै बैठा ॥ एकै पासै श्री किसन जी बलभद्र जी बैठा ॥ अर एकै पासै रुक मईयौ अर राजा कालिंग बैठा एकसौ सोनईयां बाजी लगाई सु श्री किसनजी बलभद्र जी हारीया ॥ पछै एक हजार सो नईयां बाजी लगाई ॥ पछै दश हजा रै लगाई सु सारा ही श्री किसनजी बलभद्र जी हारीया ॥ ताहरां एक ला ख लगाई ताहरां श्री किसनजी बलभ द्र जी जीता ॥ ताहरां कलिंग राजा कहै रुकमईयौ जीतौ चे हारीया ॥ थे कि जाणौ चौपडरी थे तौ गिवार लोकगा यौरा चारण हारा छौ ॥ चोपडरी सार राज वी जाणै चे कासुं जाणौ इतरी वात कलिंग राजा कही ॥ ताहरां बलभद्र जी नै क्रोध आयौ पासौ चलायौ तिकौ कलिंग राजा दांत तोडीया ॥ पछै फिर लाख एकरौ दाव धरीयौ सो पिण श्री किसनजी

बलभद्र जी जीता तै पिण कलिंग राजा
कहै अर रुकमईयैरा लोक सारा कहै रु
कमईयौ जीतौ ॥ ताहरां आकराशवां
णी हुई श्री किसन जी बलभद्र जी जीता॥
तौ पिण रुकमईयौ फेर कहण लागौ
म्हे जीता तौ आकाश वांणी मारुका
सुं छै थे गिवार लोक कासुं जाणौ का
णिहरै दिन गायां चरावतां रोही मै फिर
ता इतरी वात रुकमईयै कही ॥ ता
हरां बलभद्र जी क्रोध कर गदारी रु
कमईयैरै माथै गदारी दीवी ॥ सु रु
कमईयौ तौ मूवौ पछै कलिंग राजारा
दंत पकड नांष दीनै ॥ पछै बीजा
लोक हुता तिकांरा हाथ कांन माथौ ना
क तोडीया ॥ सारां नै मार अनुरुधरी ब
हु लै भोजनगररी मील लै दुवारका
आया दमांमां वाजतां आया ॥ इतरी
कथा इकसठवै ध्याय मै छै ॥ ॥ इति श्री
भागवते महापुराणे दशमस्कंधे इकसठवो
ध्याय: ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ अथ आगै बासठ

वै ध्याय मै ग्रा कथा हुती॥ बाणासुर
दैत्य महादेवजीरी बहुत सेवा कीवी॥
ताहरां महादेवजी संतुष्ट हुवा सुवा सु
बाणासुर नै हजार १ हाथी दीया नुं संग्रा
म कर तै सुं जीतै कोई नही॥ पछै बा
णासुर महादेवजी आगै नाचै॥ अर भां
त भांत सुं रीझावै पछै बाणासुर एक
दिन महादेवजी रै पगां मांहै माथौ दे
अर वीनती कीवी॥ महाराज म्हारै
भुजां रै खाज आवै छै अर मै सुं वि
ढण वालो दीसै कोई नही सु थे मैसुं
जुध करौ ताहरां महादेवजी क्रोध
कीयौ॥ अर कह्यौ॥ थारै घर ऊपर
धजा छै तिका कटसी तिकै तनै मार
सी॥ पछै बाणासुर जोरा वर थकौ आ
परै नगर मै रहै जुध नै उडीकै॥ पछै एक
समै बाणासुररी कन्या ऊखा आपरै मंदिर
मै सूती थी सुपनै मांहै अनुरुधजी
नुं दीठा जिकै श्री किसनजी रौ पोतरौ
अर प्रद्युमनजी रौ बेटौ तिकै नुं दीठै॥

पछै आंष खुल गई सु बाणासुर री कन्या ओदक उभीरोवण लागी ॥ ताहरां चित्र रेषा उवैरी धाय हुती तिका बोली का सुं हुवौ सु चित्र रेषा कुंभ करण दैत्य री कन्या छै ॥ अर एक कूप करण दैत्य री कन्या छै ॥ सु ए दोनुं बाणासुर रा प्रधान छै तिकां री बेटी छै ॥ सु बाणासुर री कन्या री रषवाली राषै तिकां माहै चित्र रेषा अपछरा रौ औतार छै तिकां बाणासुर री कन्या नै पूछीयौ ॥ ताहरां बाणासुर री कन्या एकांत हुई चित्र रेषा नै कह्यौ ॥ मै एक पुरुष सुपनै मै दीठौ सु घणौ स्याम सूरति हुतो सु मनै छोड गयौ दुष रूपी समुद्र माहै नांष गयौ ॥ ताहरां चित्र रेषा बोली चिंता मतां करौ अ पुरुष हुं थानै आंण देउं ॥ ताहरां चित्र रेषां पुरुषां री सभां व णावैं अर दिषालै ॥ तीन लोकरां देवतां री सबी मांड मांड दिषाली ॥ सु कोई नजर मै आयौ नही ताहरां मनुष्य लोक मांडण लागी पछै जादवां रौ कुल मांडण लागी ॥ पहली

नै कही अर रूपकरण बाणासुर नै कही पछै ॥ बाणासुर दैत्य एकठा कर अर अनुरुधरो मंदिर घेरीयौ ॥ पछै अनुरुध जी अर उषा चोपड़ खेलै कानु बाणासुर आयर किवाड़ तोड़ण लागौ ॥ ताहरां उषारोवण लागी ॥ ताहरां अनुरुद्ध जी दिलासा दीनी जितरै आकाश मारगै गदा आई हथीयार सारा आया गदा लेर अनुरुध बाहर नीसरीयौ ॥ पछै एक तो दैत मारीया ॥ पछै बाणासुर बोलीयौ ॥ इयैनुं मतौ मारौ औज बाई छै इयै नुं बांध लेवो ॥ ताहरां एकठां हुयर बांधीयौ ॥ ताहरां उषा रुदन करण लागी पछै नारद जी श्री किसन जी नै जायर कह्यौज पे अनुरुधनै ढवौ छौ सु अनुरुध तौ बाणासुररै बांधीयौ बैठो छै ॥ इतरी कथा बासठवे धयाय मै छै ॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे बासठो धयाय: ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ आगा सुं तेसठवे धयाय मै आ कथा हुबी ॥

अनुरुध बाणासुररै बंदी षांनै मै छै॥ अरु श्री किसन जी अनुरुध नै ढुंढै छै षबर काई नही पछै नारद जी आयर कह्यो॥ अनुरुध तो बाणासुररै बंदी षांनै मै छै॥ ताहरां श्री कृष्ण जी बल भद्र जी कटक बारै अक्षोहणी साथ लेर चढीया आय बाणासुररी नगर घेरीयो॥ पछै महादेवजी नै षबर हुई॥ श्री किसन जी मांहरै सेवग बाणासुर अपर आया ताहरां महादेवजी पिणआ परा गण साथ ले अर बाणासुर री भिर आया सु जुध हुवौ॥ श्री किसन जी अर महादेव जी रौ जुध हुवौ॥ प्रद्युमन अर साम कार्त्तिकेय जुध हुवौ॥ साम कार्त केय सौ हारयौ पछै बलभद्र जी अर कुंभांड अर कूप करण जुध हुवौ॥ सु बलभद्र जी हल सुं षांचै अर मूसल सु मारै॥ दैत सीदाण और बाणासुर अर सात्विक जादु जुध हुवौ॥ पछै महादेवजी अर बाणासुरसौ कटक सीदाणो सारा मारीया

कितरायेक भागा॥ बाणासुर एक हजार हाथां सु जुध करतौ थौ सु मरण लागौ॥ तारां बाणासुर री माता दिलगीर हुई सु श्री किसनजी कनै आय उभी रही॥ तारां श्री किसनजी कह्यौ थारै पुत्र नुं न मारु परीजा तारां बाणासुर नाठौ पछै महादेवजी ज्वर नै विदा कीवौ॥ तारां ज्वर सारै कटक माहै सारां नै ताप ज्वर आयौ॥ पछै श्री किसनजी सीयौ कौडीयौ जै रै तीन तीन हाथ तीन नेत्र तीन तीन ही पग छै यै भांतरा ज्वर सीया॥ आपस मांहे जुध करण लागा॥ तारां ज्वर हारीयौ अर सीयौ जीतौ पछै ज्वर दौडर श्री किसनजी रै पगै लागौ॥ महाराज उबरुं हुं थाहरांनी मे रावलौ स्वरूप जाणीयौ नही॥ तारां श्री कृष्णजी कह्यौ तुं कुंयै लनै मारुं नही आज पछै आ कथा सुणै तिकैरै निजीक तुं मतां आवै॥ तारां ज्वर कह्यौ आज पछै आ कथा सुणलीतै कैरै नजीक न जाऊं॥ राज मनै आज्ञा दीनी सुं प्रमाण छै॥

इतरी हुई जितरै फर बाणासुर रथ बै
सर हजारां हाथां मै हजार आवध
पकडर फेर जुद्ध करण नै आयौ॥ एक
वार हजार हाथां सुं हजार शर॥ श्री
किसनजी उपर बाह्या सु जिसा वाहै तिसा
एक ही वार आवताहीज काट नाखीया॥
फेर हजार हाथ बाणासुररै था सु दोय
हाथ राखीया बीजा सर्व काट नांखीया॥
फेर मरण लागौ तारां महादेवजी दोडर
श्री किसनजीरै पगै लागा॥ महाराज
औ म्हारौ परम सेवग छै ऊबरै॥ कहती
महादेवरौ सेवग मारीयौ॥ इयै भांत महादै
वजी असुति घणी कीवी॥ तारां छो
डीयौ॥ श्री किसनजी कहण लागा॥
महादेवजी थै तौ मनै घरा वल्लभ छौ॥
अर बाणासुर पिण राजा बलिरौ बडौ
बेटौ छै॥ प्रहलादरै वंस माहें छै
पण इयै गुमान कीयौ तिकै वासतै
मै समझ दीवी हमै न मारुं छुं थै कही
तौ॥ पछै भली बात छै॥ पछै अनुरुधनै

अनुरुधरी बहुनै लेर द्वारका जी आया॥ इणरी कथा तेसठवै अध्याय मै छै ॥॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे त्रि षष्ठितमोऽध्याय: ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ आगा सु चौसठवै अध्याय मै आ कथा हुली श्री कि सनजीरा बलभद्रजीरा नव पुत्रं पोते हीरा परपोतीयांरा एकठा हुयर वन मै खेलण गया सु खेलतां खेलतां नु तृषाला जी॥ ताहरां एक कोहर दीठो तेक जायान वेही पुत्र कूप अरउभा रहिर दीठौ सु देषै तो कूप मांहै एक किर कांटीयौ छै सुमो टौ छै॥ ताहरां सग लांही एकठा हुयर वरत सुं बांधर षांचीयौ सु अपडै नही ताहरां श्री किसनजी नै जायर पुकराई ज महाराज कुप मांहै एक किर कांटीयौ छै सु नीसरै नही थे काढौ ॥ताहरां श्री किसनजी चिटीरै नष सुं बांच काढीयौ किर कांटीयैरी देह छुटी॥ अर मनुष्य री देह हुवौ सोलै वांनीरै सोनौ हुवै तिसडौ स्वरुप चीयो हुवो॥श्री किसनजी

जांणे ताहीज रखणे लागानुं कुंण छै॥
ताहरां बोली पौज महाराज हुं राजा न
हु थकुं राज मनै जांणौ छै पण लोक
विवहार रखौ छा॥ हुं त्रेता युग विषै
राजा थौ राज करतौ सु मै धर्म बोहत
कीया जितरा धरतीरी धूडरा करण त्र्या
काशरा तारा इतरी गऊ स्वर्ण सींगी
रूपखुरी ताम्र पृष्ठी कांस्य दोहणी॥ व्रा
ह्मणां नै मै दीनी और हाथी घोडा रथ
मोती मांणक सोनो भूमि दान मै दीना॥
तालाब कूप बावडी मै कराया॥
धर्म घणा कीया पछै गाय १ ब्राह्मण
नै मै दीनी थी ब्राह्मण बूढो हुतौ
सु गाय उवै कना सुं छूटर म्हारी
गायां मै आय भेली हुई॥ पछै उवा गा
य मै बीजै ब्राह्मण नै दीवी॥ पछै
गाय ब्राह्मण लेनीसरीयौ अर आगलौ
ब्राह्मण सांमौ मिलीयौ सु आ कहै गा
य म्हारी अर उ कहै गाय म्हारी॥ दोनु
झगडता झगडता मै कनै आया॥

मै कह्यौ ब्राह्मण देवता हुं चूकौ गुनो मा
फ करौ ॥ एकै गाय सटै लाख गायौ
मै कनै और लेवौ ॥ ताहरां ब्राह्मणे बो
लीयौ राजा गायरौ मोल लेवै जि कौ
ब्राह्मण नही मोल लेवो तिकौ महा
पापी हुवै ॥ पछै बांमण नै कह्यो तुं
लै ताहरां उवै ही कह्योज मनै पिण
उतरो हीज पाप लागै ॥ दोनौ बांमणां
मै सरचै कोई नही मै तो घणा ही नि
होरा कीया पछै एक बामण गायले
गयो अर एक ऊभो रह्यो ॥ तिकौ मनै
पाप लागौ म्हारै मरण समै जमराद्
त आया ॥ मनै कहै ते मोले ही ब्राह्मण
रौ धन लीयो ॥ इहू मनै कीट कांटीयो
कर कुवै मांही नांखीयौ तरावरस कुवै
मांहि रह्यो हमै कलिजुग आयो मनै
थांहरौ दरसण हुवो म्हारो ओ स्वरूप हुवौ
मनै कृतार्थ कीयो ॥ घणी भांत करनै
जान हुय श्री कृष्णजीरी असतुति कर
डंडौत कर परिक्रमा दे ठिकाणौ गयौ ॥

पछै श्री कृष्ण जी आपरां लोकां नुं कह्यौ॥
देखोरे भाई बांमणरौ धन इसडौ हुवै छै॥
बांमण रौ धन कोई भोले ही मतां लेवौ
इयै भांत सुं घणां लोकां नुं समझाय
पछै दुवारका आया॥ इतरी कथा चौ
सठवैं ध्याय मै छै॥ ॥ इति श्री भागवते
महापुराणे दशमस्कंधे चतुषष्ठितमोऽ
ध्याय:॥ ॥ ६४॥ ॥ अठा सुं आगै पैंसठ
वै ध्याय मै आ कथा हुसी॥ श्री ब
लभद्र जी श्री कृष्ण जी नै कह्यो जएक
वार तौ गोकुल जाई जै मनै उवे
होडरी ओलु आवै छै॥ ताहरां श्री
किसन जी सुं विदा कर॥ अर बलभ
द्र जी गोकुल जी आया॥ नंद जी जसो
दा जी सूं मिलीया पगे लागा॥ पछै
नंद जसोदा छाती सुं लगायर मिली
या कुशल पूछीया॥ बलभद्र जी क
हण लागा कां म्हाने मोटा कीया
तै वेई कां सुं कितरी येक पडो ज क
रां॥ और श्री किसन जी जिकै समा-

चार कह्या क्या सु सारा कह्या ॥
ताहरां नंदजी जसोदा गोपांगना बो
लीया जु म्हांनै करै चितारै ही छै
भली हुई जेथ छै तेथ सोरा रहो म्हां
नै आगै सुष दीनो हुतो सु म्हे सुषी
था ॥ हमै दुष दीनो छै तो दुष सहां
छां जे की भांत राज रीष लै तिकी
भांत रहसां ॥ इयै भांत सुं घणा समा-
चार रषीया अर कह्या ॥ ता पछै
चैत्र सुदि १५ री रात्ति बलभद्रजी
गोपीगाना सु रास षेलीया ॥ जिके
गोपी श्री किसनजी सुं रास षेलीन
हुती तिके बलभद्र जी सुं षेली ॥
जिकी भांत श्री कृष्ण जी सुं
षेली हुति तिकी भांत श्री बलभद्र
जी सुं षेली सु षेली पछै थका हुवा ॥
श्री बलभद्र जी वारुणी पांन कीयो
हुतो अर गोपीगाना पिण वारुणी
पांन कीयो हुंतो सु पछै बलभद्र
जी बोलीयो जमुना अठै आवो

जल क्रीडा कीवी उवै ठौड जमुना
जी आपापिंवां की छै ॥ पछै बलभ
द्रजी भांत भांतरा सुख दिखाल
नंदजी जसोदाजी सुं विदाकर दुवा
रका जी आयी ॥ इतरी कथा पै
सठवे ध्याय मै छै ॥ ॥ इति श्री भा
गवते महापुराणे दशमस्कंधे
पंच षष्ठितमो ध्याय: ॥ ॥ ६५ ॥
अथ आगे छासठवे ध्याय मा है
आ कथा हुती ॥ कासी वाराण
सी रौ राजा पुंड्रक तिकैरै हाथ
४ तिकै श्री किसन जी कनै आप
रौ दूत मेलीयौ अर कहायौ जुं
जुं वासदेव कहावै छै तुं कुंण
माणस वासदेव तौ हुं छुं तिकै
रै च्यार हाथ छै बीजो वासुदेव कु
ण छै हुती थारौ नाव फेरनही
तर तनै मारसुं का म्हारै शरणै आ
व ॥ अर वासदेव नाव छै सु दूर
कर अर नाव फेर नहीतर खबरदार

हुये आवुं छुं ॥ उतरी वात दूत सोवे कहाई ॥ राजा जरासिंध शिशुपालरो मित्र हु तो तिकै वासते अर बलभद्रजी उणांरै वडो जोधो छै सु गोकुल छै इंयै और श्री किसनने मारुं आजां रा दूत मेलीयो ॥ पछै जादवांरी सभा बैठी छै तिको जायन दुत आय उभो रह्यो तिकुं राजा कुं दंडक कहाडीयो थो सु कह्यो ॥ ताहरां सारा राजा दुत नै हसीया दीसै छै दुरंड करी मोत आई ॥ सारा दुत नै हसण लागा ताहरां श्री किसनजी बोलीया ॥ दुत नै मतो हसो चाकर नै जिकुं ठाकुर कहै सु कहै ॥ पछै श्री किसनजी दूतनै कह्यो तुं जा थारै राजा नै कोह कि किसन आवो ॥ कह्यो छै थारा चिन्ह हुं दूर करुं जिकां चिन्हां रो तूं

गुमांन करै सु हुं दूर करूं ऊपर तनै मारूं॥ इण री बात दूत नै कही पछै दूत द्वारका सी रायो जिकुं कह्यो सु आंगे कह्यौ॥ पछै श्री किसनजी कटक एकठो कीयो कर द्वारका सी आया॥ पुरंडक राजा नै खबर हुई मांह रां दोय खोहण लसकर साथे लेर च्यार कोस सांमौ आयो॥ पछै वांसीया सुं पुरंडक री प्रधांन लषम ण तीन खोहण लसकर लै आयौ॥ पछै श्री किसनजी रै लसकर ऊपर छूटा नै जासै हाथी गदा षडग गोफण भां त भांतरा आयुधारां प्रहार हुवण लागा वडो जुध हुवौ॥ पछै श्री किसनजी पुरंडक राजा नै दीठौ सु च्यार भुजा माथै मुकट छै मकरा कृत कुंडल छै वैजयंती माला-इसडा चिन्ह दीठा॥ ताहरां सातक जादु नै श्री किसन जी कह्यौ दे खौ जी उयै री रूप॥ पछै पुरंडक राजा नै कह्यो॥ तुं तत चीर

थारो गुमान भांजुं जिकां चिन्हा रो तुं
गुमांन करै छै तिकै थारा चिन्ह हुं
दुर करूं इतरी कही पछै श्री कि
सनजी धनुष समायर पुरंडक राजा
रा हाथ काटीया ॥ रथ काटी यो
सारथी मारीयो घोडा मारीया पछै
माथो काटीयो ॥ सु माथो पुरंडक
राजारो मालका मा है जाय पडी यो॥
पछै पुरंडक राजारी असत्री राजा
रो माथो देषर रोवण लागी त्राहि
त्राहि करण लागी ॥ पछै श्री कि
सनजी बीजो लसकर प्रधान
सारा मार वाणारसी मा है आया
प्रजा नै लुंट वित्त माल ले नगारा
वजावजा संषनाद करता दुवार
का आया देवतां पोहपां री वरषा
कीवी ॥ पछै पुरंडक राजा रो बैटो
हुतो तिकै विचारी ॥ किसन नै
मारूं वैर लेऊं तो नगर मा है पैसुं
तो हरां दी नैज किसन सुं तो पोहचुं

नही ॥ ताहरां आपरो गुरु साचेले महादेवरी तपस्या करी महादेव वर दीनौ वाम मारगरौ अर दक्षण मार गरौ मंत्र सिषायो इव होम कर आ रो दुसमण दुर हुसी ॥ अर जिकै ब्राह्मणरै सेवग हुतो तिकै नुं कुछ हुतो नही ॥ अर बीजां नुं दुर क रतो पछे पुरंडकरै बेटै मित्रां स हित होम कीयो ॥ ताहरां अगनि माहे एक पुरुष उठीयो जैरै तीन नेत्र तीन पग सागी अगनि प्रगट हुवो ॥ ताहरां पुरंडकरै बेटै कह्यो दुवारका बालतां ताहरां अगन दुवारका आई सु अडतालीसां कोसां माहे दुवारका नगर हुतो सु च्यारांही पासां अगनि लागी सु लोक त्राहि त्राहि कर लागा ॥ श्री किसनजी तांई षबर हुई ॥ श्री किसनजी कह्यो जु पुरंडक रै बेटै नै महादेवजी वर दीनो छै ॥ ताहरां सुदरसेन नै आग्या दीनी ता-

रौ पुत्र सांबनावै हस्तना पुर गयौ॥ राजा रा एकठा हुवा छै॥ दुर्योधनरी कन्या लक्षमणरै हाथ माला दीनी छै॥ स्वयं वर रचीयौ छै सारा राजा बैठा छै॥ उतरै मिच्यालै सांब उठ लक्षमणरौ हाथ पकडर रथ ऊपर बैसाणी॥ अर रथ चलायौ ताहरां दुरयोधन क्रोध कर बोलीयौ॥ बांधौरै सांबनै बांधौ औ इसडौ जो रावर हुवौ म्हांरी कन्यां पकड ले जावै इयै नुं बांधौ जितरै कोइक बोल उठीयौ॥ औ जादव छै ताहरां दुर्योधन बोलीयौ जादव छै तौ कासुं हुवौ म्हांरी धरती मांहै म्हां राखीया छै॥ हमै वडा मांणस हुवा सांब नै बांधौ॥ अर पछै सारा जादव आसी तौ पण भुंडी भांत कर मेलसां॥ वपडा जादु कुण छै आपां कनै तौ इंद्र जीत सकै नही॥ जहारै कटक मै है भीषम द्रोणाचार्य अश्वथांमा कर्ण भगदत्त भूरि श्रवा दुःसासन दुर मुख दुर्योधन अर्जुन भीव सहदेव नकुल इसडा जोधा तिकां सुं बां पडा जादु बरबरी

करै इतरि कीहर सांबरै पाछै दोडीया॥
सु सांब कितराहेक तौ जोधा मारीया पछै
निठ निठ सांबनै पकडर बाधौ॥ पछै श्रा
बबर दुवारका श्राई ताहरां बलभद्र जी क
ह्यौ कटकरौ काम कोई नही हुं जाईस
समझायर ले श्राईस ताहरां रथ बैसर ह
स्तनापुर श्राया॥ उधवनुं साथै लेर श्राया॥
श्रौर जणं ४-च्यार प्रमांणी कमांणस सा
थे ले श्राया॥ श्रौर बाग मांहै उतरीया उ
धवनै श्रागै मेलीयौ॥ कह्यो बलदेवजी
श्राया छै ताहरां दुर्योधन श्रादिलै सारा
कैरव बलभद्र जी रै सांमा श्राया॥ वडा
श्रादर पूजा कीजै जिण भांत पूजा
कीवी॥ मिलिया कुशल पूछीया सारा
कौरव बैठा छै॥ कर्ण दुर्योधन श्रादिले
बैठा छै॥ताहरां बलभद्र जी बोलीया श्री
किसन जी थांनै चितारै छै॥ पण एक
धोखो घणौ करै छै॥ जु कौरवां म्हारौ
पुत्र गुमांन कर बाधौ सु श्रा बात
कौरवांनु न चाहीजै॥ सांब तौ मुंडै कांम

कीयौ ॥ पण आपर तो श्री कृष्णजी रौ
पुत्र हुं तौ थां एकठे हुयर बाधौ सु थां नै
बांधणौ न हुतौ ॥ जो थानै बांधी यै
सुं मरण भलौ अर थां घणं भेलां हुयर
एकै नै बाधौ तौ कासुं हुवौ ॥ इयै वा
तरी थांनै सोभा नही ॥ इतरी वात
बलभद्र जी कही तालरां सारा कौरव
बैठा हुता तिके कपडा काड ऊठीया ॥
कहण लागा पगांरी पैजार हुती ति
का माथे चढी ॥ थांह रैदी करौ इसडौ
हुवौ जोरावर हुवौ तिकौ मांहरी कन्या
जोरावर ले जाती ॥ म्हौरी धरती मै
राषीयांरौ फल हुवौ इतरी वात कर
सारा ही ऊठीया ॥ बलदेव जी बैठा रह्या
किरोध कीयौ उधव सुं कहण लागा ॥
दीठौ जी कौरवांरौ तमासौ कृष्णजी
सु वैर भाव राखै छै ॥ तिकै नुं इंद्र महा
देव वरण कुबेर सारा नमस्कार करे छै ॥
हुं पिण उवांरा चरण माथे ऊपर राखु छुं
तिकां सु उवै वैर भाव राखै छै ॥ पछै

बलभद्र जी कह्यो हुं सारां नुं मारी
स राखुं नही ॥ ताहरां हल सुं हस्तना
पुर उठायौ सारां नुं जमना मांहि छो
डीस ॥ जिसडै उआयर उंधौ करण
लागो तिसडै लोक कांपण लागा
नगर उंधौ हुवे है कंप हुवौ ॥ तिसडै
लोकां कह्यौ बलभद्र जी कोपीया नगर
छोडै ॥ ताहरा सारा कैरु धृतराष्ट्र गां
धारी आदि सारा बलभद्र जी रै
पगै पडी याज महाराज म्हांरा
ज नुं न जांणीया ॥ राज अनंत छो
जि कां रै एक फण ऊपर पचास को
डि धरती छै तिकै राज छो मानै गुन्हो
५ माफ कीजौ ॥ सांबनै अर सांबरी
अस्त्री नै पला बांधा आंण दीना ॥ औ
रावलो पुत्र अरं आ रावली बहुलीजै ॥
अर म्हांनै गुन्हो माफ कीजै ताहरां बल
भद्र जी बोलीया ॥ पे तौ म्हांरा वडा सगा
छौ प्रीतम छो ॥ पछै शुकदेवजी कही हस्त
ना पुर बलभद्रजी हल सुं उठायौ हुतो सु

अजेस अंधौ छै ॥ पछै दुर्योधन बेटीनै
दायजौ दीनौ ॥ दस हजार तौ हाथी दस हजार घोडा ॥ पांच हजार रथ एक हजार दासी ॥
औौ ही घणा धोक गहणा वित दीना कन्या
ह लाइ ॥ पछै बलभद्रजी भतीजै नुं भतीजै
री बहु नुं लेर दुवारका आया ॥ लोकां मां
है षबर हुईज बलभद्रजी इसडौ पराक्रम
कीयौ कथा पडसठवै ध्याय मै छै ॥ ।
॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम
स्कंधे अष्ट षष्ठितमोऽध्याय: ॥ ॥ ६८ ॥ ॥
आगै गुणंतरवै ध्याय मै आ कथा हुली ॥
नारदजी बात सुणी श्री किसनजी भोमा
सुर मार सोलै हजार एकसौ आठ कन्यां आंणि ॥
अर आठ और परणी सु नारदजी रै मन मै
संदेह आयौ जु इतरी अस्त्रीयां सुं किसी
भांत रमै छै ॥ ताहरां नारदजी दुवारका
आया ॥ श्री किसनजी रै नव लाष मिंद
र छै सु रतन जडित छै ॥ एक एक घर
मांहै दोय दोय महल छै ॥ ताहरी भांत
भांतरी सोभा सोभा छै तै रौ वर्णा घणौ

माफ कीजै म्हारी आबुद्धि हुईज हुं
रावली मायारो विसवास करणेहा
जो॥ हमै म्हारी आबुद्धि रहैजु सदा
रावलो सुमिरण करूं॥ अर रावलो
जस वाणी लीयै गावतो रहूं ताहरां
श्री कृष्ण जी कह्यौ॥ नारदजिकुं करूं
छुं सुं हुं करूं छुं पे थांका हुवा छौवि
श्राम लेवो॥ ताहरां नारदजी डंडौतकर
त्रिकाला गया॥ पछै राजा परीक्षितनै
शुकदेवजी कही परण ब्रह्म श्री किसन
जीरी आ लीला नाररजी दीठी॥ और
पेण घणौ विस्तार छै॥ इतरी कथा
गुण अडसठवै ध्याय मे छै॥ ॥ इतिश्री
भागवते महापुराणे दशमस्कंधे एकोनस
प्ततितमोऽध्याय:॥ ६९॥ ॥ अब आगै
सतरवै ध्याय मै आ कथा हुती॥ श्री किस
नजी नित्य कर्म दह क्रिया सदा सर्वदा जि
की भांति रहै छै जिको जगतनै जतावणी॥
नित्य प्रति इयै भांत रहै छै॥ वांसली रात
घडी च्यार ४ रहै ताहरां श्री किसनजी उठ

सारी तयारी करै ॥ कुकड़ौ बोलीयौ रश्री
किसन जी ऊठण लागा ॥ ताहरां पति
व्रता स्त्री बोली महाराज ऊठण देऊ नही ॥
पछै श्री किसनजी ऊठीया देह कृत की
यौ ॥ पछै स्नान सांपडौ कीयौ पछै
जपरी शाला मे बैठ जप कीयौ ॥ पछै
अग्निहोत्ररी शाला मै श्राय अग्नि
होत्र कीयौ ॥ पछै गोदान करण बैठा
सु चवदै लाख गायां ब्राह्मणां नै दी
जै नित्य विधि सु सौ वन सींगी रूपा
खुरी दीजै छै ॥ पछै घृत मै मुख देख र
दान कीया ॥ पछै वागौ वणायौ पछै
भोजन कर रथ मगायौ ॥ दालभ्य सा
रथी रथ ले आयौ ॥ पछै ठाकुर रथ
बैसर बाग पधारीया ॥ अथ जाय र
सभा जोडी बैठा सु एकै पासै उद्धव
बैठौ एकै पासै सात्विक जादव बैठौ
बीच मधुनायक श्री कृष्णजी बैठा ॥ रथ
ऊपर बैठा बाग पधारीया सभा जोड बैठा
हुता ॥ जितरै एक बांभण आयौ श्री कि

सनजी पुछीडीयौ जांण तां हीज ॥ ताहरां
बांमण नै पुछीयौ तूं किब आयौ छै
ताहरां बांमण कह्यौ जरासंध जोरावर
हुवौ सारी पृथ्वीरा राजा पकड पकड
बांधीया छै॥ बंदी वांनै दीना छै सु मनै
श्री किसनजी कनै मेलीयौ छै सु हुं
राजवीयांरौ मेलीयौ इत आयौ छुं
राजा हुंता छूटां ॥ राज धरतीरौ भार
उतारण नै अवतार लीयौ छै सु महांरी
सहायराज करसौ ॥ इतरी वात बांमण
कही जितरै मै श्री नारदजी आया ॥ ता
हरां श्री किसनजी नारदजी रै पगै ला
गा पछै आपरा पासे वांण नुं आज्ञा
दीनी ॥ ये नारदजी रै पगै लागौ ताहरां
सारा नारदजी रै पगै लागा ॥ आसण
दे नारदजी नै बैसारीया पछै नारदजीनुं
श्री किसनजी पुछीयौ ॥ महाराज ये
तीन लोक मै फिरौ छौ सु त्रै लोक मै
कुसल छै ॥ ताहरां नारदजी बोली
या महाराज विनी तीन लोकरौ कुसल

कुण रहै छै ॥ राजा जुधिष्ठिर कहै छै म्हांरै यज्ञ छै पण श्री किसनजी आयां बिना न हुवै आपां पार पडसी ॥ जुधिष्ठिरै दर्ब घणौ जोडीयौ द क्षिणरी दिश तौ भीम सेन जीती ॥ उतरी दिसा अर्जुन जीतौ और पूर्व दिशा जीती द्रव्य घणौ हुवौ सु राजा कहै छै यज्ञ करसीस सु थांनै तेडीया छै थां पधारीयां यज्ञ पार पडसी ॥ इतरी बात श्री किसनजी आदि सारां जादवां सुं सुणी ॥ ताहरां श्री किसन जी सभा जोड मसलत करण बैठा कासुं कीजै राजी वी सारा बंदी थांनै छै ॥ अर उवांरा तेडीया गया पणजो हुजै ॥ अर हस्तनापुर जासां नही तौ जुधिष्ठिर बुरो मांनसी कासुं कीयौ जोईजै बलभद्र जी नै पूछी यौ ॥ ताहरां बलभद्र जी बोलीया जुधिष्ठिर यज्ञ करसी तो जुधिष्ठिर रै देश मै इंद्र मेह करसी ॥ अर आपणौ

सीस पाल सारी ओ वैरी छै ।। आ पां
उवां अपर जासां राजवीयां नै छोडासां ।।
ताहरां श्री किसनजी उद्धव सां मां जो
यो कासुं कीयो जोइजै ।। ताहरां उद्धव
कह्यौ महाराज बलदेवजी कह्यौ सु
करौ ।। ताहरां श्री किसन जी कह्यौ ।।
उद्धव थांरै चित्त मै आवै सु कहौ
ताहरां उद्धव कही मनै रूचै तौ
हस्तनापुर चालौ ।। शिसुपालनुं
सो गुना माफ राज बकसीया छै
रूवीरै कहै सुं शिसुपाल जायौ
तद सुं राज सु यज्ञ विषै जावौ ।।
ताहरां थांहरी रूवा कह्यां छै सु
सो १०० गाल्यां शिशुपालनै माफ कर
जोला पछै गुनौ करै तौ मारज्यो सुं
लिकां गुनां माहें तौ अजेस एक ही
गुनां शिशुपाल कीयौन छै सु शि
शुपालनै कीती भांत मारसौ तै सुं हस्त
ना पुर चालौ ।। उंधा सिसपाल ही आसी
सारा थोक करसां ताहरां श्री किस

न जी सत करि मांनी ॥ बलभद्र
जी नै कह्यौ आ बात उधव कहै
छै ॥ ताहरां बलभद्र जी कह्यौ थां
हरै चित मै आवै सु करौ ताहरां
बलभद्र जी नै दुवारका राषीया
अर श्री किसनजी हस्तनापुर
चालीया ॥ इतरी कथा सत्तरवैं अध्या
य मै छै ॥ ॥ इति श्री भागवते
महापुराणे दशमस्कंधे एकसप्त
तितमोऽध्याय: ॥ ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ अथ
आगै इकतरवैं अध्याय मै आ कथा
हुवी ॥ श्री किसनजी हस्तनापुर
चालीया ॥ बीजा सारा ही प
लीया ॥ पे सिसपाल वैरी अपर
हालौ छौ तौ वैरी नै मारीयौ
भलौ छै अर उधव जी नारदजी
कह्यौ थे हस्तनापु हालौ ताहरां
श्री किसन जी विचारी ॥ ताहरां
नारद जी उधव जी भली कही छै ॥
उठै यज्ञ मै सारा ही आय भेला हुसी

साथ लैर सामौ आयौ युधिष्ठिर सुं
मिलिया भीव अर्जुन पगै लागा॥
श्री किसनजी उठाय उंचालीया छाती
सुं लगाय नकुल सहदेव पगै लागा
बीजाही सारा जथा जुगत सुं मिलीया॥
पछै रजा कर नगर मै पैठा घर घर
री अस्त्री पुहप वर्षा करण लागी
अर आप आप मै अस्त्री कहण
लागी॥ धन्य उवै अस्त्री जिकांरै श्री
कृष्ण जी भरतार छै पछै श्री कृष्णजी
राज लोक मांहै पैठा॥ ऊतौ ढोलीयै
ऊपर बैठी हुंती उठर साम्ही आई॥ श्री
किसनजी पगै लागा कुंती उंचायर
मिली॥ आ सुं नवार चलण लागा
पछै सुभद्रा श्री किसनजीरी बहन
तिका मिली॥ पछै द्रौपदी आदि
सारी बहुवां श्री किसन जीरां पगैला
गी पछै बीजा सारांही नै जुहार की
या॥ पछै श्री किसनजीरा मोहल रु
कमणी सु आदि लेर आठ पटरांणी

अर बीजी सारी अस्त्री राज लोक सा
रौ मिलनी यौ पुली हुवौ ॥ पछै पांडव
वनरौ दाह कीयौ ॥ अगन नै अ
जीर्ण हुवौ ताहरां श्री किसनजी कनै
आयो थौ सु कह्यौ महाराज हो मनै
यौ थो सु आहुत घणी दीवी ॥ सुमनै
अजीरण हुवौ ताहरां श्री किसनजी
कह्यौ अर्जुन कनै जावौ ताहरां
अग्नि अर्जुन कनै आई कह्यो ॥
महाराज मनै श्री किसनजी थां कनै
मेलीयौ छौ ॥ ताहरां अर्जुन पांडव
वनरौ कोस बारै माहे दाह करायौ
छै मय दैत्य रहतौ हुतौ सु उणरी
ठौड राषी बीजौ वन सर्व बाली
यौ ॥ पछै श्री किसनजी सिकार जावै
बेलै बाग जावै ॥ इयै भांत श्री कि
सनजी छ मास तांई हस्तंना पुर रह्यो ॥
औरही विस्तार घणौ छै ॥ इतरी कथा
इकतरवै ध्याय मै छै ॥ ॥ इति श्री भा
गवते महापुराणे दशमस्कंधे सम्पू

तितिमो ध्याय:॥ ॥ ७०॥ ॥ अठा सु आगै बहतरवै ध्याय मै आ कथा छै श्री किसनजी अर राजा युधिष्ठिर च्यारां भायां समेत सभा जोड बैठा छै॥ ताहरां राजा युधिष्ठिर बोलीयौ॥ महाराज श्री किसनजी थांसुं म्हांरी एक वीनती छै॥ म्हारै द्रव्य घणौ एकठौ हुवौ सु थांहरै प्रसाद सुं भीवजी तौ पूर्व दिसारौ द्रव्य जीत ल्यायौ॥ अर्जुन उत्तर दिशारौ द्रव्य जीत ल्यायौ॥ नकुल पश्चिम दिशारौ द्रव्य जीत ल्यायौ॥ सहदेव दक्षिण दिशारौ जीत ल्यायौ सु द्रव्य घणौ एकठौ हुवौ॥ अर मनै म्हारा भाई कहै छै इतरौ द्रव्य किसै कांम इयै द्रव्य सुं राजसूय यज्ञ करौ॥ अर श्री किसनजी सुं यज्ञ पर पडै॥ इतरी वात राजा कही ताहरां श्री किसनजी बोलीया॥ राजा धन्य तुं तिहारै इतरा द्रव्य छुडीयौ॥ अर इस डौ जुं राजा तिकैरी आ बुधि सु तुं धन्य

छै ॥ और तुं धन्य छै जिकैरै इसडा अ्पा-
ज्याकारी भाई छै ॥ सु थे यज्ञ करण
मै समर्थ छौ ॥ पण एक वात छै सारी
धरती भरत खंडरी वस कीवी पिण ज
रासंध जीतौ नही ॥ अर एक ही राजावि
नां जीतां राज सूय यज्ञ हुवै नही ताहरां
राजा युधिष्ठिर नीचौ माथौ घातवै
हो ॥ ताहरां श्री किसनजी बोलीया चिं
ता मत करौ ॥ मनै उधव पहली हीज
कही हुती जरासंध विना जीतां यज्ञ
न हुसी पण जरासंध सुं कटक की
यांजी पांन ही ॥ एकसो बाहण एकठी
हुवे तौ पिण जीपसां नही पिण एक
उपाय करसां श्री किसनजी अर्जुन
भीवसेन अै तीन जण ब्राह्मणरै रूप
कर जरासंध कनै जासां अर जाचना
करसां जपरै अंतजासां उवै वेला नाका
रै करसी नहीं ॥ थे जाणसौ ऊनाकारौ
करसी सु क्षत्री उवै वेलारी जाचना कीयां
नाकारौ करसी नही ॥ अर जाण सौ

जरासंध थानै ग्रल घसी ॥ जु जरासंध ब्राह्मणां रौ भक्त छै ॥ राजा बल नै लोकां किनरौ पालीयो पिण बलराजा जाणवैराणन कारौनकायौ ॥ तिनजरासिंध पिणउण विरीयांरी जाचना कीवी जुधना कारती नही ॥ इतरी कहै श्री किसनजी भीवजी ग्रर्जुन ब्राह्मणांरौ वेश कर जरासंध कनै गया प्रभातरै समै काटरै बारतै जाय ऊभा रह्या कोटरा स्वर्णमय किवाड़ जडीया छै ॥ ताहरां जांणीयौ जपरौ समय टलौ ग्रर किवाड़ मोडाखुलसी ॥ ताहरां भीवसेन कीवाडांरै ठोकर मारी ॥ सु किवाडांरा टुकडा पचासांकोसां जायर पडीया ॥ पछै तीनै जणा कोट मांहै पैठा ॥ प्रोलीयां नै कह्यौ राजा नै खबर देवौ ॥ तीन ब्राह्मण ग्राया छै सु भिक्षा मांगे छै ॥ प्रोलीयौ खबर दीनी ताहरौ जरासिंध बडोउपहरीयां ऊभौ हुतौ कह्यौ बांभणां नै ले डौ ताहरां

रै तीनै जण जावउभा रह्या ताहरां ज
रासंध बोलीयौ थांनै मै जांणीयामै
सुं के लस कर जी पण पावौ नही ॥ अर थे
छौ सु मे जाणीया थांहरै मागतौ है सु
थे मागौ ताहरां ॥ श्री किसनजी बोली
या म्है तै कन्है युध मागौ छौ म्है क्षत्री
छौ ॥ म्हांमै एकतौ भीम छै एक अर्जुन
छै ॥ अर हुं इयां रै मामैरौ बैटौ भाई
छुं थां कनै युध मा गां छां ॥ ताहरां
जरासिंध बोलीयौ लसकर कर विढता
तौ थांनै भली भांत समझावतौ पण
हमै थां मै कनै भीष मांगी सु था
नै भीष देईस ॥ अवस युध करीस ॥
जे थां मां कनै भीष मांगी तौ देईस ॥
पण किसन तौ कालरै दिन मै कनैना
ठौ हु तौ तिकै सुं विढं नही ॥ अर
अर्जुन मैसु छौटौ तिकै सुं विढीयांरौ
धर्म नही ॥ अर भीवसेन छै तिकै सुं
युध करीस ताहरां सहर सुं बार
रंगभूमि कराई ॥ अर भीव कनै हथी

यार कोई नही ॥ ताहरां आपरै कोठार मांह सुं गदा दोय कढाई तांह मै एक जीव नै दीनी एक आप लीनी ॥ पछै रंग भूम उपर आय काछ कीवी हाथ मांहै डोरी लीवी ॥ मल वेढ सुं भिड़ण लागा गदारौ प्रहार होवण लागौ जैसा पर्बतांरी पांखां काटतां स बद हुवै तिसा सबद होवण लागा ॥ वि ढतां विढतां गदा तुटी पछै मूक्यां सुं भिढण लागा डील सुं रुधिर री धारा चाली एक सारीसौ युद्ध होण लागौ सु दिन २७ सताईस युध हुवौ ॥ ताहरां जीव सेन निसासौ भरीयौ ॥ ताहरां श्री किसन जी जांणीयौ जीवसेन थाकौ पछै जीव सेन श्री किसनजी सांमौ जोवण लागौ ॥ महाराज रावली सरण छुं ॥ जरासंध जोरावर म्हांरी गदा जरासंधरै लागै नही ॥ भै रावलौ छौ ताहरां श्री किसनजी तिण बेला लेर चीर नाखीयौ ॥ ताहरां जरासंध रा लोक सारा त्राहि त्राहि करण लागा

श्री किसनजी भीव सुं मिलीया॥ चुंबनकर
ण लागा॥ पछे जरासंधरौ माल किंत
रै हेक लीयौ अर कितरौ एक सहदेव
जरासंधरै बेटै नु दीयौ पछै सहदेव
नै टीकौ दे साथे लीयौ॥ अर राजवी
सारा बंदी बांनै हुता तिकांनै छुडाया
सारांनै आग्या दीनी॥ युधिष्ठिर रै
यज्ञ छै उठै सारा चालौ॥ ताहरां सारा
हस्तना पुर आया श्री किसनजी भीव
जी अर्जुन नींनै युधिष्ठिर कनै आया॥
खुसी हुवा अौर पिण विस्तार घणौ
छे॥ इतरी कथी बोहत्तरवै ध्याय मै छै॥
॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम
स्कंधे द्विसप्ति तमो ध्याय॥ ॥७२॥
अठ आगै तिहत्तरवै ध्याय मै आ क
था हुती॥ श्री किसनजी जरासंधनै
भीवसेन कना मरायौ॥ पछै राजवी
सारा बंदी बांनै हुता सु दाठीवधारी
थी सुनाईनु तेड सारैं नै मर्दन कराई
दाठी सवराई कपडा पहराया॥ राजवी

सारा वीर हजार हुता जिकै श्री किसनजी
सुं स्तुति करण लागा ॥ महाराज हमोंनै
जरासंध बंदी बांनै भलांनै दीया था तौ
म्हांनै थांहरौ दर्शन हुवौ म्हे कृतार्थ हुवा॥
हमै म्हे राज करौ नही ताहरां श्री कृष्ण
जी बोलीया थे राज करौ पिण म्हारौ
स्मरण राषौ ॥ अर गर्ब मती करौ पछै
राजवीयां श्री कृष्णजी री घणी अस्तुति
कीवी ॥ पछै सहदेव कनाराजवीयांनुं
वस्त्र ग्रहणा जिकै राजवीयांरा थाइला
राजवीयां नैं दराया ॥ राजवी साराअलं
कार पहर षुसी हुवा ॥ श्री किसनजी स
हदेव नै साथे ले राजवी सारौ साथेले
भीव अर्जुन नै साथ ले हस्तनापुर आ
या संष नाद कीयौ सारा षुसी हुवा ॥
श्री किसनजी आया राजा युधिष्ठिर
पूजा ले सारा सेवग आपरा साथे ले सा
मौ आयौ ॥ राजा स्तुति करी महाराज
थां विनां मांरा इसरा कारज कुण करै॥
जरासंध सारीष कुण मारै इयै भांतधणी

स्तुति कीवी ॥ इतरी कथा तिहत्तर वै
ध्याय मै छै ॥ ॥ इति श्री भागवते महा
पुराणे दशमस्कंधे त्रिसप्ततिमोऽध्याय:
॥ ॥ ७३ । अथ आगै चौहत्तर वै ध्याय मै अ
कथा हुसी ॥ श्री किसनजी भीवजी अर्जुन
जरासंध नु जीत हस्तना पुर आया ॥ रा
जा युधिष्ठिर हरषत हुवौ जु जरासंध
जोरावर थौ जुध करतौ भीव सेन लिग
सा लौ ॥ ताहरां श्री किसनजी सहाय
कीवी ॥ तिका जांण राजा युधिष्ठिर वार
वार श्री किसनजी री स्तुति कीवी ॥ ज
रा संध सारीषा सबला जाहरां हीज
मरै तांहरैं श्री किसनजी सहाय करैं
ताहरां मरै तिकै वासतै युधिष्ठिर घणी
भांत स्तुति कीवी ॥ पछै सबरौ दिन
जोयर राज सूय यज्ञ रौ आरंभ कीयौ ॥
सोनैरौ हल करायौ भूम सोधन कीवी ॥
कुंड मंडप बणायौ ॥ ॠषीश्वर सर्ब तेडै
सांरीयां वसिष्ठ दुर्वासा अंगिरा परशुरांम
और वडा वडा ॠषीश्वर नावजादीक आया

नाव घणां ऋषीश्वरां रा कह्या बीजा छोटा
मोटा ऋषि घणा आया ॥ राजवी सा
रा आया श्रीभाचार्य बैठा द्रोणाचार्य
अश्वथाम दुर्योधन बीजा आपरा सं
बंधी सारा बैठा ॥ सारां ऋषिश्वरां रा च
रण पखाल पूजा कर बैसांणीया ॥ श्री कि
सनजी आप यज्ञ करता मोत्का रातालि
के बैठा ॥ ओर राजा शिशुपाल आदि
लै सारा बैठा यज्ञ होण लागौ ॥ राजा
युधिष्ठिर द्रौपदी सुं पला बांध बैठा
छै भीवसेन चवर ढोलै अर्जुन छत्र ढा
ली यो ॥ नकुल सहदेव आगै ऊभा यज्ञ
री पूरण आहुति हुई यज्ञ पार पडी यौ ॥
ऋषीश्वरां नै दक्षिणा दीनी ॥ वणा कु
बेर ब्रह्मा जम सारा आया हुंता राजवी
आपरी वस्ती सुंघी आया था सारां ऋ
षीश्वरांनु संतुष्ट कर पछै राजवीयां नुं
पहरांवणी करणी करण नै राजा युधिष्ठिर
तयारी कीवी ॥ मन मै खटकली पहली
पहरांवणी श्री किसनजी नै करसां पिण

वीजां सारां लोकांनै पूछीयो ॥ पहली
पहरावणी कैरी करुं ए कै पासै वडेरा
श्री किसनजी बैठा सिरै ॥ अरबीजै
पासै शिशुपाल सिरै बैठो राजा कह्यौ
पहली पूजा कैरी करुं ॥ पछै करीस
ति कौ रीस करसी ॥ ताहरां ऋषीश्वरो
कह्यो राजवीयां कह्यो बीजां सारां क
ह्यौ पहली पूजा करो अर पहली
पहरावणी देवो सु श्री किसनजीनै दे
वो ॥ अर पूजा श्री किसनजीरी करो ॥
श्री किसनजी थकां कां कैनैं र छो
छो ॥ पछै सहदेव बोल उठीयो महारा
ज वे किसनजी थकां कै नु जो वो
छो थानै पूछणरो किसो काम
हुतो ॥ पूजा श्री किसनजीरी करोइ
तरी वात सहदेव कही ॥ ताहरां सा
रा राजवी ऋषीश्वर बोल उठीया ॥ सह
देवजी भली कही सहदेवनुं आहीज चा
हीजे ॥ अर भीव अर्जुन नकुल अबोला
बैसर रह्या ॥ राजा रुदै सु कासुं जांणै
छै अ मन माहै जांणे नीचो माथो

पाल बैठा अर. सहदेवजी अर बीजा
ऋषीश्वर अर राजवी बोलीया॥श्री
किसनजी री रजा करो॥ताहरां राजा
पहरावणी पूजा सामगरीले श्री कि
सनजीरी रज पहरावणी कीवी॥ता
हरां शिशपाल बोलीयौ॥ऊठजभी
रह्यौ इयै सभा मे बैसणौ भलौ नही
सारा मूरष छै ऋषीश्वर मूर्ष अर राजा
युधिष्ठिर पण मूर्ष छै॥म्हारीन करै
अर किसनरी रजा करै राजा महा
मूरष किसन किसौ वडौ माणंस अहो
रांरी ग्रोठरौ षावण हारो॥ कठै ही
जायौ कठै ही ऊपनो तिको किसौ मा
णस तिकैरी रजा करै॥ इयै भांत
शिशुपाल भुंडा वचन कह्यौ॥एकलौ
भुंडा वचन कह्यौ॥ताहरां सारारा
जवी क्रोध कर ऊठीया म्हे शिशपाल
नुं मारसां॥श्री कृष्ण इण वास तिकै
नुं शिशपाल निंरारो वचन कहै॥
ताहरां राजवी युद्ध करण ने ऊठीया॥
ताहरां शिशपाल पण षडग ले ऊठीयौ॥

ताहरां श्री किसनजी सुदरसेन चक्र चला
यौ तिकै शुं शिशपालरो शिर कट पडी
यो ॥ शिशपालरी स्त्री बीजा शिश
पालरा साथी हाहा कार करण लागा॥
शिशुपालरै शरीर माहे अगनरो बंघूलो
नीसरीयौ आकाश चढीयो वैकुंठ गयो॥
आगै वैकुंठ सूनो पडीयौ ताहरां अगन
बंघूलो पाछो फिर आयो लोके सारे
दीठो अगनि जोति पाछी आवै छै
पछै॥ सारां मांणसां देषतां श्री किसनजी
रै मुष माहै लीन हुई॥ पछै सारै यज्ञ
मांहै शांत हुई॥ सारे लोकां नै पहरा
वणी कीवी॥ लोक सारा षुसी हुवा रा
जा वडो यज्ञ कीयो॥ देवऋषि व्रह्म
ऋषि सारा राजी हुवा॥ एक दुर्योधन
वैराजी हुवो देवतां पोइप वर्षा की
वी॥ इतरी कथा चौहतरवै ध्याय मै
छै॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे
दशमस्कंधे त्रियंसप्ततितमो ध्याय:॥ ७४॥॥
अथ आगे पिचतरवै ध्याय मै आ कथा

हुती ॥ राजा यज्ञ करणै कीयौ ऋषी
श्वरा नुं द्रव्य दीया ॥ रसोई नै सावधान
भीवसेन राजवीया नै आदर सनमान
देरां जवण नुं सहदेव हुवौ ॥ खरच दे
णौ दुर्योधन रै हाथ दीनो ॥ द्रव्य खा
ण देणौ पणौ दुर्योधन नु नकुल नुं की
यौ चारण भाट तथा बीजां नुं दांन
देण नै करणै नै कीयौ ॥ ब्राह्मणं भट
जीश्वरां देव भट्टां नै आदर सनमान
देणै नै अर्जुन हुवौ ॥ और दुशासन दु
र्मुख अर अश्वविकर्ण आदि बीजा सारा
ही उपर हाई राखीया ॥ भोजन पांती पांन
उपर राखीया भली भांत भोजन हुवौ ॥
सारां राजवीयां नै ऋषीश्वरां नै पहराव
णी दे आपरां घरां नुं विदा कीया ॥ पछै
यज्ञ पूरण हुवौ वैरी राजा स्नांन की
यौ ॥ श्री किसनजी झारी ले स्नांन यु
धिष्ठिर नै करायौ ॥ पछै द्रौपदी सुं
पला बांध्य सारै कुटंब और ब्राह्मण
साथे लेर पधैस श्री गंगाजी पधारीया ॥

सारां लोकां गंगाजी मै स्नांन कीयै
पछै राजा युधिष्ठिर पीतांबर पर गंगा
जी रै तीर बैस ब्राह्मणां नै फेर दांन
देण लागो ॥ पछै राजा आपरां सगा
सनबंधीयां बैहन सवासणीयां नै पह
रावणी कीवी ॥ भांत भांत रा वस्त्र ग
हणा दीया ॥ ब्राह्मणां नै द्रव्य दे रथ भर
भर घरै पोहचाया ॥ पछै राजा घरे आ
यो षांडव वन मांहै मय देत्य रीजायगा
हुती सु षांडव वन अग्नि बाली थो ॥
ताहरां बारां कोसां १२ मांहे मय दैत्य
री जायगा हुती तिका अर्जुन बालण
दीवी न हुती पछै मय देत्य अर्जुन ऊपर
प्रसन्न हुवो ॥ आबी तरै गस अर्जु
न नु दीनो पछै मय दैत्य री जागा बारां
कोसां मांहै हुंती ॥ तिकै ठौड सभा
रची ॥ महल रचीया तरै राजा रतन
जडित सिंगासण ऊपर बैठो ॥ च्यारै
भाई आगै ऊभा श्री किसनजी आगै
ऊभा ॥ द्रुपद राजा आगै ऊभो द्रोपदी

राजारै वांसै बैठी ॥ श्री किसनजी
स्त्री री १६ हजार एकसौ स्पाठ
लिकै पण मोहल मै स्पाई ॥ सारी
लुगाई गीत गावण लागी ॥ भा
ट [redacted] ारण राजा रा जस कहण
लागा पछै दुर्योधन उठै बोली यौ ॥
दुर्योधन हथीयार बांध धूप ढाल
गलै पै भाई १०० सौ साथ कर स
भा मै स्पायौ ॥ स्पागै युधिष्ठिर नुं सिं
गासण बैठो देखर दुर्योधन बोली यो
राजा तौ हुं कहाउं ॥ स्पो सिंघास
ण बैसै ॥ स्तरा दुष लोकां नैं देवै स्पर
म्हारो माल लुटावै छै ॥ पछै स्पागै
धरती करन मांहै रची हुती तिकै मांहै
पांणी नजर स्पायो ॥ स्पर पांणी हुतौ
तिका जायगा धरती जांणी ॥ दु
र्योधन नुं षबर पडी नही ॥ हथीया
रां सुधौ पांणीरै दह मांहै पडीयो ॥ ता
हरां भीवसेन हसीयौ कहै जं स्पां
धौ रै जाचंद हुवौ तो न्याय सांप्रत

पाणी तिकै मांँ पडीयौ इयै भांत
कहि भीम सेन हसीयौ जा हरांजि
तरी अस्त्री बैठी हुती तितरी सारी
हसी ॥ ताहरां दुर्योधन रीसांणे हु
वौ ॥ पांणी मांहि निसरीयौ कपडा
निचोया ॥ । मन मांहे प्रजलीयौ
नीचौ माथौ कर पाछौ चीरयौ ॥
श्री किसन जी भीवसेन नुं पाणी
यौ घो मुंडौ काम कीयौ हणीजे
नही ॥ पछै दुर्योधन घोडै असवार
हुय सौ भाई साथे कर आपरै
घरै आयौ ॥ सारा लोक कुकण
लागा बोहत मुंडौ हुई ॥ राजा दुर्यो
धन नै रीसायौ आपस मांहे वैर
बाध्यौ ॥ इयै भांत सरा लोक कहण लागा ॥
राजा युधिष्ठिर दीलगीर हुवौ ॥
भीम सेन बुरौ कीयौ ॥ आपस
मै उपद्रव उठीयौ शुकदेवजी राजा
परीक्षितनै कह्यौ इयै भांत इयै

रे दिन हुंता माहाभारथरी बीज
वाड्यो ॥ राजसूय यज्ञ हुवो तिके
मांहै वैर पडी यो दुर्योधन रीसा
यो ॥ इतरी कथा पिचतरवै ध्याय
मे छै ॥ ॥ इति श्री भागवते महापु
राणे दशमस्कंधे पंचसप्ततितमोऽ
ध्याय: ॥ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ अथ अगै छि
हंतरवै ध्याय मांहै आ कथा हुसी ॥
श्री किसनजी हस्तनापुर हुंता
विदा कर सारी सीख अर सोलै
हजार एकसो आठ अस्त्री दुवार-
का नै चालीया ॥ पछै राजा पं
चायण कहावै तिको चंदेरी रै
राजा शिशपालरौ मित्र जरासंध
रै मित्र ॥ तिकां प्रतीज्ञा कीवी थी
तारां श्री किसनजी रुकमणी
नुं ले आया तारां सालु शि
श पाल जरासंध साथै हुंता॥

ताहरां पाछो घीरीया हुंता ताहरां प्रतिज्ञा की
वी हुंतीज हुं जादु सारा मारीस दुवारका
बालीस मै ग्रा प्रतिज्ञा कीवी छै ॥ पछै
साल्ह राजा महादेवरी तपस्या ग्रारंभी॥
तीसरै दिन एक मुठी घुघरी बाय॥ इयैमां
त तपस्या वर्ष एक कीवी ताहरां महा
देवजी कह्यो वर मांग॥ ताहरां साल्ह
राजा कह्यो मनै ग्रजीत विमांण देवौ
जीकै नै वैरी जीत सगै नही॥ ग्ररु ग्रंत
रूप वहै कोई दैत्य देवता गंध्रब रा
क्षस कोई जीत सगै नही ईसडो विमां
ण देवौ॥ ग्रर जादवां नुं मारुं॥ ईसडा
वर देवौ ताहरां महादेवजी उसडौही
ज वर दीनो॥ ताहरां साल्ह ग्राय के
रक एकठा कर उवै विमांन वैसदु
वारका ग्रायौ॥ श्री किसनजी हुंता
नही जाणीयां म्हारौ दाव लागो॥ ग्रा
य दुवारका नगरी बालण लागौ ता
हरां राजा प्रद्युमनजी कनै ग्राय कु
की महाराज कुंवार श्री किसनजी घरै

नही खबर ॥ म्हे मारी जावां छां ॥ मांहां
री वाहर करौ ॥ ताहरां प्रद्युमन जी
हथीयार बांधर रथ बैसर कटक सा
थै ले साल्ह सांमा गया ॥ सात्विक
जादु साथे हुवो जाय साल्ह सुं युद्ध
कीयौ ॥ वडौ युध हुवौ साल्हरौ वि
मांण तणै मन नांमां तिको काहरे दीसै
काहरै न दीसै इसै भांत युध हुवणेला
गौ ॥ प्रद्युमनरै कटक नुं जोर पडीयौ
ताहरां प्रद्युमन रथ षड साल्ह ~~साल्ह~~
सांमौ दोडीयौ ॥ जाय घोडै नुं सारथी
नुं शर बेध कीया ताहरां साल्हरै सार
थी प्रद्युमन नुं गदा वाही ताहरौ प्रद्युम
न मूर्छित हुवौ ॥ ताहरां प्रद्युमन रो
सारथी रथ ले प्रद्युमन अचेत थकै
ने ले पाछो नीसरीयो घडी दोय नुं प्र
द्युमन सावचेत हुवौ कह्यौ रे ॥ सारथी
म्हारो रथ कठै ल्यायौ ताहरां सारथी
कह्यो ॥ महाराज थे मूर्छित हुवा ताहरां
थां नुं ले नीसरीयौ ॥ ताहरां प्रद्युमनजी

कह्यो तै रूडो कांम कीयौ ॥ तै जादवां
नुं कलंक लगायौ मनुं लोक हससी॥
भोजायां म्हारी अस्त्री नुं हससी ॥ इयै
भांत घणौ प्रकार प्रद्युमनजी सारथी
नुं रीसाया ॥ इतरी कथा छिहंतरवैध्या
य मै छै ॥ ॥ इति श्री भागवते महापुरा
णे दशमस्कंधे षट् सप्तति तमोऽध्या
यः ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ अथ आगै सितंतरवै
ध्याय मै आ कथा हुसी ॥ प्रद्युमनजी
सारथी नुं घणौ मांन रीसा यो तै बो
हत भुंडौ कांम कीयो ॥ श्री किसनजी
मनै कहसी सपूत नै कुवार का मै राष
आप हुता तिकौ नाठौ हमै म्हारौ रथ
ओथ लेजा ताहरां सारथी कह्यो ॥ महा
राज कुवार थे अचेत हुवा हुं कासुं
करुं ॥ ताहरां प्रद्युमन कह्यो सारथी
गदा लागी नुं मनै ले नीसरीयौ अर
मूर्छित हुवौ तौ कासुं हुवौ हमै चाल ॥
ताहरां सारथी रथ चलायौ युद्धभूमि
विषै गया ॥ आगै प्रद्युमन रो लसकर

रथ चलाय युध हुवै चौ तेथ आय शंख नाद कीयौ ॥ सु जादवां जाणी यौ साल्ह आयौ ॥ अर आया श्री कि सनजी देवतां जांणीयौ श्रो संखनाद कै उपर हुवौ ॥ धरती है कंप हुई साल्ह जाणीयौ श्री किसन आयौ मनै मारसी आ वात मन मै जा णी छुटं नही पछै श्री किसन संम्है साल्ह दोडीयौ ॥ श्री किसनजी नुं सहथी वाही ॥ ताहरां सहथी आव तीरा सब १०० षंड कीया ॥ ताहरां सा ल्ह श्री किसनजी नै सर वाह्यो ॥ ताहरां सर एक श्री किसनजी रीडावी भुजा रै लागौ ॥ ताहरां श्री किसन जी रौ सारंग धनुष हाथ सुं छुट प डीयौ ॥ ताहरा देवता लोकों दीठै वडौ इन्याव हुवौ ॥ श्रो दैत्य श्री किसन जी नै मारै ॥ पछै साल्ह नाचीयौ ज मै सुं काम छै तै म्हारौ मित्र शि सपाल मारीयौ छै कंस नै मारीयौ छै ॥

हमै तनुं छोडुं नही तनै मारुं अर थारो माधौ समद माहै घातुं तनुं छोडुं नही कदाच प्रद्युमन नाठो त्तिकौ भांत नासै तो छुटै नही ॥ तनै मारुं छोडुं नही मै सुं काम पडीयो छै इयै भांत सोल्ह गाजीयौ ॥ताहरां श्री किसनजी बोलीया अरे अधर्मी इयै भांत क्षत्री संग्राम मै न बोलै ॥ वडाई न कर जुं तौ अजेस जीतौ छै ही नही ता पहली ही जुं गाजै छै ॥ इयै भांततौ क्षत्री वचन न कहै छै तै कपट वि द्या लीई छै ॥ पण हुं तनुं मारुं थारो विमांण काटुं जुं ततधीरो इतरो कही श्री किसनजी एकसौ १०० सर सोल्ह नुं वाहया ॥ सोल्हरो सरीर शरो सुं छायौ सो नैहरी भुपरा सर सोल्हरै शरीर उप सोभण लागा सूरजरी किरण सारिखा सोल्ह दीठौ मारी जुं ॥ ताहरां विमाण बैठो सोल्ह अंतरध्यान हुय जयो दीसै नही ॥ ताहरां श्री किसनजी

कह्यो हुं छो सोल्ह कठै गयो सारा
ढुंढण लागा॥ दोय घडी वितीत हुई
जितरै एक मायारौ दूत आयो॥
श्री किसन जी आगै पुकारीयौ। महा
राज वसुदेव देवकीनै सोल्ह बांध
लीयां जाय छै॥ वसुदेव देवकीजी
त्राहित्राहि करै छै॥ ज्यौ कसाई बकरैं
नुं लीयां जावै ते भांत पकडले
जावै छै॥ इयै भांत दूत पुकारीयौ॥
तारां श्री कृष्ण जी रोवण लागा ने
त्रां सुं नबाह हुवा कहण लागा धि
कार म्हांनै म्हां बैठा माता पिता नै
इतरौ कष्ट इयै भांत धिकार बोवण
लागा॥ जितरै मायारा वसुदेव देवकी
कर रथ धमाहै बांध अर सोल्ह ले
आयो॥ वसुदेव देवकी त्राहि त्राहि
करण लागा॥ रे किसन हो किसन
म्हांनै मारै छै छुडाय पछै श्री किस
जी नै सोल्ह कहण लागा॥ थोरा
माता पिता बांधर आ लीया॥ अर

तै देषतां हि इयां रौ माथौ काटुं थिका
र तिकां पुत्रां तुं लिकै माईतां री आ
दसा देषै ॥ हमै तुं मारै क्युं नही इतरी
कही पछै वसुदेव देवकी माया रा का
तिकां रौ माथो काटीयौ देषर श्री किसन
जी मन मैं विश्वास आणीयौ ॥ देषै
तौ माया रची न कोई वसुदेव कोई देवकी ॥
कपट कीयौ आ जांण श्री किसन जी
बोलीया ॥ अरे कपटी तैं कपट कीयौ
हमै थारौ माथौ काटुं आ कहि पछै
च्यार बाणां सुं सील्हरा च्यार घोडा मा
रीया ॥ तीन शरां सुं सारथी मारीयो
तीन शरां सुं ध्वजा काटी ॥ पछै दशां
शरां सुं विमांण वेधीयौ ताहरां वि
मांण धुजीयौ धुज अपर समुद्र मांहै
पडीयौ ॥ ताहरां साल्ह जाय लै पाछौ
पोडी यौ र श्री किसन जी नै कह्यो ॥ हुं
पालौ छुं तुं पण रथ छोडता हरां श्री कि
सन जी रथ छोड नीचा उतरीया गदा एक
साल्ह री नरस मांहै वाही ते सुं मुष नासि

का मांहै रुधिररी धारा छुट पडीयां पछै जदा एक माचै मांहै नाही॥ सत १० बंड मायैरा कीया पछै चार एक माला कर नाख्यौ तिकै सुं माथौ काटीयौ॥मु कुट कुंडलों सूधौ माथौ दुर जाय पडी यौ॥ देवतां पोहप वर्षा कीवी॥जैत्र वाजीया वडौ काम कीयौ पछै दंत वक्रनै षबर हुइ म्हारै भाई सालू मारीयौ या षबर हुई छै॥ इतरी कथा सितंतर वै ध्याय मै छै॥॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे स सप्तसतितमो ऽध्याय:॥॥ ७७॥॥ अथ आगै इठंतरवे ध्यायमै आ कथा हुसी॥ राजा दंत वक्र अर विदुरथ दोनु भाई चढर श्रीक्र ष्ण जी उपर आया॥ श्री किसनजी पण साव चेत हुय सांमो आयो॥ताहरां दंत वक्र बो लीयौ॥ तै म्हांरौ मित्र सिसपाल पुंडरक सालू मारीया छै सु इयांरौ वैर आज हुं तै कन्है मागु आज तु नुं मारुं अर जमपुरी मेलुं तौ हुं दंत वक्र॥ तुं जांणै

मारीयौ अर हुं रह्यौ किसै कांम॥ ता
हरां विदुरथ बडगले सांमां दोडीयौ
ताहरां श्री किसनजी सुदर सेनचक्र
सांमां चलायो सुं विदुरथ रौ सिर काट
नाषीयौ देवतां पोहप वर्षा कीवी॥
वाजत्र वाजीया श्री किसनजी मन मांहै
विचारी॥ हमै तौ मे दुष्ट सारा हिम
णीया हमै हथीयार छोडीस॥ पछै दंत
वक्र मरतां जीसी शिसपाल रै सरीर
सुं अग्नि ज्वालारी जोत नीसरी हुती
तिसड़ी हीज दंत वक्र रै सरीर मे नीस
री॥ सु वैकुंठ गई फेर पाछी आई॥ वै
कुंठ सुनो दीठो ताहरां श्री किसनजी रै
मुष मांहै लीन हुई॥ लोकां देषतां शिशु
पाल अर दंत वक्र दोनु जै विजै पारषतरा
अवतार हुता सु श्री किसनजी मांहै लीन
हुवा॥ एक वार तौ हिरणाक्ष हिरणकशिपु
हुवा॥ बीजै वार रांवण रावण कुंभकर्ण
हुवा॥ तीजी वार शिसपाल दंतवक्र
हुवा॥ तीन वार रो शराप हुतौ पछै मुक्त

हुवौ ॥ पछै बलभद्रजी पृथवी पर
भ्रमा गया हुता सु नैमिषा:रण्य आ
यनीसरीया ॥ आगै सूत पौराणिक
कथा कहै छै ॥ अर सौनकादिकरी
षीश्वर सुणै छै सु बलभद्रजी आ
या ॥ ताहरां साराही ऊठ ऊभा हुवा ॥
नमस्कार कीयौ ॥ अर सूत पौराणि
क गादी बैठो हुतो सु ऊठीयौ नहीत
ताहरां बलभद्रजी नै क्रोध आयौ ॥
जु मै आयो ऊठीयौ नही गुमांन कीयौ ॥
ताहरां बलभद्रजी रै हाथ माहै डाभ
थो तिकै सुं सूतरौ माथौ काट नाषी
यौ ॥ रिषीश्वर साराही त्राहि त्राहि कर
लागा हाहाकार हुवौ ॥ बलभद्रजी
नै कहण लागा महाराज म्हां ईयै सू
त नै हजार १ बर्षरी आयुदीरो आसी
र वाद दीनौ हुतौ कथा सुणनरै वास
तै ॥ थां म्हांरौ आसीर्वाद कुडौ की
यौ सो म्हांनै कूण मांनसी ताहरां
बलभद्रजी लजीत हुवा मै बुरौ कीयौ ॥

ऋषीश्वरां नुं कह्यौ हुं कासुं करुं इयै
रुतरी माता तो व्राह्मणी ग्रर पिता
क्षत्री तिकै गुमान कीयौ तिकै नी
सतै मै मारीयौ ॥ हमै थे दुष पावो
छो तो हुं इयै नै जीवाडुं ॥ ग्ररम
नै प्रायछित दैनो सु हुं करुं ॥ ताहरां
ऋषीश्वरां कह्यो थे महाराज सारै थो
कै समरथ छो पिण हुं वणहार कहरै
हाथ नही ॥ कहि सै मुंवो जीवाडी
यो ॥ ताहरां सुतरै बैटै नुं टीकौ दे
ग्रासमणरी गादी बैसांणीयौ ॥ ग्रर
बलभद्र जी चक्र तीर्थ गया प्रायश्चित
निमित्त स्नान कीयो ॥ पछै फेर बल
भद्र जी नै मिषारण्य ग्राया ऋषीश्वरां
नुं कह्यौ मनै व्राह्मण हत्या लागी थे
कहौ सुं करुं ॥ ग्रर थे मनै कोई काम
कहौ सु करुं ताहरां ऋषीश्वरो कह्यौ
म्हांनै दैत्य दुष द छै ॥ पुनिम ग्रमावस
मै होम करां छां ताहरां म्हारां कुंडौ मै
मल मूत्र नांषजांवै छै कुंड मांज जावै छै
सु इणां दैत्या नुं मारो ॥ इतरौ म्हारौ काम

करो पछै के पृथ्वी परकमा फेर करी और पिण विस्तार घणो छै ॥ इतरी कथा इणंतरवे ध्याय मांहै छै ॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे ब्रज समुत्ति तिमोऽध्याय: ॥ ॥ ७८ ॥

॥ अठ आगै गुण्यासीयै ध्याय मे आ कथा हुती ॥ बलभद्रजी नै ऋषीश्वरां कह्यौ ॥ दैत्य वले छै तिकै म्हांनै दुख दे छै पे वले दैत्यां नै मारो ॥ ताहरां अमावस आई ताहरां दैत्य आयौ तै रे राती राढी सुं पहली तौ काव कांप आई पछै वांसै दैत्य आयौ ॥ ताहरां बलभद्र जी हल मूसलरो समरण कीयौ ॥ ताहरां हल मूसल आयौ ताहरां हलनसे मांहि घात दैत्य नुं मुसल सुं मारीयौ ॥ मायौ मांज नाषीयौ दैत्य मुवौ देवतां फुलां री वर्षा कीनी ॥ ऋषीश्वरे आशीरवाद दीयौ ॥ बलभद्रजी दैत्य मारीयां पछै तीर्थां गया ॥ ठौड ठौड तीर्थ घणा कीया विस्तार घणौ छै ॥

पछै कुरु क्षेत्र गया ताहरां जब रहु
ईज महाभारथ हुवौ कुरु वंस सा
रै मरण लागौ ॥ जण २ ताका छ
उबरीया बीजा सर्ब मुवा ॥ दुर्योधन
नुं भीवरै हाथ मराडी यौ ॥ परमेश्वरै
आ करणी हुती धरती रौ भार उतरी
यौ ॥ घडी एक दु चीता हुवा पछै अं
जली दीनी बीजौ विस्तार घणौ छै ॥
इतरी कथा गुण्यासीवे ध्याय मै छै ॥
॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दश
मस्कंधे एकोनाशीतितमोऽध्याय ॥ ॥
॥ ७९ ॥ ॥ अथ सु आगै असीवै ध्याय
मै आ कथा हुती ॥ राजा परीक्षित
जी प्रसन कीयौ शुकदेवजी नै जु म
हाराज श्री किसनजी रौ बीजौ ही
चरित्र कहौ ॥ ताहरां शुकदेवजी
बोलीया राजा चित्त दे सुणौ ॥ श्री
किसनजी रै एक सुदामा नाम ब्रा
ह्मण एक मित्र थौ ति कौ क्रियाधर्म
मै सावधान पण दरिद्री बांमण नै जु

डै नही ॥ तिकैरै ब्राह्मणी पतिव्रता
हुती तिकै कह्यो सांमी ॥ थांह रै
श्री किसनजी सारीषा मित्र थर वै
इत्तरौ कलेश पावौ तौ थे श्री कि
सनजी कनै जावौ ॥ उ विश्वंभर दे
व कहावै छै ॥ थांनै दूषा मारती
नही ताहरां सुदामा बोलीयौ षाली
किव कर जाउं ॥ क्युं भेट देवौ तौ
जाउं ॥ ताहरां च्यार मुठी अण छडी
यां चावलां री फाटी पोतरै पलै बां
धीया ॥ फाटां कपडां दल द्रुरी रै वै
स रात रौ मारग मै सुतौ थौ ॥ सुतौ
दुवार कां जागीयौ ॥ आगै सोळे
हजार एक सो आठु घर सुं वणी रा
देष खुसी हुवौ ॥ पछै रुकमणीजी रै
मंदिर गयौ सु रुकमणी जी पंषौ ढो
लै छै ॥ श्री किसनजी ढोल्यै बैठा
छै ॥ थर गैलै चकै सुदामा नै श्री
किसन जी आवतौ देषर श्री किसनजी
सांमां आया ॥ मिलीया आदर सनमांन

पछै दीनौ ॥ श्री किसनजी पग पखाली
या रुकमणी झारी नौडी विधि सु पूजा
कीवी ॥ सारी अस्त्री हसण लागी क
कीर बांमण नुं इतरौ आदर देवै छै॥
पछै श्री किसनजी सुदामा नुं पिलंग
उपर बैसाण पाछली वातां करवीयां॥
श्री किसनजी बोलीया ॥ आपां सेरी
पन कनै एकठा भणीया हुंता एकदि
न लकड्यां नुं गया था रात उपे रह्या
पछै मेह आयौ ॥ पछै गुरु गुराणी नुं कु
वीयौ थौ बालकां नुं मेलीया तुरां
कीयौ पछै गुरु आपणै सांमौ आयौ॥
पछै आपां नुं चवदे विद्या पढाई वि
स्तार घणौ छै ॥ आगल सागल घणी
कीवी बालीया पे परणीया छौक नही
पछै कह्यौ थांनुं उवै आगली वातां
याद आवै छै कनां नहीं ॥ ताहरां सु
दाम बोलीयौ महाराज हुं गां कवां
भणे राज ईस्वर छौ इयै भांत सुदामा
घणी वीनती कीवी ॥ पछै श्री किसन

जी बोलीया मित्र आज मै बहुत सुख पायौ छौ मित्र मिलीयौ इयै भांत घ णी पडौज कीवी विस्तार घणौ छौ॥ इतरी कथा असीवै ध्याय मै छै॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे असीतितमो ऽध्याय:॥ ॥॥८०॥ ॥ अ ठे आगै इक्यासीवै ध्याय मै आ कथा हुली॥ श्री किसनजी सुदामा ब्राह्मण सै हाथ पकड छाती सौ लगायौ॥ इसर छेली पै बैसरबातां रुचीयां सु अनेक रुचीयां॥ पछै कह्यौ म्हां नु भोजाई कयुं भेट दीनी छै कनां नही॥ श्री किसन जी जांण ताहीज रुठण लागा ताहरां बांभण बोलै नही ताहरां श्री किसनजी पला जोया॥ ताह रां फाटी धोती मै छो हडै अण कुटीया चावल लीधा ताहरां श्री किसनजी आ प मुठी भर लीवी॥ कहण लागा के म्हां सु छिपाया था प्रीति सुं देवै तौ म्है थोडे रा जी॥ ताहरां चवलां री मुठी

अर श्री किसन जी मुष माहै चाली ।। बोली या तीन लोक नृपति हुवा बो जी मुठी भरी ताहरां लषमी जी हाथ पकडी यो ।। महाराज थां तीन लोक री अदिघ दी नी हुमै मनै देसौ ।। ताहरां बो जी मुठी रा चावल षावण दीया नही ।। पछै सुदाम सुं बहुत हित कर विदा दीनी सुदामा जी घरे आवै छै मन माहै चीतावै छै हुं घरे कासुं जाईस ।। मै क्युं मांगीयो नही अर श्री किसन जी दीनै सु जांणीजे हीज छै ।। श्री किसन जी मन माहै आवील जांणी ।। द्रव्य देई स तौ मनै वीसर जासी ।। आ जांणम नु दीनौ क्युं नही आपरौ भक्त जाणी यौ पण भली हुई ।। मनै दर्शन हुवौ हुं हुलीयो हुवौ ।। इण भांत संकलप विकलप करतौ आपरै घरै आयौ ।। आगै देषै तौ घर मै छांन हुती ।। नेष कै ईसौ नैरा मिंदिर छै अनेक भांतरा, ताहरां जाणीयो म्हारै पि सु जागा कही

लीवी अर घर करावा ॥ इयै भांत सुं चिंता करैं छै तितरैं मैं सुदामारी अस्त्री सोले सिंगार कीयां अनेक सखी साथे लेर सुदांमां सांमी आई कहण लागी ॥ स्वामीओ घर थांहरी छै हुं थांहरी अस्त्री छुं ॥ आपांनै श्री किसन जी सुं संतुष्टमांन हुवा ॥ तांहरा सुदामा घर मांहे आयौ अनेक रतनां सुं जडत घर छै ॥ ढोलीयौ हीं डोला वट सुं कसीयौ छै ॥ सहस्त्रावधि दास दासी आगै ऊभा छै ॥ बाग बगीचा अनेक भांतरा लागा छै ॥ जैसी इंद्रपुरी हुवै तैसी विराजै छै ॥ सुदामा देष सांसै पडीयौ ॥ आप मन मैं आणर विषै वासनारा सुष छोड दीनां ॥ भक्ति परायण हुवौ द्रव्य पायर सुं पैंडै चालण लागौ ॥ अनेक भांत संसार मैं रह्या पछै वैकुंठ गयौ ॥ आ कथा श्री कृष्ण सुदामा संवादरी छै सुणै सु अनेक पापां सुं छुटै ॥ और घण विस्तार घणौ छै ॥ आ कथा इक्यासीवै

ध्याय मैं छै ॥ "इति श्री भागवते महा
पुराणे दशमस्कंधे ऐकाशीतमोऽध्याय:॥
८१॥ अठा सुं आगे बैंयासीवैं ध्याय
मैं आ कथा हुती ॥ एक सूर्य पर्व हु
वौ सु देश देशरा राजवी कुरुक्षेत्र विषै
आया ॥ श्री किसनजी नुं षबर हुई लो
कां कह्यौ ॥ महाराज सूर्य पर्व छै
सारा देश देशारां लोक कुरुक्षेत्र गया छै
वडौ तीर्थ छै कुरुक्षेत्ररो नाव हुतौ पछै
कुरुक्षेत्र कहायौ लोकां सारां कह्यौ॥
तारहरां श्री किसनजी कृतवाला नुं अर
अनुरुध नुं दुवारका राषीया ॥ अर
श्री किसनजी बलभद्रजी वसुदेवजी
देवकीजी ॥ आठ पटरांणी सोलै हजा
र एक सौ आठ बीजी अस्त्री साथे ले
कुरुक्षेत्र आया ॥ वडौ जसकर साके
लपाया सु विस्तार घणौ छै ॥ कुरुक्षे
त्र आयां दान पुण्य भांत भांत रा की
या ॥ वसुदेव देवकी नुं दान पुण्य करा
या ॥ आप कीया सु विस्तार घणौ छै॥

पछै राजवी सारा आया हुता तिकां नुं ष
बर हुई सारा राजवी श्री किसनजी
कनै आया॥ केई मिलिया केई पगै
लागा क्यांही रांम रांम कीया॥ भांत
भांत सुं सगलां नुं आदर दीनौ॥ पछै
पांडव आया हुंता सु मिलीया॥ आपआं
सुं प्रवाह हुवा॥ वसुदेवजी नुं कुंती
कहण लागी म्हारै तैं सारीषा भाई
थंर म्हां माहै इतरा दुष पडै थां म्हांरी
षबर लीवी नहीं॥ ताहरां वसुदेवजी
बोलीया कासुं करां म्हां माहै ही वि
षौ पडीयौ॥ म्हांरा पुत्र गोकुल मै
पलीया म्है कंसरै बंदीषानै रह्या छ
पुत्र म्हांरा मारीया॥ इयै भांत घणौ वि
स्तार सुं वातां कीयौ॥ पांछै नंदगो
जसोदा मै षबर हुई॥ सारा गोपग
ना साथे ले श्री कृष्णजी वसुदेव
जी सुं मिलीया॥ वसुदेवजी अस्तुति
घणौ विस्तार सुं कीवी कह्यौ म्हांसु
थां वडौ उपकार कीयौ॥ पछै श्री

किसन जी बलभद्रजी नंद जसोदा रै पगै ला
गा छाती सुं लगाय मिलीया कुशल रही
या॥ पछै गोपः गोपांगना सारां सु मिलि
या सारां रौ सनमान आदर कीयौ॥ पछै गो
पांगना सारी सुं मिलीया॥ वातां हुई यां
धन्य जिकौ दिन थां कनै रह्या था॥ पछै
गोपांगना नुं कह्यौ आपांरा खेलीया-
हुता थां नुं याद छै॥ पछै जिकै जिकै चीर
त बाल पणौ कीया हुता तितरा सारा गो
पांगना नुं कह्या चितराया॥ गोपांगना
सारी षुसी हुई॥ इयै भांत घणौ विस्तार
सुं कह्यौ छै॥ इतरी कथा बेयासीयै
ध्याय मांहै छै॥। इति श्री भागवते म
हापुराणे दशमस्कंधे बैयासिवोऽध्याय:
॥॥ ८२॥ ॥ अथ आगै तियासीयै ध्या
य मै आगै आ कथा हुसी॥ राज लोक
सारौ कुंती सुं द्रौपदी सु मिलीया कुशल
पुछी यो॥ पछै कुंती बैठी आगै द्रौपदी
बैठी॥ आठ पटराणी रुकमणी आदि
अर बीजी अस्त्री सारी तिकानै द्रौपदी र

-छीयो ॥ जीघे म्हांनुं कह्यौ थांनुं श्री कि
सनजी किसी भांत परणिया ॥ ताहरां
रुकमणी जी बोलीया ॥ मांहरी माई रुक
मई यै तो शिशुपाल नै देणी कीवी थी ॥
इयर म्है पण कीयौ श्री किसनजी परणीजैं
का देह त्यागुं ॥ पछै सारां राजवीयां देषतां
सिंघ आपरी बल ले नीसरै तिकी भांत
मनुं ले आया ॥ पछै सतभामा बोली ॥ म्हा
रै बापरै एक मिण सु रजरी दीनी हुती
तिका मिण लोकै कह्यौ ये श्री किसनजी
नुं देवौ ॥ तहारां माहरै बाप दीनी नही
पछै मांहरौ काकौ मिण गलै मै पैहर
सिकार गयौ हुतौ ॥ सु सिंघ मारी यौ
मिण सिंघ ले गयौ ॥ पछै ले श्री किसन
जी रै मांथै दीनी ॥ पछै श्री किसनजी मि
ण जायर ल्यायर माहरै पिता नै आण दी
नी ॥ ताहरां मांहरां पिता षिसा णौ हुवौ ॥
ताहरां मनं परणाई मिण दायजै दीनी ताह
रां श्री किसनजी मिण पाछी दीनी म नै
राषी ॥ पछै जांबवती कह्यौ सिंघ सत

आं मारै काकै परसेन नुं मार ले चोली थी॥ ताहरां सिंघ नै म्हारै बाप जांबवांन मारीयौ॥ पछै मिण लेर म्हारै भाई रै पालणै सुं बांधी ताहरां श्री किसनजी मिण नै ले आया॥सत इस दिन तांई म्हारै पिता सुं युध कीयौ॥ता हरां श्री किसन जी रघनाथजी रौ रूप की यै अर दिखाली थी॥ तांहरैं म्हांरै पिता मनै परणाई मिण दायजै दीनी॥ पछै काल द्री बोली हुं सूरजरी कन्या थी मनै रथ वै सांमा ल्याया हुता॥ श्री किसनजीरी दासी छुं॥ पछै मित्र वृंदा बोली अर आपरा वृतांत स रब कह्या॥ पछै लक्षमणा बोलीज म्हारै पि ता स्वयंबर कीयौ हुतौ सु मनुं॥ श्री किसनजी ले आया॥ पछै भद्रा कह्यौ म्हारै पिता प्रतिज्ञा कीवी थी॥ जु सात गोग्धानां पै तिकै नुंप णाऊं॥ ताहरां जिसा काठ रा बलद बालक एक डोरी मैं पिरोवै तिसा एक बारही ज ना थीया अर मनै परणी सु हुं परणी छुं॥ पछै स त्या कह्यौ आप रौ वृतांत॥ इण भांत आठां पटरांणीयां आप आपरा वृतांत कह्या॥

पछै सोलै हजार एक सौ ग्यारा स्त्रीयां कहयां ज म्है राज वीयांरी कन्यां छां सु म्हांनै भू मासुर दैत्य बंदी यांनै राखी हुती ॥ पछै श्री किसनजी भूमासुरनुं मार म्हांनै छुडाई ॥ आपरै घरे आंण एक हीज मुहूर्त म्हांनै आ परी दासी कीवी पटरांणीयां री अधिकार म्हे न चाहां ॥ म्हांनै दासी कीवी छै ॥ इयै भांत सुं सारयांही आपरौ वृतांत कह्यौ ॥ आ कथा तियासीयै ध्याय मै छै ॥॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे त्र्यसीतितमो ध्याय: ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ अब आगै चौरासीयै ध्याय मै आ कथा हुती ॥ श्री किसनजी नै आया सुणर सार महर्षीश्वर कुरुक्षेत्र आया सप्त महर्षि आया ॥ पर सरांमजी अगस्त दुर्वासा और सारा महर्षि छोटा मोटा आया ॥ श्री कृष्णजी सारा महर्षीश्वरां रा चरण पखाल पूजा कर स्तुति करी स्वामी थांहरौ दर्शन हुवौ हुं धणी हु वौ थांहरौ दर्शन दुर्लभ छै ॥ सरस्वतीसनां न सात दिन कीयां पवित्र हुई जै ॥ गंगाजी

एक दिन स्नान कीयां पवित्र हुई जै ॥ नर्बदा जीरौ दर्शन कीयां एक दिन मांहै पवित्र हुई जै ॥ अर साधरौ दर्शन मात्रहीज कृतार्थ करै ॥ तौ पे लोकांरै कृतार्थ करण नुं विचरौ छौ ॥ इयै भांत श्री कृष्णजी स्तुति कीवी पछै विस्तार सुं तांहरा अर पीख्वरां बोलीया ॥ महाराज पे पूर्ण ब्रह्म छौ थांनुं कुण कृतार्थ करै पे अविनाशी पुरुष छौ ॥ पिण धरती रै लोकांरै कापै निमित्त अवतार लीयौ छौ ॥ अर म्हांरी पूजा करौ छौ स्तुति करौ छौ सु लोकां नुं दिखावौ छौज इयै भांत सारा चालज्यौ म्हे तत्वज्ञानी हुता पिण म्हानुं रावली माया भुलाया ॥ म्हे थांनुं देखण आया सु म्हारै मन मै संदेह हुतौ जु श्री कृष्णावतार हुवौ छौ ॥ सु किसड़ो छौ मांहरै मन मै हे आ शंका उपनी ॥ रावली माया प्रबल रीज पूर्ण व्रह्म छौ रीज नुं मांणस कुण जांणै कुण कहै ॥ रीज नुं म्हांरौ नमस्कार छौ ॥ म्हे रावलै नांवरौ स्मरण करता

विचारां छां॥ इयै भांत महाभीश्वरें॥ श्री कि
सनजी री स्तुति घणी विस्तार सुं की वी॥
पछै वसुदेव जी सारां महाभीश्वरां नुं पूछी यौ
नु महाराज थे सारा महापीश्वर छौ॥ ब्रह्म
ऋषि मांहै नारदादिक॥ अर देव ऋषि मां
है वसिष्ठ जी परसुरांम जी आदि छौ
सारा तत्वज्ञानी कहावौ छौ॥ तौ म्हे करां
छां सु इणां कर्मां सु किसि भांत छुटां॥
ताहरां नारद जी बोलीया धन्य वसुदेव
जी थे इसड़ौ प्रसन्न क्यों न करौ॥
जिकांरे घरमांहै श्री किसनजी अवता
र हुवा॥ आ वांत कहि सारां महाभी
श्वरां नुं सुण बोलीया वसुदेव जीनु कहौ
थे जिकौ कार्य करौ सु श्री किसनजी
नुं समर्पण कीया करौ॥ अर थे तौ क
र्मां सुं छुटाईज छौ जिकांरै श्री किसनजी
पूर्ण ब्रह्म पुत्र छै जिकै छुटण॥ इयें तरै
घणी भांत कर्मांरी युक्ति बताई॥ पछै
कहयौ थे रहित कौ नहीं तौ यज्ञ करौ॥
ताहरां वसुदेव जी यज्ञ कीयौ॥ जितरा

व्रासलण ऋषीश्वर हुता जितरां सारां नुं वरणी कर यज्ञ कीयौ ॥ भांत भांत रा दान दीना ऋषीश्वरां राजवियां नुं व्रासलण नुं राजवियां नै गहणा दीना कुरुक्षेत्र मांहै वडो यज्ञ कीयौ वसुदेवजी देवकीजी नै आदि ले आठारै अस्त्री पासै बैठी ॥ श्री कृष्णजी बलभद्रजी आगै ऊभा काम करै छै ॥ ऋषीश्वर कहै छै धन्य वसुदेव जी इयै भांत सु यज्ञरी पूर्णाहुति कर पछै दुवारका नुं तियारी हुवा ॥ नंदजी जसोदा वसुदेव देवकी सुं मिलिया ॥ श्री किसन जी बलभद्र जी पगै लागा अर भांत भांत रा दरव नंदजी जसोद नुं दीना ॥ पछै नंद जी नै वसुदेवजी कह्यौ थांहरौ म्हारै माथै उपगार छै तिकैरी किलरीपेक कथांइ रीव डाई करूं ॥ इयै भांत आपत मै घणा पडी जां कर सारां गोप गोपांग नै वहरावणी दे विदा कर दुवारका जी आया ॥ नदादिक गोप सारा गोकुल गया ॥ गोकुल मांहै जाय गोपां सारी वातां कही ॥ अर दुवारका मांहै जादुवां वातां कह्यां और पिण विस्तार

धरौ छै ॥ इतरी कथा चौरासीयें अध्याय
मांहै छै॥ इति श्री भागवते महापुराणे
दशमस्कंधे चतुराशीतितमोऽध्याय:॥ ॥८४॥
अठासुं आगै पीच्यासीयें अध्याय मांहै कथा
कही छै॥ एक समै श्री कृष्ण जी बल
भद्र जी दुवारका जी मांहै बैठा हुंता आ
पणै घर मांहै॥ अर वसुदेवजी बैठा हुंता
ताहरां वसुदेवजी बोलीया॥ हे कृष्ण
हे बलभद्र महाराज थे सर्व ब्रह्म छौ थां
नै म्हैं पुत्र कर जांणीया सुं कैरा पुत्र॥
थे संसाररा कर्ता छौ संघारण हारा थे
छौ॥ थे धरती रै भार उतारण नै प्रगट
हुवा छौ थांनुं मांणस कुंण कहै म्हां थांनुं
पुत्र कर जाणीया सु क्षमा करौ॥ श्री कृ
ष्ण जी थे सर्व ब्रह्म छौ॥ अर बलभद्र
जी अंसावतार छौ सूर्य मांहै थे चंद्रमां
हैं थे छौ जिकौ वसतां दीसै छै तिकां मां
हैं थे छौ॥ मोटौ ब्रह्मांड अर छोटौ ति कै
कोणरौ जीव तिके सर्व थे छौ॥ इयैं तरै
वसुदेवजी घणी भांत सु स्तुति कीवी॥ ताहरां
श्री किसनजी इसर बोलीयां॥ आज थे

म्हांनै व्रस कर जाणीयां तासु थांहरै मन माहै कासुं छै ॥ थां पुत्रारौ प्रेम कीयौ सु पिण भलौं संसाररौ मारग छै॥ अर हमें ही व्रस कर जांणीयौ तौ भली कीवी थे कही छौ तिकौ हीज छुं ॥ सूर्य चंद्रमा आकाश पाताल देवता अदपिख्वर मनुष्य सारांमा है हुंईज छुं ॥ माहरै एक रुं विषै कोटि एक ब्रह्मांड वसे छै जिकुं दीसै छै सु हुं छुं सारा म्हांरी आज्ञा विषै छै मनै कोई मोडौ जाणौ कोई वेगौ जाणौ ॥ जद जांणीयौ तद हीज भली कीवी ॥ हमे थांहरै मन मां है और ही छै सु मनै कहौ ॥ इतरी वात श्री कृष्ण जी कही ताहरां देवकी जी बोलीया ॥ पुत्र थे तौ सागी परमेख्वर छौ पण संसार री माया छै थे तौ महाराज पूरण व्रस छौ ॥ थां आपरै गुरु रो पुत्र आंण दीयौ ॥ सु मृतक थौ सु आंण दीयौ थौ तौ म्हारा छ छ पुत्र कंस पापी मारीया छै सु मनै ही आंण देवौ ॥ श्री कृष्ण जी बलभद्र जी तुरत उठीया ॥ सु पाताल गया आ[गै]

जम बैठौ हुतो सु साम्हौ आयौ दीठोज
प्रभु आया साष्टांग दंडौत कीवी ॥ पूजा
आगै राजा बले बैठो थौ सु उठ दौडीयौ म्हा
रै प्रभु आयो ॥ जिकैरी उपासना करतौ सु
आठै आयो ॥ बलि राजा विधि सौ पूजा की
वी हाथ जोड ऊभौ रह्यौ महाराज राज
पधारीया सुं कारण कहौ ताहरां श्री कृष्ण
जी बोलीया ॥ म्हारी माता चिंता करै छै
पुत्र छ ६ कंस मारीया तिकै आगै दैत्य
योनि माहि हुंता ताहरां मै कह्यौ ॥ म्हा
रा बे भाई हुवो ताहरां पछै मै कह्योकां
नै देवतांरी जोनि देईस ताहरां म्हारी मा
तारे गर्भ मै आया सु कंस मारीया सु
म्हारी माता कहै हुं दुष पाऊं छुं सु थै पु
त्र थाहरी वांसै उभा छै मानै देवो ॥ माता
नै देखाल पछै वैकुंठ मेल्हसां ॥ ताहरां राजा
बलि छ ६ पुत्र पकड श्री क्रिसनजी नै
सांपीया श्री क्रिसनजी बलभद्रजी माता
देवकीजी नै आंण दीनां ॥ देवकीजरे
स्तनां सुं दूधरी धारा चली ॥ छ ६ पुत्रां

नुं दूध पांन करायौ षुसी हुवा॥ शुक देवजी कही राजा परीक्षित सुं॥ महाराज लोकां माहै अचिरज नै छै छ पुत्र आंण दीना॥ श्री किसनजी री माया रै प्रमांण उपै भांतर रहै॥ पछै देवकी जीनै षुसी कर सारं देवतां छ पुत्र वैकुंठ गया॥ और ही विस्तार घणौ कह्यौ छै॥ इतरी कथा रो प्रभाव सुणै सु इण लोक विषै सुष करै पछै वैकुंठ जावसी॥ इतरी कथा पिच्यासीवें अध्याय माहे छै॥ ॥इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे पंचाशीतितमोऽध्याय:॥ ॥८५॥ आगा सुं आगै छियासीयें अध्याय में आ कथा हुसी॥ राजा परीक्षित प्रसन करीयौ॥ महाराज शुकदेवजी हुं सुणणु छुं म्हारी दादी सुभद्रा नुं जोरावरी सुं अर्जुन जी म्हारै दादै परणी सु श्री किसन जी बलभद्र जी री बैहन सु जोरावरी किसी भांत परणी॥ शुक उवाच। एकसमै अर्जुन पृथ्वी परै भ्रमा गया हुता सु फिरता

फिरता बदरिकाश्रम आया॥ उठै सुणीज
सुभद्रा दुर्योधन नै दीजै छै॥ ताहरां
अर्जुन जाणीयौ म्हारै मामैरी बेटी मैं
यकां दुर्योधन परणी जै सु कुण मांण
स॥ ताहरां अर्जुन दुवारका आयौ॥
श्री किसन जी बलभद्र जी रै बार णै
तपस्वी हुय आय बैठो लोक सारा से
वा करण लागा॥ वडौ अतीत छै एक वर
स तक अर्जुन उवै तपस्या कीवी॥
एक दिन बलभद्र जी कह्यौ अतीत जीम
ण आवौ॥ ताहरां अतीत तेड अर्जुन नै
जीमण बैसांणीयौ॥ सुभद्रा नै कह्यौ
बाई तुं अतीत नै पांणी पाय॥ हाथ
धोवण ताहरां सुभद्रा हाथ धोवाव
ण लागी॥ अर्जुन अर सुभद्रा नजर
एक हुई पछै अर्जुन जीमर बाहर आयर
बैठो॥ चाल जोवै कही भांत सुभद्रा नै
लै नीसरूं॥ पछै एक दिन सुभद्रा रथ बै
सर अंबिका रै देहरै चाली सखीयां सहि
त वडा वडा जोधा साथ हुता॥ ताहरां

अर्जुन ऊठर उवेहीज रथ बैसर सारां ओच्या देषतां सुभद्रानै ले नीसरी यौजो च्या देषता ही रह्या ॥ बल भद्रजी नुं षबर हुई ॥ अर्जुन हुतो सुभद्रा नुं ले गयौ ताहरां बलभद्रजी क्रोध कीयौ म्हारी बैन ले जावै सु कुण ॥ पछै बलभद्रजी हल मुसल ले दौडीया ॥ ताहरां श्री कृष्णजी बलभद्रजी नै पाली यौ जुध मतां करौ अर्जुन छै सदा होती आई छै ॥ आपां सन बंधी छौ इयै भांत सारां बलभद्रजी नै पाली यौ ॥ ताहरां बलभद्र जी हथीयार नी चा राष बैठा ॥ पछै अर्जुन नै आदमी मेल कहायौ पे डरौ मतां सदा होती आई छै ॥ म्हे थानै दायजौ देषां तत धीरौ पछै घोडा हाथी रथ दासी गहणौ कपडौ वांसीया सुं मेल्ह दीनौ ॥ पछै दायजो सारो ले सुभद्रा ले अर्जुन घरे आया यौ॥ इयै भांत सुभद्रा परणी ॥ श्री सुकदेवजी कह्यौ पं रषीयौ हुतौ सु आौ विचार छै ॥ और एक समै नारदजी पांडवां कनै

आया था सु प्रतिज्ञा कर जयाज द्रौप
दी दोय दोय मास तांई थांहरैं घरैं रहिसी
बारी बांधी ॥ इतरै विचालै कोई भाई
कन्हे द्रौपदी थकौं आवै सु बारैं वरस
री तपस्या करैं ॥ ताहरैं एक दिन एकै ब्रा
ह्मणरैं घरैं चोरी हुई ॥ ताहरां ब्राह्मण
कूकीयौ सु अर्जुन सुणीयौ ॥ ताहरां
वांसैं चढन नैं तियार हुवौ ॥ अर युधि
ष्ठिर री आज्ञा विनां चढै नहीं ॥ अर यु
धिष्ठिर जनांनै द्रौपदी कनै बैठौ ॥ ताह
रै अर्जुन विचारी बारैं वरसरी तपस्या
करीस पण ब्राह्मण दुष पावै ॥ ताहरां
अर्जुन युधिष्ठिर कनैं गयौ ताहरां यु
धिष्ठिर कह्यौ ॥ रायरैं अर्जुन तैं मुंडौ
काम कीयौ ॥ ताहरां अर्जुन कह्यौ म्हा
राज ब्राह्मण दुष पावै ॥ हुं तौ तपस्या क
रीस पिण इणैरो दुष मेटीस ॥ ताहरां अर्जुन
बारैं वरसरी तपस्या कबूल कीवी पण
ब्राह्मणरौ दुष मेटीयौ ॥ पछै एक समै श्री
कृष्ण जी रथ बैसअर्जुन थी ख्वरां नुं सोधे ले

मिथला नगरी राजा जनक विदेही रै थापा॥ पंचाल देश गुजरात देश ग्रौर ही बीजां देशां मां हैं कर मिथला ग्राया ऊंठै ब्रामण एक सु देवनामां ब्रामण रहै तिकौ परमेश्वर री परम भक्त॥ ग्रर राजा जनक पण वडौ भक्त राखीयौ॥ त्वचा मैं वाघु राखी यौ॥ इ यै भांत प्रपंच रौ एक मनुष्य कीयौ स्तुति कौ व्याख्यान श्री धराचार्य टीका सुच कह्यौ सु हुं थांनै कहुं छुं॥ एक समै ग्रौ हीज प्रसन नारदजी ऋखीश्वरां स हित बद्रिकाश्रम विषै नरनारायण जीनुं पूछीयौ॥ ग्रर च्यार सनक सनंदन सना तन सनत्कुमार ब्रम्हारा पुत्रां सुं पिण प्रसन कीयौ॥ वेदां निर्गुण ब्रम्हरी स्तु ति किंव कीवी॥ ताहरां नारदजीनुं कह्यौ॥ एक समै परले होण लागौ ताहरां सूर्य लोक ताई ग्रांच पोहती॥ ताहरां सूर्यलो क भाजिर स्वर्ग गयौ ताहरां उनां कह्यौ किंव ग्रायो॥ ताहरां कह्यौ नीचै प्रलय हुवौ॥ ताहरां शेष लोक एकठा हुय तीजै

लोक गया ॥ उठै च्यारुं सनकादिक ब्रह्मा
रा पुत्र बैठा हुता तिकां कह्यौ क्यौं दौडौ॥
ताहरां बोलीया नीचै प्रलय हुवै ताहरां
सनकादि कौं कह्यौ इठै बैसौ धीरज करौ॥
थांनै कथा कहां ताहरां कह्यौ नीचै
प्रलय हुवै॥ ताहरां दोय लोक एकठा हु
य तीजै लोक गया॥ उवै च्यारुं सनका
दिक ब्रह्मारा पुत्र बैठा हुता तिकां कह्यौ
क्यौं दौडौ॥ ताहरां बोलीया नीचै प्र
लय हुवै ताहरां सनकादिकौं कह्यौ
इठै बैसौ धीरज करौ॥ थांनै कथा
कहां ताहरां ऋषिश्वरां देवतां नै
ज्ञान कह्यौ नारद पै पण उठै था॥
ताहरां थां उवां नैं इसौ हीज प्रसन की
॥ जु वेद सगुण ब्रह्म जाणै तिकै निर्गुण
ब्रह्म री स्तुति क्यौं कर कीवी ताहरां
वेद उठै मूर्तिवंता बैठा हुता तिका इसा
कहण लागा॥ थांनै विचार म्हे करां ता
हरां नरनारायण सारा बैठा इसा वेदां क
ही सु शुकदेवजी कहै छै॥ सु राजा

हूं थांनै कहुं छुं थे सुणौ॥ वेद कहे छै
एक समै श्री परमेश्वर जी निरंजन निरा
कार पौढीया हुता निद्रा कीनी॥ताहरां
देवता सारा दुख पावण लागा अर
श्री परमेश्वर जी निद्रा कीनी॥ताहरां
वेदां जाय निर्गुण ब्रह्मरी अस्तुति की
की॥ सु जि की भांति राजा सूतो हु
वै अर निज खवास ति कौ साहिबांनै
जगावै॥ बंदी भाटरा जारी बंसाव
ली कहि कहि जगावै ति की भांत
वेदां स्तुति कर श्री परमेश्वर जीनै जगा
या वेदां स्तुति कीनी॥ महाराज श्री पर
मेश्वर जी राज ब्रह्मरूप देव कहावो छो॥
अर लोक देवता ऋषीश्वर तपस्वी सारा
रावलो सुमिरण करै छै जु म्हांनै मा
या लिपण पावै नही॥ माया ऊपजै छै
तिका माया राज नेत्रां मांहै राखी छै सु
दूर कीजै॥ इयै भांत वेदां घणो विस्तार
सुं घणै ज्ञान सु परमेश्वर जी री निर्गुण
स्तुति कीनी॥ सु विस्तार घणो छै॥

इतरी कथा सित्यासीयै ध्याय माहीं छै॥
॥इति श्री भागवते महापुराणे दशम
स्कंधे सप्ताशीतितमोऽध्याय:॥॥८७॥
कांनुं दरसण देण रै वासतै आया सु आप रा
दोय रूप कीया॥दोय रथ कीया दोय सारथी
की॥ एक रथ तो ब्रह्मा रै घरे गयो अर
एक रथ राजा जनक वैदेही रै घरे गयो॥रा
जा सांमो आयो श्री कृष्णजी री पूजा
करी चरण पखाल आरती करी जयावै
साणीया॥ पांच प्रकार री पूजा आठ प्र
कार री पूजा सोले प्रकार री पूजा बतीस
प्रकार री पूजा चौसठ प्रकार री पूजा
कीवी॥ सा थांग डंडोत कर लागो सु
ति करण लागो महाराज अंतर्यामी
म्हांनै राजरै दरसण षरी चाहि थी॥ पण
राज राज सात से कोस दुवारका विरा
जौ म्हांनै दरसण कठै पण राज आपरा
जांण म्हांनै दरसण दीनौ॥ आज म्है रावली
पूजारौ फल पायो राज अंतरजांमी छौ
इयै भांत घणी स्तुति कीवी॥ अर ईयै

ईण भांत ब्रह्म स्तुति कीवी ॥ पण घर
मांहै द्रव्य नही ॥ अतरौ बिछावणौ कीवौ
डादै पाटीरी लोटी भर आगै राखीआ
नै अभौ रह्यो नाचण लागौ ॥ घर विधान
सारु रजा करी कह्यो महाराज राज
ब्रह्मण्यदेव कहावौ छौ ॥ हुं कुण रांक
लिकै रै राव पधारौ सुपनौ जांणुं छुं ॥
महाराज राज मनै आपरो जांण कृतार्थ
कीवौ हुं रावलौ छुं ॥ ईयै भांत ब्राह्मण
णी अस्तुति कीवी पछै कितरा एक दिन
मिथला रह्या ॥ पछै वेदां स्तुति निर्गुण
कीवी थी सु राजा अर ब्राह्मणनुं बताय
र दुवारका आया ईतरी कथा छयासी
वै ध्याय मै छै ॥ ॥ ईत श्री भागवते महा
पुराणे दशम स्कंधे षष्ठाशीतितमो ध्याय: ॥
॥ ८६ ॥ ॥ अठा सुं आगै सित्यासीयै ध्याय मै
आ कथा छै सी राजा परीक्षित प्रसन
कीयौ सुकदेवजी सुं महाराज वेद तौ स
गुण ब्रह्मनै जांणै ॥ अर थे कहौ छौ निर्गु
ण ब्रह्मरी अस्तुति वेदा कीवी ॥ सु किसी

विधि कीवी वेद तौ निर्गुण जांणै नही॥ सगुणहीज जांणै पछै शुकदेवजी बोली यो॥ राजा तै पूछीयौ छौ तौ सुण एक समय श्री भगवांन जल सज्या विषै पोढे थे हुंता निराकार निरंजन॥ ताहरां इछा उपजी हुं एक छुं सु म्हारा रूप घणा करीस ताहरां मूल प्रक्रीति आगै ऊभी थी॥ तिका गर्भवंती हुंई तिकै सुं महा तत्व उपनौ जिको धरती माहै गो हुं बोधजै अपर गदरत हुवैतै सौ हुवौ॥ सु एक हजार वरस तांई रह्यौ पछै उणौ ताहरां अहंकार कहायौ॥ पछै तीन पांन हुवा सु एक राजस॥ एक तामस एक सात्विक॥ ए हुवा पछै सात्विक हुंता मन हुवौ॥ तामस थी पांच भूत हुवा॥ पृथ्वी अप॥ तेज॥ वायु॥ आकाश॥ ए पांचै थोक एकठा कर एक पिंड रचीयौ॥ नेत्रां मांहै सूर्य राखीयौ॥ जीभ मै पांणी राखीयौ॥ नासिक मै पृथ्वी राषी॥ कांनां मै आकाश॥ अठ आगै ईग्यारवै धयाय मै ए कथा हुती॥ परीक्षित

प्रसन कीयौजु महाराज म्हारै मन मै भरम छै तैरौ निरणय कह्यौ ॥ कोई महादेवजी नै भजै ॥ अर कोई श्री किसनजी नै भजै सु इयां आपत मै भेद नही सु मनै विचार कहौ ॥ ताहरां शुकदेवजी बोलीया राजा थां विनां और प्रसन कुण करै ॥ महादेव अर परमेश्वर फेर कोई नही ॥ श्री परमेश्वरजी कहै जु जिको महादेवजी रौ द्रोही छै ॥ अर म्हारौ भक्त छै अर महादेवजी सुं भेद राखै छै सो बैकुंठ अवली री आस मतां करौ ॥ म्हे अर महादेवजी फेर कोई नही पण रजो गुण रौ फेर छै ॥ सात्वक राजस तामस तीनौ गुणै रौ फेर छै और फेर कोई नही सुणौ राजा एक इतिहास कथा थांनै सुणाऊं एक वृक्षासुर दैत्य हुवौ तिके महादेव री तपस्या कीवी ॥ सु आठवे सातवै दिन एक सुकी चूघरी बाय ताहरौ महादेवजी कह्यौ वर मांग ताहरां वृषासुर कह्यौ

वर देसौ तौ इसडौ देवौ जिकेरे माथे ऊपर ह
थ देऊं सो मरै ॥ ताहरां महादेवजी श्रौहीज
वर दीनौ ताहरां वृक्षासुर विचारी जु महादेव
जी नुं मारुं श्रर पार्वती नै लेवुं ॥ ताहरां
महादेवजी जांणीयौ श्रौ पापी मनै मार
णरौ विचार करै छै ॥ ताहरां महादेवजी
नाठा वृक्षासुर वांसै दौडीयौ महादेवजी
तीन लोक फिरिया ॥ दैत्य छोडे नही ताहरां
महादेवजी वैकुंठ गया तठै श्री भगवां
न विराजै था ॥ महादेवजी कह्यौज महा
राज मैहीज दैत्य नै वर दीयौ थौ सुम
नै मारीयौ चाहै छै ॥ ताहरां महादेव नुं तौ
श्रागा चलाया ॥ श्रर श्राप श्री भगवांन
ऊभा रह्या जितरै वृक्षासुर श्रायौ ताहरां
श्री भगवान रुछीयौ ताहरां वृक्षासुर क
ह्यौ मनै महादेवजी इसौ भांतरौ वर दीनौ
छै ॥ ताहरां भगवांन श्रापरी माया फेरी श्रर
कह्यौ महादेव तौ बिटल छै ॥ भस्म लगावै
रुंड माला पहरै तिणैरौ कह्यौ तुं साच
मांनै महादेव कहै सु सर्व झुठ छै ॥ जौ

तुं माथै नही तौ थारै माथे ऊपर हाथदे
देखां ॥ ताहरां वृक्षासुर री मति भ्रष्ट हुई
आपरै माथै ऊपर हाथ दीनौ तै सुं
भस्म हुवौ पछै श्री भगवान महादेव
जी नै तेडर दिलासा दीनी कह्यौ ॥ थांत्र
र मै तो अंतर कोई नही पिण इसडै
कहीनै वर दीजे सु समझर दीजै ॥ शु
कदेवजी कही राजा परीक्षित सुं थां क
ह्यौ वडौ कुण सु महादेवजी अर परमे
श्वर जी फेर कोई नही पिण इतरौ फेर
छै महादेवजी वर दीनौ ॥ श्री भगवान-
वृक्षासुर नै मारीयौ ॥ इतरी कथा इक
सीवै ध्याय मै छै ॥ ॥ इति श्री भागवते
महापुराणे दशमस्कंधे अष्टाशीतितमो
ध्याय: ॥ ८८ ॥ अथ आगै नियासीवै ध्या
य मै आ कथा हुसी ॥ एक मै ऋषीश्वरां गं
गारै तीर बैठा आपस मे वाद करण लागा ॥
कोई तौ कहै महादेव वडौ कोई कहै ब्रह्मा
वडौ कोई कहै विष्णु जी वडा ॥ ताहरां भृ
गु ऋषीश्वर कह्यो उ यांरी परीक्षा हुं लेआऊं ।

ताहरां भ्रगुजी परीक्षा लैण नै ब्रह्माजी री सभा मै जाय ऊभौ रह्यौ ॥ ब्रह्माजी नै नमस्कार न कीयौ ॥ ताहरां ब्रह्मा नै क्रोध आयौ म्हारौ पुत्र अर मनै नमस्कार न कीयौ ॥ ब्रह्मा जी भ्रगु नै मारण रौ मतौ कीयौ ॥ ताहरां भ्रगुजी नाठा ॥ पछै भ्रगुजी महादेव जी कनै गया ॥ महादेवजी सांमां आया पूजा कीवी पगै लागण लागा ताहरां भ्रगुजी बोलीया माहरै नैडौ मतां आवे हुं ब्रह्म रूप छुं तुं जोगी भस्म लगाई मनै छीपै मतां ॥ ताहरां महादेवजी नै ही क्रोध आयौ त्रिशूल ले मारण नै दोडीया ॥ ताहरां नंदी अर दिगण बैठा था तिकां पालीया ॥ महाराज भ्रगु बीरवर छै मतां मारौ पछै भ्रगुजी वैकुंठ गया ॥ श्री भगवांन लक्ष्मी सहित पौढीया हुंता ॥ भ्रगुजी जायर लात री मारी श्री भगवानरै छाती मैं लागी लक्ष्मी जी रै लागी ॥ श्री भगवांन

रै छाती मै लागी लक्ष्मी जी रै लागी ॥ श्री
भगवान उठीया भृगुजी नै नमस्कार
डंडौत कर हाथजोड ऊभा रह्या ॥ स्वा
मी मनै षबर हुई नही मै माहै चूक
पडी थे क्षमा करौ ॥ हुं निद्रा मा हे
तौ थां आयांरी षबर पडी नही ॥ मनै
माफ करौ पछै भृगुजी नै ढोलीयै बै
साणीयां श्री भगवान चरण पलोटण
लागा ॥ म्हारी छाती वज्र मई छै थां
दुष पायौ ॥ लक्ष्मी जी कन्हा चरण पलो
टण लागा ॥ चरण पलोटाय घणी भांत
पुजा कर घणौ आदर दे विदा किया ॥
भृगुजी ऋषीश्वरां कनै आया हकी
कत कही ॥ श्री वैकुंठनाथ जी म
नै उसडौ आदर कीयौ ॥ उर मै
लातो प्रहार कीयौ थो ॥ ताहरां सारां
सारा ऋषीश्वर बोलीया ॥ भृगुजी थै
(थां) वडौ संदेह मिटायो ॥ थां जोड
वै प्रभु मै लात चलाई जिण म्हां रा
संसा मटीया ॥ थां विनां मोट रौ सांसौ

कुल मेटै ॥ श्री परमेश्वर वैकुंठ नाथउ
परांत कोई नही ॥ इतरी कथा नयाली
मै ध्याय माहै छै ॥॥ इति श्री भागव
ते महापुराणे दशमस्कंधे एकोननवति
तमोऽध्याय: ॥॥ ८९ ॥ अठा सु आगै
निवैं ध्याय मै आ कथा हुली ॥ श्री शु
कदेवजी राजा परिक्षित सुं कहीज
श्री क्रिसनजी रै सोलै हजार एक सौ
आठ राणी हुई तिकां सुं जुदौ जुदौ सुख
कीयौ ॥ आठ पटराणी हुती पिण बी
जी सारी अस्त्री हुती तिका सुं पिण
उवैहीज भांत सुख कीयौ जिकैरी म
हीमा घणी कही विस्तार लैरौ घणौ छै॥
पछै श्री कृस्नजी जांहीयै धरती रौ भा
र मै उतारीयौ अर निकंटक कीवी
पण जादव घणा वधीया तिकां री गिण
ती आवै नही ॥ अठारै पुत्र तौ श्री कृ
स्नजी रै हुी तिकै महारथी हुवा ॥ एक
महारथी हुवै जिकै दश हजार जोधा
नुं मार पाछौ आवै तिकौ कहीजै ॥

अैसा अठारै पुत्र १८ हुवा तिकांरा प्र
धुमन आदि लेर नाव कह्यो॥ अर बी
जा एकै एकै असत्री रै दश दश पुत्र अर
एक एक कन्या हुई जिकांरां नाव गि
णीयां नही॥ अर पोत्रा पड पौता वधी
या तिकांरौ ज्ञानहीज कोई नही सुछ
पन कोडि जादव कहाया पिण संख्या
काई नही॥ इतरा वधीया ताहरां
श्री कृष्णजी री मौज इयांरौ भारपृ
थ्वी उपर घणौ हुवौ ताहरौ श्री किसन
जी सारांही नुं संहार करणरौ विचार
कीयौ॥ पछै एक वज्रनाभनामै अनु
रुधरौ पुत्र तिकौ राखीयौ सु अर्जुन सा
थे दीनौ जादवांरौ वंश राखण रै वास्तै॥
बीजा सारा संघारीया॥ सु दुर्वासारै
स्राप सुं एक कोडि उठासी लाष जा॥
दव वडेरा कारतीक आचारज हुंता
जिका मसलत आलोच कीजे॥ अर
औरां हुंता तिकांरौ तौ ज्ञान ही कोई
नही तिकां सारां नुं वैकुंठ गामी

कीया ॥ देवतांरा अवतार हुता इतरी
कथा चतौ विस्तार सुं कीवी ॥ पछै
फल स्तुति कीनी जु जिकै मिनष
श्री किसनजी री दशभागवत री
कथा चित्त दै सुणै ॥ तिकै इयैलो
क विषै सुख भोगवै पछै वैकुंठ रौ
अधिकारी हुवै ॥ और पिलछी विस्ता
र चलौ छै ॥ इतरी कथा निवै अध्याय मै
छै ॥ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे
दशमस्कंधे नवसितमो अध्याय: ॥ ॥ ९० ॥ ॥
समाप्तोयं उत्तरार्ध भाषा दशमस्कंधरी ॥
शुभं भवतु ॥ ॥ कल्याणमस्तु: ॥ श्रीरस्तु: ॥
॥ उंततसतं ॥ ॥